❀ सद्गुरवे नमः ❀

क़बीर पारख बूटी

जिसमें प्रश्न, उत्तर, भजन, ग़ज़ल, कहरा आदि सन्तों के बनाये हुये सार शब्द निर्णय द्वारा वस्तु अवस्तु से रहित अपने आप है।
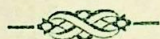
लेखक—

सद्गुरु श्री लाल साहेब के शिष्य

साधु रामलाल दास
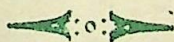
❀ प्रकाशक-फर्म ❀

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा, वाराणसी–१
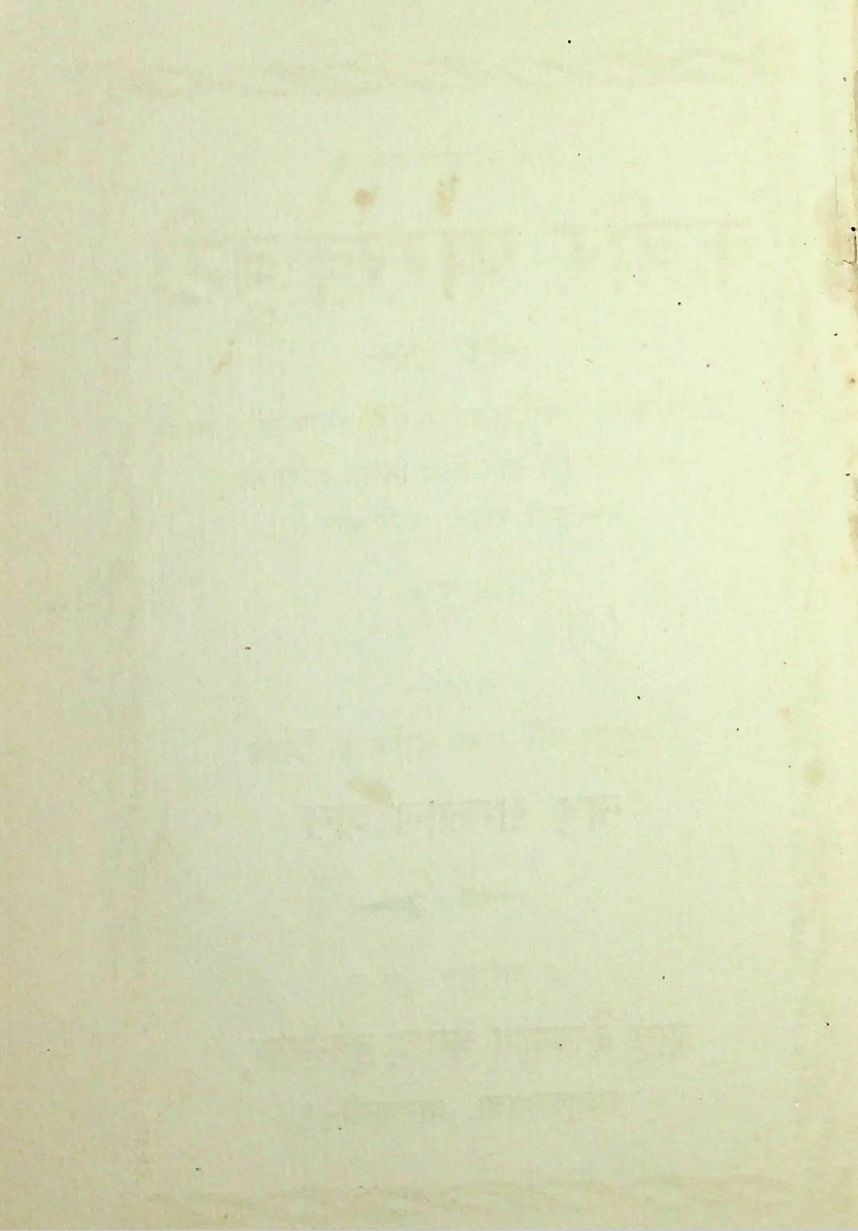
* श्री सद्गुरवे नमः *

* कबीर पारख बूटी *

जिसमें सन्त नौकाल से रहित जीव अविनाशी एक देशी सत्य पर ठहरते हैं और असन्त नौकाल के परपञ्च वस्तु-अवस्तु मिथ्या में फँसते हैं। इस पारख बूटी पर ठहरने के लिये गारी, भजन और साखी प्रश्न-उत्तर सहित है, देखिये।
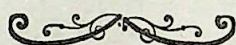
एक कबीर पन्थी साधु

रामलाल दास द्वारा निर्मित

प्रकाशक-फर्म

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर

राजादरवाजा, वाराणसी–२२१००१

संवत् २०४३ | चतुर्थ संस्करण | मूल्य ६)
ई० सन् १९८६

❀ सुधा विन्दु ❀

दोहा–ज्ञान बड़े गुरु देव हैं, मत बुद्धि बड़े महन्त ।
समदर्शी समभावना, सकल शिरोमणि सन्त ॥ १ ॥
पक्ष[१] अपक्ष से रहित हैं, गुरु बन्दी छोर कबीर ।
काल जाल परखाय के, हंस लगायो तीर ॥ २ ॥
वस्तु अवस्तु से रहित हैं, निष्पक्षी गुरु देव ।
जानन हारा ज्ञान गुण, हृदय माहिं लखि लेव ॥ ३ ॥
बिना[२] पाँव का पन्थ है, बिन बस्ती का देश ।
बिना देह का पुरुष है, कहहिं कबीर सन्देश ॥ ४ ॥

टीका १–पक्ष अपक्ष निष्पक्ष गुरु के अर्थ निर्पक्ष रत्नाकर ग्रन्थ टाइटिल शुरू में देखिये । २–चौथे दोहे का अर्थ बोध-बयालिस ग्रन्थ १७ पृष्ठ में देखिये । देखो ! सत्योपदेश मणिमाला में कया कहाः–"जड़ चेतन दो वस्तु है। अति प्रसिद्ध जग माहि ॥ ताको पारख प्राप्ति बिन। बन्धन छूटत नाँहि ॥" जल परमाणे माछली । कुल परमाणे शुद्धि ॥ जाको जैसा गुरु मिला । ताको तैसी बुद्धि ॥ पञ्चग्रन्थी ॥ "अनन्त शास्त्रं बहुलाश्च विद्या अलपश्च कालो बहु विघ्नता च । यत्सार भूतं तदु पास नीयं हंसो यथा चीर मिवाम्बुमध्यात् ॥ अर्थ–शास्त्र अनन्त हैं, विद्याएँ भी बहुत हैं, समय थोड़ा है और विघ्न बहुत हैं । इसलिये उन में से जो सार भूत हैं वही हंसवत् छान-बीन करके ग्रहण कर लेना चाहिये । "कर्म प्रधान विस्व करि राखा। जो जस करै सो तस फल चाखा । "रामायण ॥ छा० अ० ८, खण्ड १५ मन्त्र १ । जाबल्युपनिषद् तथा सौभाग्य लक्ष्म्युपनिषद् ॥ अर्थ–नित्य मुक्त स्वरूप से इच्छा करके लौट के आकर फिर देह धारण नहीं करता ।

250

भूमिका

प्रिय पाठकगण तथा सन्त-महात्माओ !

आप को मालूम हो कि इस पुस्तक का नाम कबीर पारख बूटी रखा गया है। नौ काल की खूँटी में जीव बँधे हुये को छोड़ाने के लिये कबीर साहेब आदि सन्तों के कहे हुये भजन साखी शब्द सद्गुरु बिनय गारी आदि के अर्थ दृष्टान्त सिद्धान्त सहित हैं १०१ प्रश्न, उत्तर और भजन हैं ॥ बीजक साखी २६३ का प्रमाण "गुणिय तो गुणही कहै । निर्गुणिया गुणहिं घिनाय ॥ बैलहिं[१] दीजे जायफल । क्या बूझे क्या खाय ।

टीका-पक्षपाती दुराग्राही मनुष्य भी पशु कहे जाते हैं। ये छौ हैं। यथा-"लोक वेद कुल शास्त्र पशु, तीय नर पशु विचार। साँच झूठ परखे नहीं, चले तिहीं अनुसार ॥" इसी पर सुन्दर दास जीने सुन्दर बिलास काव्य में कहा है-अपने न दोष देखे, पर के अवगुण पेखे। दुष्ट को स्वभाव उठि, निन्दा ही करतु है ॥ जैसे कोई महल, सँभारि राख्यो नीके करि। कीरी तहाँ जाय, छिद्र ढूँढत फिरतु है ॥ भोरही ते साँझ लग, साँझही ते भोर लग। सुन्दर कहत दिन ऐसे ही भरतु है ॥ पाँव के तरे की नहीं, सूझे आग मूरख कूँ। और कूँ कहत तेरे, शिर पै बरतु है ॥ १ ॥ दृष्टान्त-एक बाबूजी कारीगरों से रामजी की मूर्ति एक ही सरूप का दो जगह बनवा कर रख दिया और बाजार में डुग्गी पिटवा दिया कि इन दोनों मूर्तियों में कोई फर्क निकाल दे, तो हम उसको पाँच हजार रुपया इनाम देंगे ! यह बातें सुनकर शरीफ़ बड़े आदमी विद्वान आये और दोनों मूर्तियाँ एक ही सरूप की देख कर कोई फर्क निकाल

न सके, इतने में एक लड़का आया और कहा कि हम फ़र्क निकालेंगे। सब लोग आश्चर्य में हो गये कि हम सबों का दिमाग काम नहीं करता तो यह लड़का कैसे फ़र्क निकालेगा ? इतने में उस लड़के ने एक सींक उस मूर्ति के कान में छोड़ कर दूसरे कान से निकाल लिया, फिर दूसरी मूर्ति के कान में छोड़ा तो वह सींक हृदय के अन्दर चला गया यही फ़र्क निकला। यह तो दृष्टान्त हुआ–सिद्धान्त यह है कि जो मनुष्य सन्तों के मुखारविन्दु से गुण की वार्ता सुने और उसे कान से निकाल दिये उनको कुछ लाभ नहीं। यही कान में सींक छोड़ना और निकालना हुआ और जो मनुष्य गुण की वार्ता सुने हृदय में धारण किये यानी त्रैकाल वैश्य कर्म से रहित हो स्व स्वरूप स्थित हुये उनका कल्याण हुआ यही सींक का हृदय में जाना समझिये। यही फ़र्क बतला कर पाँच हजार रुपया ले निज घर पहुँचा यानी "पराया जीव निज समान, सुमति सच ई तीन शील सरोवर नहाइये, पारख में प्रबीन॥ यही पाँचों को ग्रहण करना पाँच हजार रुपया का मिलना समझिये। शब्द जड़ चेतन भेद प्रकाश का प्रमाण॥ सब सिद्धान्त कौन कियो जग में, आदम मानुष तुम्हीं तो हो॥ ईश्वर–खुदा जगत का कर्ता, कल्पना किया सो तुम्हीं तो हो ॥टेक॥ बेद शास्त्र विद्या कलादिक, वाणी बनाया तुम्हीं तो हो। कर्म उपासना योग ज्ञानादिक, मारग चलाया तुम्हीं तो हो ॥१॥ खानि वाणी स्त्री पुत्र धनादिक, माया में फँसता तुम्हीं तो हो॥ बिषयानन्द अध्यास छोड़ि के, मुक्त होन-

हारा तुम्हीं तो हो ॥२॥ पारखी गुरु की खोज लगा के, निज पारख पाया तुम्हीं तो हो। काशी कहै कहाँ लो कहिये, सब जानन हारा तुम्हीं तो हो ॥३॥ सर्व पारखी सन्तों से अन्तिम विनय यही है कि जो कुछ त्रुटि दृष्टि गोचर हो उसे पाठक गण सुधार के पढ़ें गुण ग्रहण कर लेवें तब गुण ग्राहियों का कल्याण होगा।

सन् १९६८ सर्व पारखी सन्तो का चरण रज
एक कबीर पन्थी साधु
राम लाल दास

* श्री सद्गुरवे नमः *

विषयानुक्रमणिका

★ श्री सद्गुरवे नमः ★

* कबीर पारख बूटी प्रारम्भ *

॥ श्री सद्-गुरु पद वन्दना ॥

दुइ[1] से रहित दुइ[2] के सहित पारख प्रकाशी सन्त हो ।
निष्काम होय बन्दन करूँ दुःख द्वन्द्व सारे अन्त हो ॥ १ ॥
आनंद[3] पाँचों के परे बूटी[4] बताई आपने
लक्ष फेरा जगत से गुरुवा लगे सब काँपने ॥ २ ॥

टिप्पणी १–दुइ कहिये हद बेहद, पाप पुण्य, बोल अबोल, काल अकाल, शुभाशुभ स्वारथ परमार्थ खानी बाणी, राग द्वेष यही दुइ चकरी को मत पसारहु यही दुइ पाट भीतर आय के सब पीसे जाते हैं। सो प्रमाण बीजक साखी १२९ 'चक्की चलते देख के, मेरे नैनन आया रोय। दुइ पाट भीतर आय के, साबुत गया न कोय ॥ चक्की चलती चलन दे, कर बेन्दुल की आस। कोइ कोइ दाना बचि गये, कर किल्ला के पास।' जो नौकाल को छोड़ कर अपने पारख भूमिका कर किल्ला के पास सुरति रखे वह बच गये आवागवन से रहित भये। यही जोड़ा काल जाल के फन्दा हैं सो इन फन्दों से सन्तगुरु देव रहित हैं। २—और दुइ कहिये विवेक-बैराग्य सहित अपने पारख स्वरूप पर शान्ति अचल होना ही सूर्यवत प्रकाश समझिये। ३—योगानन्द भोगानन्द विषयानन्द प्रेमानन्द ब्रह्मानन्द यही पाँच आनन्द वैश्य-कर्म में फँसकर गर्भ बास का दुःख गुरु-चेला दोनों झेलते हैं सो प्रमाण बीजक रमैनी १२ ॥ छाड़ि देहु नर झेलिक झेला। बूड़े दोऊ गुरु औ चेला ॥ ४—बूटी कहिये निज पारख स्वरूप पर ठहरने से १८ प्रकार का त्रिगुण व स्त्री दाम जमीन व जाति काल जमात काल, मेला ठेला महाकाल सातवाँ कुटी आठवाँ कल्पना, नौवाँ बाणी जाल यह नौखूँटा छूट गई तब इस जग में जन्म नहीं सो जानिये पशु एक खूँटा में बाँधा जाता है यह सूत पुराना जीव नौ खूँटा में पशुवत अपने आप बँधा इसलिये उपजब बिनसब गर्भ बास का दुःख छूटता नहीं सो जानिये।

नौ काल का फन्दा छुटा वश शेष अपना रह गया।
वैराग्य का लक्षण यही दो जाल से न्यारा भया ॥ ३ ॥
पाप पुराय बेरी कटी चकरी यही दो जानिये।
ठौर अपना मिल गया आवागवन नहिं मानिये ॥ ४ ॥
जग के लिये रोये सही ऐसे गुरु कबीर थे।
बिरले सन्त बूटी[१] गही नौ काल के जो पार थे ॥ ५ ॥
जोड़ा अनेकों से पृथक श्री लाल काशी इष्ट मम।
जैसा कहे वैसा किये ऐसे गुरु को शिष्य हम ॥ ६ ॥
बूटी[२] गही खूँटी छुटी फिर फेरि जग नहिं आवना।
संयोग नौ की अब नहीं निराधार अपने आपना ॥ ७ ॥
बन्धन सकल नौ काल का आज्ञा रहित गुरु देव हैं।
राम लाल बन्दत चरण गुरु पद[२] गहे अब छेव है ॥ ८ ॥

(२) प्रश्नः—राम, कबीर, शिवोऽहम, ओंकार ब्रह्म आत्मा मन्त्र नाम रटने में भजन करना नहीं है तो फिर क्या करें तब मुक्ति मिलै सो ग़ज़ल में कहिये ?

उत्तरः—(गजल)

मन की तरङ्ग मार लो बस हो गया भजन।
आदत बुरी सुधार लो बस हो गया भजन ॥ टेक ॥
आये हो तुम कहाँ से अब जा रहे किधर। इतना तुम

१—नौ काल, नौ कोश, नौ मन सूत यही नौ खूँटी समझिये। "स्त्री दाम जमीन, औ जाति जमात भण्डारा। कुटी कल्पना वाणी जाल, नौ काल हनि डारा॥ २—गुरु पद कहिये निज पद अपना स्वरूप ही है।

विचार लो बस हो गया भजन ॥ मन ॥१॥ नेकी सभी के साथ में बन जाय सो करो। मत सिर बदी का भार लो बस हो गया भजन ॥ मन ।२॥ कोई तुम्हें बुरा कहे सुन कर करो क्षमा। वाणी का सर[1] सम्भार लो बस हो गया भजन ॥मन॥३॥ षट[2] द्रव्य का कर्ता भला देखा है तुम कहाँ। इस कल्पना को छोड़ दो बस हो गया भजन ॥ मन ॥४॥ सिद्धान्त साफ साफ ये सद्-गुरु कबीर का। निज हंस रूप देख लो बस हो गया भजन ॥ मन ॥ ५ ॥

(३) प्रश्नः—बिना सद्गुरु के यमपुरी में क्यों भूलता है? सो अर्थ सहित भजन कहिये?

उत्तरः—(भजन)

मन कौने मगरूरी में भूला है ॥ टेक ॥ अपने काम का निशिदिन धावें, भजन की बेरियाँ लूला है ॥ मन ॥१॥ दस मन अन्न टका दुइ गाँठी, इतने में मनुवाँ फूला है ॥ मन ॥ २ ॥ यहि देहिया कै कौन भरोसा, यह तो पानी के बुल्ला है ॥मन॥३॥ कहहिं

टिप्पणी १—सर कहिये बाण। २—षट द्रव्य जैनी मंता, ताको यह निर्धार। जीव, पुदगल, अधर्म, धर्म, काल, आकाश बिचार ॥ कबीर परिचय ॥१२२ दोहा॥ १—पुदगल कहिये देह और प्रमाणु द्रव्य, २—जीव द्रब्य, ३—अधर्म द्रब्य, ४—धर्म द्रब्य, ५ —काल व समय द्रब्य और ६—आकाश द्रब्य इन्हीं को सच्चा षट द्रब्य जैनी लोग विचार किये और कर रहे हैं।

कबीर बिना सद्गुरु के, जाय यमपुरी में झूला है ।। मन ।। ४ ।।

टीका:-"सत गुरु वचन सुनो हो सन्तो ! मति लीजै शिर भार ! ।। हों हजूर ठाढ़ कहत हौ ! अब तैं समर सँभार ! ।। धन-दारा सुत राज-काज हित । माथे भार गह्यो ।। खसमहिं छाँड़ि विषय रङ्ग राते । पाप के बीज बोयो ।। खसम बिन तेली को बैल भयो ! "

प्रमाण बीजक साखी २२० व शब्द १०७ का

अर्थ-जैसे तेली के बैल कोल्हू के चौतरफ घूम-घूम के मरता है वैसे ही यह भेष धारी संन्यासी सन्त, महन्त, नौकाल व सात काल में फँस कर वैश्य कर्म रूप कोल्हू के चौतरफ घूम-घूम कर चारों खानी में आया-जाया करते हैं । कबीर साहेब कहते हैं कि हे सन्तो ! नौ काल नौ कोश नौ मन सूत में अरुझि कर के पाप-पुण्य रूपी बीज क्यों बोते हो जल्दी चेत करो वैश्य कर्म से रहित होकर निज स्वरूप पर शान्ति होवो यही भजन करना जानिये और ऐसे भजन करने में लूला मत बनो ! हे सन्तो ! अपने काम के वास्ते रात-दिन दौड़ते हो, कोई खेती करने के लिए खेत खरीदता है कोई साइकिल कोई कुटी मढ़ी अपने नाम लिखवाता है कोई अदालत लड़ता है कोई भण्डारा करने के लिये अन्न रुपया माँगता है । कोई कुआँ-कुटी बनवाने के लिये पजावा फुँकवाता है कोई सूद ब्याज लेने के वास्ते बैंक में रुपया जमा करता है कुटी मढ़ी पर डाँका पड़ने से मारे पीटे जाने से डाकुओं को

बिना देखे सुबह से फँसाता है यह सब परपञ्च से लूला रहो भजन में लूला मति होश्रो ! पाप-पुण्य रूपी भार गदहा लादता है। सन्त रूप सिङ्घ भार नहीं लादते। इसलिये "अब की बार जो होय चुकाव ! कहहिं कबीर ताकी पूरी दाव !" ॥ बोजक बसन्त ॥७॥ मनुष्य तन में अबकी बार आये हो तो समर भूमि में नौ गुण का हथियार लेकर नौ काल का भार जो शिर पर है उसे जड़ सहित काट कर फेंक दो तभी शूर वीर विजयी अपने आप में सदा के लिये अचल शान्ति रहोगे ये अर्थ ॥ संन्यासी कहिये सर्व त्याग ही का नाम आनन्द है यह स्टेशन पर भी लिखे टाँगे हैं सो भी जानिये। "घर में रहै तो भक्ति करु, न तर करु वैराग। वैरागी होय बन्धन करै, ताका बड़ा अभाग ॥ अविनाशी बिच धार तिन, कुल कञ्चन अरु नारि। जो कोई इनते बचि चलै, सोई उतरे पार ॥ काम क्रोध सूत सदा, सूतक लोभ समाय का शील सरोवर न्हाइये, तब यह सूतक जाय ॥ पूरा सतगुरु न मिला, सुनी अधूरी सीख। स्वाँग यती का पहिन के, घर-घर माँगे भीख ॥ कबीर साखी ॥

(४) प्रश्नः—हृदय निवासी राम को जानने के लिये भजन कहिये ?

उत्तर :-(भजन)

हे रामा[१] तोरा भेद सो जाने बिरला कोई ॥ टेक ॥
पानी[२] ले लो साबुन ले को मलि मलि काया धोई।

ई घट भीतर मैल जमा है सफा कहाँ ते होई ॥ हे रामा ॥१॥ ई घट भीतर बैल३ बँधे हैं निर्मल खेती होई। दुखिया४ बैठे भजन करत हैं सुखिया५ नींद भर सोई ॥ हे रामा ॥ २ ॥ ई घट भीतर अगिन६ जरत है धुँआ७ न प्रकट होई। जिन पर बीते सोई जाने, और न जाने कोई ॥ हे रामा ॥ ३ ॥ ई घट भीतर फूल८ फूले हैं, फूल के भीतर लोई। लोई के भीतर लोक बसा है, जाने बिरला कोई ॥ हे रामा ॥ ४ ॥ करण मरे दुर्योधन मरिगे शृङ्गी ऋषि मरे सोई। परशुराम अस योधा मरिगे, किनका किनका रोई ॥ हे रामा ॥ ५ ॥ नौ९ से जागे नौ१० से भागे पारख भूलहिं खोई। कहहि कबीर दुइ११ जाल न परि हो दुइ१२ दुख अब न होई ॥ हे रामा। ६ ॥

टीका १—एक देशी हृदय निवासी राम असल को बिरले कोई जानते हैं और नकल सर्व देशी व्यापक मुर्दा ईश्वर राम अनुमान झूठ को बहुत से जानते हैं। २—सुमति के साबुन और सत्सङ्ग रूपी पानी से मैल दस पापों को छोड़ा डालो। ३—विवेक-वैराग्य यही दो बैलों से भक्ती रूपी खेती निर्मल होगा। ४—वैश्य कर्म नौ काल को दुःख रूप समझ कर जिन्होंने छोड़ दिया वही दुखिया निज स्वरूप के विचार विवेक में मन अडोल रखते हैं वही भजन करते हैं। ५—नौकाल के मोह निशा में जो नींद भर सोते हैं वही सुखिया हैं। ६—जठराग्नि, कामाग्नि, मन्दाग्नि, प्रकाशाग्नि, ब्रह्माग्नि यह पाँचों अग्नि के अर्थ गुरु-चेला सम्वाद १४९ प्रश्न में देखिये। यह पाँचों अग्नि घट के भीतर

जलने से, ७—ज्ञान पारख जानब रूपी धुवाँ प्रगट नहीं होता है। ८—यह घट भीतर वासना चाहना कल्पना आशा रूपी फूल फूले हैं और उस फूल के अन्दर नौ तत्त्व की सूक्ष्म शरीर लिङ्ग रूप लोई है और उस लिङ्ग रूपी लोई के अन्तःकरण में कल्पना रूपी ब्रह्म लोक बैकुण्ठ लोक बसा है इस धोखे झूठ को बिरले ने समझ कर जान कर त्यागा और हृदय निवासी राम पर स्थित हुए। ९—दया धैर्य सत्य शील लै, विरति विवेक विचार। गुरु भक्ती और सुमति से, नौ गुण सब दुःख टार॥ ये नौ गुण लेकर जीव जागा और नौ से आगे, १०—"स्त्री दाम जमीन औ जाति जमात भण्डारा। कुटी कल्पना वाणी जाल नौ काल हनि डारा॥ निर्पक्षी गुरु मिल गये तब पारख से भूल भ्रम सब खोय गया। ११—फिर पाप-पुण्य रूपी जाल में नहीं परता यानी नौ काल वैश्य कर्म में फिर नहीं फँसता है। १२—न अब जन्म मरण रूपी दुइ दुःख को भोगता है।

(५) प्रश्न :—किस सन्त-महन्त का वचन मानकर चलें किसका नहीं सो कहिये ?

उत्तर :—बीजक शब्द ३१ का प्रमाण।

जौ लों कर डोले पगु चाले, तौ लों आश न कीजे।
कहहि कबीर जेहिं चलत न दीसे, तासु बचन का लीजे ?॥

टीका :—कबीर साहेब कह रहे हैं कि जब तक अपना हाथ-

पैर चलता है तब तक किसी का आशा मत करो आशा सकल की छोड़ने से स्वरूप स्थिति होती है आवागमन का चौरासी चक्कर मिलता है इसलिये जो सन्त-महन्त भेष धारण करके वैश्य कर्म व सात काल में फँसे हैं ! स्त्री भोग और वाणी जाल दो छूट है और दाम, जमीन, जाति, जमा, भण्डारा, कुटी मढ़ी कल्पना ये सात काल को छोड़ा नहीं, कबीर गुरु के वचन पर चलते नहीं या कबीर गुरु ऐसा रहस्य धारण नहीं किया उनका वचन मत मानिये उनसे कण्ठी माला अचला लङ्गोटी भेष मत लीजिये ये गुरु सीढ़ी से उतरे हुए हैं परमार्थ रहित स्वार्थ धरमार्थ पाप पुण्य रूपी जाल में फँसे हुये सात काल में फँसावेंगे । इसलिए "पूरा साहेब सेइये ! सब विधि पूरा होय ! ओछे से नेह लगाय के, मूलहु आवै खोय ।। बीजक साखी ३०६ ।।

(६) प्रश्नः—यह मन राजा के दो स्त्रियों में कैसा झगड़ा है सो भजन में अर्थ सहित कहिये ?

उत्तरः—(भजन)

देखो सइयाँ सवति जिया जारै ।। टेक ।।

जब मैं दीप जलावों महल में, तब वह अन्धेरी डारै ।। देखो ।। १ ।। जब मैं सिङ्गार करों पिया ऊपर, तब वह बोली मारै ।। देखो ।। २ ।। शाग सवतिया निशि दिन मारै, अवघट घाट उतारै ।। देखो ।। ३ ।। कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, भङ्ग किहा डारै ।। देखो ।। ४ ।।

टीका-प्रवृती स्त्री के परिवार कुमति कुचाल कुसङ्ग काम क्रोध लोभ मोह शोग आदि। निवृती स्त्री के परिवार सुमति सुचाल सुसंग विवेक वैराग्य शील विचारादि। निवृती स्त्री अपने मन राजा से कहती है कि जब हम काया रूपी महल में ज्ञान रूपी दीपक जलाती हूँ तब वह सवति अज्ञान अबोध रूपी अन्धेरी फैलाय देती है। यही अबोध अन्धेरी अध्यास गर्भ वास में जला-वेगी, सो प्रमाण जड़ चेतन भेद प्रकाश का "सुख में सूक्षम हन्ता होई। अध्यास लक्षण जानहु सोई॥" वस्तु अवस्तु धर्म अधर्म नौ काल में न फँसे तो अध्यास काहे बने गर्भ वास में आना जाना क्यों पड़ै ? सवति जिया जारै का अर्थ हो गया ॥ १ ॥ जब मैं नौ गुण शुभ गुण का सिंगार धारण करके मन राजा को वश में करती हूँ तब वह बोली मारै यानी बुरे कर्मों में फँसाने के लिये इन्तजाम करती है॥ २ ॥ स्वारथ धरमार्थ नौकाल में फँसने से सोग कीछाहीं सब को बसना समझिये. और औघट घाट गर्भ बास का आना जाना समझिये ॥ ३ ॥ नौकाल, पाप पुण्य रूपी जाल में फँसने से अपना स्वरूप स्थित जो भजन है वह भंग होती है यही कबीर साहेब कहते हैं सो जानिये ॥ ४ ॥

(७) प्रश्नः-काल जाल के फन्दा में फँसाने वाले गुरुवों पर गारी कहिये ?

उत्तरः- (गारी)

तुम्हरी सुरतिया देखे सखी, हमरे आवै हँसी ॥ टेक ॥
नाती पनाती बीमार पड़े जब, नाउत बुलाय कटवायो

खसी[1] ॥ हमरे ॥ १ ॥ सासू[2] ननदिया[3] नौ[4] में घुसी, हमका नाहीं खुशी ॥ हमरे ॥ २ ॥ राम[5] नाम कै गुण न जान्यो, देवता पित्तर में रह्यो फँसी ॥हमरे॥ ३ ॥ पाँच[6] चोर तुम्हरे घट ही बैठे, तिनका नहि समझायो सखो ॥ हमरे ॥ ४ ॥ पाँच पचीस बरतिहा आये, डोलिया फन्दाय लै जइहैं सखी । हमरे॥

टिप्पणी १–खसी कहिये बकरी के पुत्र । २–सासू कहिये नौ काल में फँसने व संशय लगाने वाले गुरुवा लोग ; संशय सावज बसै शरीरा तिन खायो अनबेधा हीरा ॥ (बीजक रमैनी १८) ३–ननद कहिये चेला को जो नौकाल, नौ कोश, नौ मन सूत में अरुझे नेह लगाये । ४–स्त्री दाम जमीन औ, जाति जमात भण्डारा । कुटी कल्पना वाणी जाल नौ काल हान डारा ॥ निज स्वरूप बोध सहित साखी दूसरे सखी को नौ काल में घुसी हुई देख कर हँसती है । नौ कोश कहिये अन्नमय शब्द मय, प्राण आनन्द मय, मनोमय, प्रकाशमय, ज्ञान मय, आकाश मय, विज्ञान मय, ये नौ कोश ॥ अन्न से उत्पन्न होय औ अन्न में आसक्त होय सो अन्न मय कोश ॥ ऐसा २ नौ को कह कर जान लीजिये । नौ मन कहिये लिङ्ग देह नौ तत्वों का, ताकी वासना में बहुत अरुझा झीनी माया से कोई छूटने नहीं पाता । तीर्थ व्रत होम हवन यज्ञ दान पुण्य सन्ध्या ये बातन में सूत जीव अरुझा फिर सरुझने नहीं पाया । जब जब जन्म धारण किया तब परपञ्च विषय में औ गुरुवा लोगन की बानी बिषय में अरुझ रहा । शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध, मन चित बुद्धि अहंकार ये नौ तत्त्व को सूक्ष्म देह जानिये । ५–राम कहिये हृदय निवासी एक देशी अपना चैतन्य स्वरूप, नाम कहिये चैतन्य स्वरूप एक देशी पर बोध, यही राम नाम का गुण न जान करके देवता पित्तर कर्म योग उपासना ज्ञान विज्ञान पाप पुण्य जाल में फँस गया सो जानिये । ६–काम क्रोध लोभ मोह मद ये पाँच चोर तुम्हारे घट में हैं ।

॥ ५ ॥ आँखि[१] मून्दि अनहद को सुनि कै, लाल पियर मा रह्यो लसी ॥ हमरे ॥ ६ ॥ दुइ नारी चौ पुत्र के फन्दे, गुरु महाराज को काल डसी ॥ हमरे ॥ ७ ॥ वैश्य कर्म नौ काल में फँसिके, चौरासी में जइहौ कसी ॥ हमरे ॥ ८ ॥ वैश्य कर्म में जे गुरु फँसिगे, तिनकर पीछा छोड़ो सखी ॥ हमरे ॥ ९ ॥ पाप पुण्य नौकाल से न्यारा तिन्ह सद्गुरु नहिं चीन्ह्यो सखी ॥ हमरे ॥ १० ॥ कहहिं कबीर हद[२] बेहद अरुझे, मत अगाध नहिं पैहौ सखी ॥ हमरे ॥ ११ ॥

(अपने गुरु ग्रन्थ में नानक साहब कह रहे हैं।)

साखी—लख लालन में लाल है, लख खूबन में खूब। रोम रोम में रम्हि रहा, साहेब कबीर महबूब ॥

टिप्पणी—१-स्त्री पुत्र धन नौ काल में फँसने वाले गृही गुरु को काल डँस लिया यह तो ब्राह्माण्ड में स्वाँसा चढ़ाय के आँख मून्द कर लाल पीला सफेद रङ्ग अनुमान भगवान मुर्दा में फँसाते हैं यह वैश्य कर्म में फंसे हुये दोनों जाल में फँसाते हैं इस लिये यह गादर बैल है तुम्हारा धन धरती भोजनादि भी ले लिया खरी दाना भूसा भूसी भी खा लिया और हल में चलते नहीं इसलिये गादर बैल से भक्ती रूपी खेती होगा नहीं दूसरा बैल खरीदिये तब-खेती होगा इनको गुरु मत बनावो इनको दूर ही से त्याग देवो। २-हद कहिये वेद प्रमाण वर्णाश्रम के कर्म यथा विधि आचरण करै सो मानुष, औ बेहद कहिये जो सम्पूर्ण वर्णाश्रम के कर्मन को निषेध करके ज्ञान मार्ग से चले सो बेहद सोई साधु। औ जाने कर्म धर्म उपासना औ ज्ञान सम्पूर्ण परख के तज दिया औ आप पारख पद पर ठहरा सो अगाध मत आवागवन से रहित हुआ जानिये। तिन का मत कोई जानने का नहीं। सर्व मतन का पारखी वाको पारखी बिना कौन जाने।

टीका–महबूब कहिये प्यारा को। जो अपना स्वरूप असली एक देशी है वही सब को प्यारा है इसलिये किसी जीव को दुःख मत देवो अहिंसा वरती बनो।

(८) प्रश्नः–माया कहिये गुरुवा लोग कहते हैं कि ब्रह्म से सारा जगत पैदा भया और यह जगत उसी ब्रह्म में लीन यानी समा जायगा इसी पर भजन अर्थ सहित कहिये ?

उत्तर :–(भजन)

वहि घर की सुधि कोई न बतावे जेहि घर से जग आया है ।।टेक।। उलटा बिम्ब नाग मुख पैठा छगड़िन बिग धरि खाया है। बन मा सिङ्घ चरावे गौआ, सियार सिङ्घ धरि खाया है ।।वहि।। १।। नागिन एक नगर में पैठी घेरे दसो द्वारा है। सोवत रहा सो भाग बचा है, जागत का डसि खाया है ।। वहि ।। २ ।। झूरी नदी कटक सब डूबे लोग तमासे आया है। उपटि चला सो नग्र में पहुँचा, राह चला सो लूटा है ।। वहि ।।३।। कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, भृङ्गी मता हमारा है। भाई बन्धु परिवार सकल तजि, अजर अमर घर पाया है ।। वहि ।। ४ ।।

टीका–जीव मुख–जीव अबोध अज्ञान दशा से कहता है कि उस पारब्रह्म परमेश्वर का घर कोई नहीं बताता है जहाँ से यह जगत आया है ।। टेक ।। गुरुमुख–मनुष्य की वृति रूपी बिम्ब नास्ति ईश्वर मुर्दा पत्थरादि यही नास्ति नाग मुख में समा गई। भोजन छादन मैथुन सहकर्मा। भय निद्रा मोह षट पशु धर्मा ।। यह छ पशु धर्म में फँसने वाले छगड़ी को बिगवा

कहिये गुरुवा लोग काल यम ये धरती धन धामादि अपने नाम लिखाय कर लूटे खाते हैं। बन कहिये वाणी जाल, सिङ्ह कहिये जीव गोश्रा कहिये गायत्री मन्त्र सिङ्ह रूपी जीव सुबह शाम दोपहर तीन टाइम गायत्री मन्त्र मुर्दा का जाप करता है यही गऊ का चराना समझिये सियार कहिये वेद वाणी का मन्त्र ओंकार मुर्दा ने सिङ्ह रूपी जीव को खा गया यानी गर्भ बास में छोड़ा ॥ १ ॥ नगर कहिये मनुष्य देह में पाप पुण्य धर्म अधर्म की चाहना रूप नागिन बैठ कर दसो इन्द्री यही दसो द्वारा घेरे है। जो धर्म अधर्म नौकाल की चाह से रहित हैं वह सोते हुये भाग बचे। जो नौकाल की कल्पना में जागते हैं उन्हीं को डँस खाया यानी आवागमन के चक्कर में पड़े ॥२॥ झूरी नदी कहिये वानी पानी ईश्वर ब्रह्म खुदा मुर्दा अनुमान में कटक सब डूब मरे और फिर पृथ्वी पर लोग जन्म लिये तम रूप तमाशा अन्धकार गर्भ बास का दुख झेलते हैं। जो मनुष्य इस खानी वाणी जाल से उपट चला वह निज स्वरूप नग्र में पहुँच गया। शाह कहिये राग द्वेष, (प्रीति क्रोध) रूप रास्ता पर चला वह लूटा गया यानी गर्भ बास गया ॥ ३ ॥ कबीर साहेब सुलताना बादशाह धर्म दास राजा को राज बादशाही छोड़ाय कर बैराग्य दे अपने स्वरूप कर लिया यही भृङ्गी मता समझिये और हद बेहद सकल आशा नौकाल की छोड़कर अपने स्वरूप अजर अमर घर पर शान्ति भये ये अर्थ ॥ ४ ॥

(६) प्रश्नः—कौन ऐसी पद पदार्थ है जिसके समझ जाने

से या जान जाने से फिर दूसरा परमात्मा ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ती ? सो भजन अर्थ सहित कहिये ?

उत्तर :—(भजन)

जब जानि गयन तब का पूँछी ॥ टेक ॥ राम नगर कै डगर सोझौला, गुरु चरनन अमृत बूटी ॥ जब ॥ १ ॥ नादे सेती बेद प्रगट भये, जैसे बीरा पान कूची ॥ जब ॥ २ ॥ फुटहा बर्तन माल सब बहिगे, धरा रहै ज्यस घड़ा छूँछी ॥ जब ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर जे कूटै में गाफिल, कन भूसी उनकै न छूटी ॥ जब ॥ ४ ॥

टीका–नौकाल व पाप पुण्य रूपी जाल व वैश्य कर्म से रहित जो अपना स्वरूप एक देशी हृदय निवासी अविनाशी को समझ जाने या जान लेने या बोध होने से फिर दूसरा सत्य पुरुष ईश्वर सर्व देशी के प्राप्त करने के लिये कर्म योग उपासना ज्ञान विज्ञान प्राणायाम स्वाँसा चढ़ाना आँख मून्दना पचमुद्रा साधना अकाश देखना जड़ पत्थर पूजना आदि के लिये पूछने की जरूरत नहीं पड़ैगी, ना जम गुरुवा के पास जाने की जरूरत है सो जानिये ॥ टेक ॥ राम कहिये अपना चैतन्य स्वरूप नगर कहिये मनुष्य देह में गुरु का पद पदार्थ अमृत बूटी निज स्वरूप ही है यही रास्ता सोझोला सीधा है ॥ १ ॥ नौकाल व सात काल में फँसने से बर्तन फुटहा हो गया नौ गुण रूपी माल बहि गया अब छूँछी कहिये तीन खानी में पड़े रहो यहाँ विवेक वैराग्य होने को नहीं यही घड़ा छूँछी जानिये ॥ ३ ॥ सद्गुरु

कबीर साहेब कहते हैं कि जिसने नौकाल की सकल चाहना कल्पना को नहीं छोड़ा या नहीं छूटा उनका कन कहिये कुमति भूली कहिये मूल भ्रम मुर्दा पत्थर ईश्वर का पूजना नहीं छूटी सो जानिये ॥४॥

(१०) प्रश्न :–स्त्री सीता जी के नाम आगे और पुरुष राम का नाम पीछे चलने में भजन कहिये ?

उत्तर :–(भजन)

सन्तो गदहा के नाहीं सोहै गहना[१] ॥ टेक ॥ नियम धरम कूकुर कब करिहैं, कौआ कब पढ़िहैं वेद पुराना ॥ सन्तो ॥ १ ॥ चौका बर्तन छछुन्दरि कब करिहैं, सुअरिये कब करिहैं अस्नाना ॥ सन्तो ॥ २ ॥ पहिले नाम सीता[२] जी कै चलिगे पीछे से राम कहै जग जाना ॥ सन्तो ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर काग[३] बुद्धी को छोड़ो, हंस गवन सहजै चले आना ॥सन्तो॥४॥

टीका–गुरु पशु, कुल पशु, नारि पशु, बेद पशू, संसार । मानुष सोई जानिये, जाके हृदय विचार ॥ कबीर साखी ॥

१–भक्ती ज्ञान रूपी गहना गदहा के शोभा नहीं देता है ।

२–प्रश्न :–स्त्री सीता जी का नाम पहिले क्यों चला ? और पीछे से पुरुष श्री राम जी का नाम क्यों चला ?

उत्तर–पुराणों में ऐसा लिखा है कि एक समय श्री राम जी और श्री सीता जी कुरसी पर बैठे थे । श्री राम जी अपना हाथ पैर देख रहे थे । कि इसी हाथ पैर से दस मुखी रावण को मार कर आया हूँ इतने में सीता जी बोलीं कि इस दस मुखी रावण को मारने से वीर नहीं, जाओ उस हजार हाथ वाले

सहस्रा बाहु रावण को मारो तब वीरताई है। श्री राम जी अपना फौज लेकर मारने गये, तब सहस्राबाहु रावण ने एक मूका मारा रामजी अवध पुरी में गिरे। और एक फूँक में सारी फौज को उड़ा दिया जो अयोध्या जा गिरे। तब सीता जी ने कहा कि अब हम लड़ने चलूँगी। हनुमान जी अपने सिर पर सीता जी और राम जी को बिमान सहित बिठा लिया जब हनुमान जी सहस्रा बाहु रावण के सन्मुख पहुँचे तब उस रावण ने अपना मुख पृथ्वी से लेकर ऊपर आकाश तक फैलाया और चाहा कि मैं बिमान सहित लील जाऊँ तब हनुमान जी अपना रूप बढ़ाया ऊपर आकाश में सिर के पास कर दिया। तब लड़ाई होते समय रावण ने राम को एक मूका मारा, राम जी उसी बिमान पर बेहोस गिर गये, तब सीता जी दो कन्टाइन खप्पर लिये काली का रूप धारण किये और भुजाली से रावण का सिर काटती जावें और उस खप्पर में जो खून गिरे वह कन्टाइन चाटती जावे अगर खून पृथ्वी पर गिरे तो तमाम रावण तैयार हो जायँ इसलिये सीता जी कन्टाइन पैदा किया सीता जी ने रावण को मार कर गिरा दिया तब महादेव जी कहे माता जी वही रूप हमको फिर दर्शन दो तब सीता जी बोलीं कि वह रूप मैं धारण करूँगी तो तुम भागते २ पहाड़ ले लोगे, महादेव जी बोले कोई हर्ज नहीं। तब सीता जी फिर काली का रूप धारण कर के त्रिशूल लेकर खेदा महादेव जी भागते २ पहाड़ ले लिया। जब सीता जी लौट आईं तब रामजी मूर्छा से जागे

और बैठ कर पूछने लगे कि इस सहस्त्राबाहु रावण को किसने मारा है। तब देवता गण कहने लगे कि इन्हीं सीता जी काली का रूप धारण करके इस रावण को मारा है। रामजी बहुत प्रसन्न हुये और कहा कि जो बरदान माँगना हो वह माँगो! सीता जी बोलीं कि पहले नाम हमार चलै तब आपका! राम जी बोले एवमस्तु ऐसा ही रहेगा। तब भ्रमिक लोग सीताराम सीताराम रटने लगे और रटने ही से मुक्ती माने बैठे हैं। भ्रमिक लोगों को भ्रमिक कथाओं से बोध होता है। अब विचारवान के लिये ज्ञान की बातें सुनो। बनवास के समय सीता जी के जाँघ पर श्री राम जी अपना सिर धरे सयन करते रहे इतने में राजा इन्द्र का बेटा जयन्ता कौआ का रूप धारण करके सीता जी के स्तन पर चोंच मारा खून बह कर राम के माथे पर गिरा तब राम जी जागे और सींक का बाण लेकर मारा कौआ भागते २ ब्रह्मा आदि के शरण गया किसी ने अपने शरण नहीं रक्खा सबों ने जवाब दिया कि जाव तुम राम जी के शरण लो! तब जयन्ता कौआ राम जी के शरण आने पर उसका एक आँख फोड़ दिया। कहो सज्जनों! अब विचार करो कि जैसे पृथ्वी पर घूर लगाओ कुँआदि खोदाओ सब सहन करती है इसी प्रकार पृथ्वी से सत्य जल से विचार, अग्नि से शील वायु से दया; आकाश वायु से धीरज की उत्पत्ति है और सत्य रूपी सीता ने ये छः गुण हंस के धारण किया सो सुनो! सहन समता शीलता उर दया धीरज नम्रता ये छः

लक्षण सीता जी के अन्दर आया ! कि राम के ? उत्तर—समता कहिये अपने जीव ऐसा पराया जीव सीता जी ने देखा राम जी तो सहन नहीं कर सके समता दया नहीं आई धीरज नम्रता शीलादि नहीं आया आँख ही फोड़ दिया इस लिये राम का नाम पीछे और सीता जी का नाम आगे चलता है। जड़ चेतन गुण दोषमय, विश्व कीन कर्तार। सन्त हंस गुण गहहिं पय, परि हरि वारि विकार। रामायण। श्री सीता जी का नाम आगे चलने में प्रश्न उत्तर समाप्त।

अब राम में छः गुण होने से राम का नाम चला सो सुनो !

बालि को मार कर सुग्रीव का राज दिया रावण को मार विभीषण को राज दिया इसलिये राम पराया धन विष समान समझे दूसरी बात रावण की बहन शूर्पणखा सुन्दर रूप धर के जंगल में आई राम ने ब्याह नहीं किया इसलिये राम परायी स्त्री माता समान समझे। तीसरी बात—राम ने सीता जी को गर्भवती जानकर लक्ष्मण के साथ जंगल भेज दिया तीन दिन के बाद लक्ष्मण जी आये राम से सब हाल कहे राम जी लक्ष्मण जी को रात भर कथा सुनाये भोर होत समय राम जी कहते हैं कि देखो भइया लक्ष्मण तीन दिन हो गया हम सीता के शोक मोह में परे रहे प्रजा के यहाँ टहलने नहीं गये कि को प्रजा हमारा दुखी है को सुखी है यह देख भाल करने नहीं गये यह काम बहुत जल्दी करना है आज के राजा लोग नैनीताल हवा खाने के लिये चले जाते हैं छः महीना तक आते ही नहीं

तब प्रजा की सुधि खबर क्या लेंगे ? इसलिये राम ने प्रजा की सेवा किया। चौथी बात–सन्त सेवा। पाँचवीं बात–गऊ की रक्षा। छठवीं बात–अहङ्कार रूपी रावण का नाश। ये छः काम लाखों राजा में न होने से लाखों राजा का राज चला गया और राम में यही छः गुण होने से राम का नाम सीता जी से पीछे चला सो जानिये। ३–काया से तीन पाप = चोरी, हिंसा, व्यभिचार। वचन से तीन पाप = गाली, निन्दा, झूठ। मन से चार पाप = क्रोध, ईर्षा, मान, छल। यही दस पाप को काग बुद्धि कहते हैं। काग बुद्धि वाले मनुष्य कौआ का नेह चोरी हिंसा व्यभिचार में लगा रहेगा तब वह वेद पुराण सद्ग्रन्थ कब पढ़ेंगे ?

(कबीर साखी ग्रन्थ का प्रमाण)

दोहा–कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय। भक्ति करै कोई शूर्मा, जाति बरण कुल खोय ॥१॥ निर्पक्षी को भक्ति है, निरमोही को ज्ञान। निरद्वन्द्वी को मुक्ति है, निरलोभी निर बान ॥ २ ॥ विषय त्याग वैराग्य है समता कहिये ज्ञान। सुख दाई सब जीव सो, यही भक्ति प्रमान ॥३॥ भोजन छाजन मैथुन कर्म। भय निद्रा मोह, षट पशु धर्म ॥४॥ ये छः कर्मों का सुधार नहीं है। तो पेड़ पशु से गिरे हुये मनुष्य जानिये पेड़ पशू के साल के बाद बसन्त लगता है यानी फल फूल मैथुन करते हैं मनुष्य के बारह मास बसन्त लगा रहता है स्त्री भोग करते हैं तो यह स्वार्थ धर्मार्थ करने को जानते हैं परमार्थ जो पाप पुण्य से रहित अपना स्वरूप है उसको नहीं जानते।

गदहा में चार गुण सुनो ।

गदहा गाँजा भाँग तम्बाकू माँस मदिरा नहीं खाता है । दूसरा गुण साल भर के बाद भोग करता है । तीसरा गुण पाप पुण्य दुःख सुख रूपी दो लादी लाद कर पार करता है । मनुष्य सुख में फूले रहते हैं दुःख में पड़े चिल्लाते हैं यह अपना दो लादी लाद कर पार नहीं करते । चौथा गुण सुनो ! बैसाख में जब घास चरहा कुछ नहीं रहता है तब गदहा मोटाता है इसी प्रकार मनुष्य के जब कोई प्रकार का चाहना नहीं रहैगा तब यह भी मोटा ताजा रहैंगे । दोहा—चाह गई चिन्ता मिटी, मनुवा बे परवाह । जिसको कछु नहिं चाहिये, सो शाहन पति शाह ।। यह चार गुण जब आवै तब गदहा इतना भयो मानुष गुण आना अभी और ऊँचे हैं इसलिये ज्ञान भक्ती रूपी गहना गदहा के शोभा नहीं देता है । वैश्य कर्म पाप पुण्य नौ काल में फँसे हुये मनुष्य को काम क्रोध लोभादि का सुधार नहीं है तहाँ ज्ञान भक्ती रूपी गहना गदहा के है नहीं फिर वैश्य कर्म में फँस कर गुरु बन कर घोड़ी पर सवार भये चल दिये, औरों को भक्ती देने के लिये । चेला बनाने गुरु पूजा रुपया वसूल करने भीख माँगने के लिये एक हाथ पर दूसरे से थुकाया वही थुक दूसरे के मुख में लपेट दिया यह विवेक वैराग्य का लक्षण नहीं यही ठगाई है ।

सो प्रमाण बीजक साखी २८१

सिङ्हो केरी खोलरी । मेढा पैठा धाय ।। बानी ते पहि-

चानिये। शब्दहिं देत लखाय ॥ बाना बान्धे सिङ्ह के, चले भेड़िया चाल। बोली बोलैं सियार के, डारैं कुत्ता फारि ॥

ऐसा जानिये। काम क्रोध लोभ मोह मद ईर्षा ये छ में फँसे हुये छछुन्दरि मनुष्य चौसाधन रूपी चौका कब लगावेंगे? यानी विवेक, वैराग्य, षट सम्पति, मुमुक्षुत्व कब धारण करेंगे? बहुत से मनुष्य ऐसा कहा करते हैं कि झूठ का बोलना और गुह (मैला) का खाना एकही है इसलिये झूठ बोलने वाले मनुष्य सोअरि (सूकर) ज्ञान रूपी गंगा में कब अस्नान करेंगे? और सोअरि कहिये सोरहो शृङ्गार धारण करके विषय भोग परपञ्च में फँसने के लिये या फँसे हुये स्त्री पुरुष ज्ञान रूपी गंगा में कब अस्नान करेंगे? नौकाल के बन्धन से छोड़ाने का नाम परोपकार धर्म है। धर्म के दस लक्षण मुक्तावली गारी पृष्ठ ११ में देखिये। नियम के लक्षण पाँच "शौच = कहिये जल मिट्टी से बाहर की इन्द्रियों को शुद्ध करना और दोहा– जल से शुद्ध शरीर हो, सत्या चरण मन जान। विद्या बुद्धि पवित्र हो, जीव ज्ञान प्रमान ॥ दूसरे सन्तोष तीसरे विषय भोगों से रहित होने का नाम तप है चौथे सद्ग्रन्थ सन्तो के बनाये हुये पठन पाठन करना पाँचवें नौकाल वैश्य कर्म से रहित गुरु निष्पक्षी को ईश्वर रूप मान कर उनके बचन अनुसार चलने को ईश्वर भक्ति कहा गया है। यह पन्द्रह लक्षण–रावण के स्वभाव वाले कुत्ता कब धारण करेंगे? पराया धन धाम स्त्री और पराया माँस खाने वाले को रावण कुत्ता कहा गया है।

दोहा—अन्न भखै सो मानवाँ, माँस भखै सो स्वान ।
अन्न माँस दोनों भखै, सो राक्षस प्रधान ॥

बहुजन कल्याण ग्रन्थ व सीता रामायण में लिखा है कि धनुष टूटही पड़ा था और सीता जी राम से जनक जी के फुलवारी में कह दिया कि धनुष को हम पैर से दबाये रहूँगी उसमें पेंच लगा है तब कोई राजा नहीं उठा सकेंगे। और जब आपकी पारी आवेगी तब हम पैर को हटा लूँगी बस धनुष टूटने पर जैमाल आप के गले छोड़ूँगी, सीता जी के जाति का कोई पता ही नहीं चलता था कोई राजा विवाह नहीं करते थे तब राजा जनक धनुष यज्ञ ठाना। जब धनुष नहीं टूटा तब उसी में कोई हँसी उड़ाने वाला बोला "मछरी मारैं डङ्क उखारैं, तोड़ैं कच्चा सूत। सौ मूका में फोरैं बतासा, तब पक्का रजपूत ॥ हाथ में फरसा मूड़ में जूरा। भल भा दादा धनुष नाहीं तूरा ॥ ये राजा का लगै दुइ दुइ कोड़ा ॥ सरस्वती और गङ्गा जी को विष्णु भगवान रखते थे जब दोनों में झोंटा नोचौहल हुआ तब लक्ष्मी आईं और सरस्वती से कहा कि तुम जाओ ब्रह्मा के पास रहो और गङ्गे से कहा कि तुम जावो महादेव के पास रहो और लक्ष्मी को पहिले इन्द्र रखते थे पीछे को विष्णु रक्खे। यह हिन्दुओं का पोल पाल सुन्दर लाल सागरः एम. ए. लेखक ने वेदादि सौ ग्रन्थों का नाम और प्रमाण सहित लिखे हैं इससे सावधान रहो तभी कल्याण है गुण ग्राही बनो।

(११) प्रश्न :—नइहर में अड़बड़ बात होनेपर भजन कहिये ?

उत्तर :-(भजन)

सुना है नइहरवा में अड़बड़ बात ॥ टेक ॥

धरती बरसै बादर भीजै, मेचुकुर लीलै अजगर साँप ॥ सुना ॥ १ ॥ उड़िकै सेहरिया बगुलिया का लीलै मुसवा निकारै बिलरिया कै आँत ॥ सुना ॥ २ ॥ ठाढ़ बँसवा धरिकरवा का चीरै, छगड़ी बेचै चिकवा कै माँस ॥सुना॥ ३॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, गुरु दबावैं चेला कै हाथ ॥ सुना ॥ ४ ॥

टीका :-पाप पुण्य शुभाशुभके कर्मों में फँसने को नइहर कहते हैं। यह मनुष्य अज्ञान दशा में अपने हाथ से ताजिया गोबर का गौर माटी का पार्थी गोबरधन समाधी फोट्ट बना कर रख देते हैं और उसी के सामने दोनों हाथ जोड़ कर पुत्र धन स्त्री आदि माँगते हैं तो वह ताजिया मुर्दा कहाँ पावे तब धन पुत्र स्त्री आदि देवे यही नइहर में अड़बड़ कहिये अचरज बात है सो जानिये ॥ टेक ॥ धरती कहिये गुरुवा लोग धोखा अनुमान की बाणी बरसते हैं तब बादर कहिये अज्ञानी जीव भ्रमिक वचन सुनकर भीजते हैं यानी कर्म योग उपासना ज्ञान विज्ञान में फँस कर जगत ब्रह्म में लीन होते हैं। मेचकुर कहिये छोटा अबोधी जीव छाया पुरुष की परछाहीं बहुत लम्बा पर्वताकार को देखता है यही अजगर साँप का लीलना समझिये ॥ १ ॥ सेहरी कहिये सोहम साहम मन्त्र मुर्दा ने उड़ करके ईश्वर अवस्तु अनुमान का ध्यान धरने वाले गुरुवा लोग बगुली को लीले यानी गर्भ वास में आते जाते हैं। मूस कहिये भ्रमिक

जीव ने कोटि सूर्य का प्रकाश ज्योति माया बिलरिया के अन्तः-करण में अपनी सुरति को लगाते हैं या देखते हैं यही आँत का निकारना समझिये ॥ २ ॥ ठाढ़ बाँस कहिये हनुमान जी का पताका बड़ा बाँस का या बड़ा बाँस का निशान लहबड़ रंग बिरंगी कपड़े पहिना कर दरगाह के मेला बहराइच में जाकर कलशा पर उस निशान को छुवाते हैं अगर चढ़ता है तो सूरा गाय का पूँछ पकड़ कर निशान का कपड़ा सब खैंच लेते हैं और फिरता है तो पाँच रुपया लेकर कपड़ा सहित निशान को वापस कर देते हैं यह निशान वाला बाछा को चढ़ाते हैं और उन्हीं से अपना कुशल क्षेम व मुराद पूरा करते हैं यही भ्रमिक जीवों को घरिकरवा कहा गया है जैसे मुर्गी बकरी को चीर फाड़ कर खाते हैं वैसे यह भी चीरे फाड़े जाते हैं। छगड़ी कहिये छ शास्त्र के पढ़ने वाले पण्डित, चिकवा कहिये चारो वेद का मन्त्र माँस ओंकार को घर २ कान में मन्त्र देते हैं कहते हैं कि यही ओंकार अवस्तु मुर्दा जगत का कर्ता मालिक है इसी को भजो पुकारो तब मुक्ती होगी यही माँस का बेचना समझिये ॥ ३ ॥ कबीर साहेब कहते हैं कि हे सन्तो गुरु होकर नौ काल में फँस कर वैश्य कर्म करने लगे तब चेला कै हाथ पैर दबाने लगे। यानी उदय अस्त लै राज छोड़ कर चेलों के यहाँ जाकर रुपया अन्न बाँस लकड़ी हण्डी आदि माँगने लगे धर्म अधर्म करने के लिये यही चेला कै हाथ दबाना है यानी पाप पुण्य के बेरी में बन्धे तब बन्दी छोर कैसे हैं ?

यह आश्चर्य अड़बड़ बात नइहर कहिये संसार में हो रहा है सो जानिये ॥ ४ ॥

(१२) प्रश्न :–हिन्दू मुसलमान अपनी बनाई हुई ताज़िया मन्दिर मस्जिद पत्थर मट्टी की बनाई हुई मूर्ती नकल को पूजते हैं। और असल अविनाशी हृदय निवासी एक देशी का बनाया हुआ बकरी भेड़ा गाय भैंस शूकर मुर्गी आदि काट २ खाते हैं इसी पर एक ख्याल अर्थ सहित कहिये ?

उत्तर :– (ख्याल)

मन्दिर तोड़ मस्जिद को तोड़े, तो कुछ नहीं मुजाका[1] है। दिल मत किसी का तोड़ यह तो, घर खास खुदा का है ॥ टेक ॥ मन्दिर में तो बुत[2] धरे हैं, अरु मस्जिद में सफम् सफाई है। दिल दरगाह में झलकता बिल्कुल नूर[3] खुदाई है ॥ क्या है यहाँ ईन्शाँ[4] के अन्दर, एक रोशनी छाई है। कमती बढ़ती नजर में नहिं आती, एक राई है ॥ शेर–हरेक के जान और दिल में वही दिल जान रहता है। हरेक इन्सान के अन्दर, नहीं लासान[5] रहता है ॥ रहम है जिसके दिल अन्दर, वहीं रहमान रहता है। जुलुम है[6] जिसके दिल ऊपर, वहीं शैतान रहता है ॥ मिलान–छोड़ जुलूमत की न्यामत[7] को, बेहतर सब से फ़ाक़ा है। दिल मत किसी का तोड़, यह तो घर खास खुदा का

टिप्पणी १–मुज़ाक़ा कहिये हरज। २–बुत कहिये नाक कान वाली मूर्ती। ३–नूर कहिये प्रकाश। ४–इनशाँ कहिये मनुष्य। ५–लासान कहिये खुदा। ६–जुल्म कहिये क्रोध। ७–न्यामत कहिये सब से अच्छी चीज़।

है ।। १ ।। जैसे दर्द बुरा अपने को वैसा दर्द बुरा सबको। जान पराई सता मत, बहुत बुरा लगता रब[१] को ।। खुदा तराजू बीच तौलता, वाजिब को। जाहिर बातिन[२] जानता है, वह सब के कालिब को[३] । शेर–ज़बाँ अपनी की लज्जत को, पराई जान लै मारी। खुदा का खौफ न खाया, उखाड़ी बहिश्त[४] की क्यारी ।। अद्ल[५] इन्साफ करने को, अदालत बीच वह बारी[६] । कभी नहिं माफ करने का, सितमगर[७] ये सितम्गारी[८] ।। मिलान–माफ करावेगा वहाँ क्या, कोई तेरा बाबा काका है। दिल मत किसी का तोड़, यह तो घर खास खुदा का है ।। २ ।। है पीरों का पीर वही, जो जाने पीर पराई है ।। रहम न जिसके है दिल में, खूनी वही क़साई है ।। बे दर्दी को दर्द नहीं, जो मारे जान खुदाई है। बाल वाल्त में जिनों के, आग दोज़खी छाई है ।। शेर–एक दोज़ख[९] को जाता है, एक जन्नत[१०]का है रस्ता। सवाबी[११]माल है महँग अजाबी[१२] माल है सस्ता ।। वही जन्नत में जावेगा, जो अपने नफ़स[१३] को कसता। हवा[१४] अरु हिर्स[१५] में भूला, वही दोज़ख़ में जा

टिप्पणी—१–रब कहिये खुदा। २–बातिन कहिये जो तुम नहीं जानते हो। ३–क़ालिब कहिये बदन। ४–बहिस्त कहिये बैकुण्ठ। ५–अदल कहिये न्याय को। ६–बारी कहिये खुदा। ७–सितम्गर कहिये क्रोध, जान मारने वाले। ८–सितमगारी कहिये जुल्म। ९–दोज़ख़ कहिये नरक। १०–जन्नत कहिये स्वर्ग। ११-सवाबी कहिये पुण्य। १२–अजाबी कहिये पाप। १३–नफ़स कहिये मन इन्द्रिये। १४–हवा कहिये चाहना। १५–हिर्स कहिये लालच।

फँसता ॥ मिलान—नेकी कर ले अय ! बन्दे बस यही बहिश्त का नाका है। दिल मत किसी का तोड़ यह तो घर ख़ास खुदा का है ॥ ३ ॥ जान सताना नहीं किसी को, यही क़ुराँ की आयत है। इससे ज्यादा न कोई सखावत[१] है न इबादत[२] है ॥ यही तो बड़ी शुजाअत[३] है, और यही तो बड़ी सआदत[४] है। जाय[५] खुदा है यही और सारी राह हिदायत[६] है ॥ शेर—अमर आशक ये कहता है, बना के ख्याल[७] रहमानी। यही तौहीद[८] है बरहक़[९] रमज़[१०] ईक़ाने[११] हक्क़ानी[१२] ॥ दया अरु धर्म पहचानों छोड़ के चाल शैतानी। वाश्ले[१३] इस्लाम[१४]हो जावो मिटा दो दिल की कुफ़रानी[१५] ॥ मिलान—इश्क[१६] का रास्ता सहज नहीं है, बहुत सा टेढ़ा बाँका है। दिल मत किसी का तोड़ यह तो घर खास खुदा का है ॥४॥

(१३) प्रश्न :—सात सात प्रकार के गुरु बन्धन देने वाले कौन २ होते हैं सो भजन अर्थ सहित कहिये ?

उत्तर :—(भजन)

खेलो गुरु के साथ होत उजियारी ॥ टेक ॥ निहुरे-निहुरे

टिप्पणी :—१—सख़ावत कहिये दान। २—इबादत कहिये बन्दगी। ३—शुजाअत कहिये बहादुरी। ४—सआदत कहिये भाग्यवान। ५—जाय कहिये स्थान। ६—हिदायत कहिये सीधा रास्ता। ७—ख्याल कहिये कविता। ८—तौहीद कहिये एक जानना। ९—बरहक़् कहिये सत्य। १०—रमज़ कहिये भेद। ११—ईक़ाने कहिये यक़ीन बिस्वास करना। १२—हक्क़ानी कहिये खुदाई। १३—वाश्ले कहिये मिलने वाले। १४—इस्लाम कहिये धर्म। १५—कुफ़रानी कहिये इनकार करना। १६—इश्क़ किहये प्रेम।

साहेब भागे पकरयों चरन सम्भारी। शब्द एक ज्ञान से मार्यो घूमि न आऊँ साहेब यह सारी॥ खेलो॥ १॥ सात सखिन के हेले-मेले पकरयो खूँट सम्भारी। खूँट छोड़ि अन्ते कहूँ जइहौ, कौनो सखी तुम का झगड़ा में डारी॥ खेलो॥ २॥ कूटौ पीसौ जल भरि लाओ रचि के भोजन बनाई। नाना बिधि की रच्यो रसोइयाँ, भोजन परसि लाओ कञ्चन ऐसी थारी॥ खेलो॥ ३॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, गङ्गन कुराड ले डारी। तीन लोक लै भरमत बीते, चौथे लोक साहेब किहे हो तयारी॥ खेलो॥ ४॥

टीका—सात २ प्रकार के गुरु वन्धन देने वाले का नाम अर्थ अलग २ गुरु चेला सम्बाद ग्रन्थ प्रश्न ७२ में है वहाँ बिस्तार से देखिये। चौदह गुरुवा का नाम संक्षेप में सुनिये! ब्रह्मा, चन्द्रमा, महादेव हनुमान, कृष्ण, इन्द्र, शुक्राचार्य, विष्णु ये सब मोटी माया झीनी माया में फँसे ही थे। दोहा—पण्डित खण्डित लगिडत, झण्डित चोर छिनार। काना गुरुवा सात भये, जीव चौरासी डार॥ अब सात गुरुवा का नाम और सुनो! पहिले गुरु उस मनुष्य के माता पिता भये जिसके रज वीर्य से देह बनता है। दूजे गुरु चमाइन हुई जो सौरी में लड़का पैदा होने पर नार काट कर मल मूत्र धोय शुद्ध साफ करती है। तीजे गुरु नाम धराने वाले पगिडत भये चौथे गुरु स्कूल के मास्टर विद्या पढ़ाने वाले हुये। पाँचवें गुरु दीक्षा मन्त्र देकर मुर्दा राम पुकारने को बता गये। दोहा—जुगुर

जुगुर देख परै, देह में जीव नाहीं। ऐसे घर से बाजि आयन, तुम रहो हम नाहीं ॥ राम सीता का मूर्ती हजार रुपया लगा कर मन्दिर में रख दिया अब वह जुगुर २ सिर्फ देख पड़ता है मगर उस पत्थर रूपी देह में जीव नहीं है ऐसे मन्दिर मसजिद रूपी घर से हम अलग रहेंगे यानी तुलसी माई गंगा माई आदि जड़ के पूजने पुजाने वाले गुरुवा से अलग रहो यह गुरुवा लोग भूसी कूटते हैं मुर्दा पूजते हैं। छठवाँ गुरु सब भ्रम छोड़ाय कर एक आत्मा सर्व देशी व्यापक पूजने को बता गये तब कबीर साहेब छठवाँ गुरु का नट्टी पकड़े। कहा जब आत्मा एक है तब एक मनुष्य खाय सब का पेट भरै तो मैं मान लूँ कि आत्मा एक है ! अगर एक मनुष्य के खाने से सब का पेट न भरै तो आत्मा अनेक है जो खायगा उसी का पेट भरैगा।

सो प्रमाण रामायण बाल काण्ड दोहा ४६।

दोहा–राम अनन्त अनन्त गुण, अमित कथा बिस्तार। सुनि आश्चर्य न मानिहहिं जिनके बिमल विचार ॥ सातवाँ गुरु जब आये तब कहा कि ब्रह्म सत्य निराकार से सारा जगत मिथ्या पैदा भया और यह जगत मिथ्या उसी ब्रह्म में लीन हो जायगा। तब कबीर साहेब सातवाँ गुरु का भी नट्टी पकड़े कहा कि जब पिता ब्रह्म निराकार है तो साकार जगत बेटा मिथ्या का पैदा होना असम्भव जानिये।

॥ चौपाई–न्याय नामा ॥

साकार साकार संयोग बनता। निराकार साकार का क्यों नियन्ता ॥

फिर ब्रह्म में जगत लीन हो जायगा, तब वैराग्य लेना

मिथ्या ही हुआ। जैसे कोई घड़ा में अपवित्र वस्तु रक्खा गया और कोई घड़ा में पवित्र वस्तु रक्खा गया फूटने पर दोनों घड़ा पृथ्वी रूपी ब्रह्म में लीन हुआ। "तो फिर साधन व तितिक्षा वृथाही। वेश्या सती की गती एक चाही॥" ऐसा न होने से सात गुरुवों का ज्ञान नष्ट है यही सात सखी के फन्दे में मत पड़ना। अष्टम गुरु पारखी जो सात गुरुवन या सात सखियन कै जाल पाखण्ड छोड़ाय कर निज स्वरूप एक देशी पर स्थित करै और सर्व देशी ब्रह्म देह जगत से दूर रहै तब भास अध्यास कल्पना अनुमान सब छूटै और पारख पद अपने आप में स्थीर होवे ये अर्थ। नौ काल से रहित नौ गुण सहित निज स्वरूप स्थित गुरु के वचन पर चलै वही गुरु के साथ खेलना समझिये और पारख ज्ञान का प्रकाश उजियारी समझिये॥टेक॥ न्याय नीति नम्रता पर चलने से निहुरे २ का भागना समझिये और निज पद पर ठहरना चरण पकड़ना समझिये शब्द एक ज्ञान से मार्‍यो घूमि न आऊँ साहेब यह संसारी॥ अर्थ—हद बेहद दोनों को जिसने तजा और आप अपने में स्थीर हुआ वह फिर गर्भ वास को नहीं आवेगा बीज भूँजा हुआ फिर जामता नहीं।

बीजक साखी १८९॥ के प्रमाण से हद बेहद का अर्थ सुनो और उसी पर चलो तब यह संशय रूपी संसार को पाप पुण्य रूपी संसार को नहीं आवोगे।

हद चले सो मानवा! बेहद चले सो साध! हद-बेहद दोऊ तजे। ताकर मता अगाध॥ अर्थ—हद कहिये वेद प्रमाण वर्णाश्रम के कर्म यथाविधि आचरण करै सो मानुष औ बेहद

कहिये जो सम्पूर्ण वर्णाश्रम के कर्मन को निषेध करके ज्ञान मार्ग से चले सो बेहद सोई साधु। औ जाने कर्म धर्म उपासना औ ज्ञान सम्पूर्ण परख के तजि दिया औ आप पारख पद पर ठहरा तिन का मत कोई जानने का नहीं। वो सर्व मतन का पारखी, वाको पारखी बिना कौन जाने। ये अर्थ॥ कबीर साहेब के बचन पर चलना खूँट पकड़ना समझिये और सात सखिन में एको सखी के फन्दे में पड़ोगे तो फिर तुम्हें हद बेहद पाप पुण्य के झगड़े में छोड़ देगी ऐसा जानिये॥२॥ बैराग्य रूपी मूसल से यह मन रूपी धान को खूब कूटो तब चावल चैतन्य स्वरूप निकलैगा और विचार रूपी जल से नाना प्रकार के भोजन बनावो निर्पक्ष भक्ती रूपी सोने की थाली में परसो और सुमति रूप हाथ से उठाकर हृदय रूपी झोरी में भरो तब शान्ति पद अपना स्वरूप सदा के लिये अकेला अचल रह जायगा॥ ३॥ और सात सखिन के परपञ्च में जो पड़ैंगे वह तीन लोक कहिये इंगला पिङ्गला सुषमना यह तीन नाड़िन के चक्कर में छोड़ कर गङ्गन कुण्ड में छोड़ैंगी यानी ब्रह्माण्ड में फिर वही प्रकाश सफेद कोटि सूर्य का दिखावेंगी तब निज पद छूट जायगा। इस लिये तत्त त्वं असि यह त्रिगुण तीन लोक से न्यारा चौथा लोक अपना स्वरूप पर शान्ति होना तयारी करना जानिये॥ ४॥

(१४) प्रश्न:—दोहा—जोगी जङ्गम सेवड़ा, संन्यासी दरवेश। छठवाँ कहिये ब्राह्मण छौ घर छौ उपदेश॥ ये षटदर्शन भेष जन्म

मरण गर्भ बास के दुख से क्यों नहीं छुट्टी पाते ? "नाथ मछन्दर बाँचे नाहीं, गोरख दत्त औ व्यास । कहहिं कबीर पुकारी के ! ई सब परे काल की फाँस ॥ बीजक रमैनी ५४ ॥ कौन २ काल में सब पड़ गये इसी पर अर्थ सहित भजन कहिये ?

उत्तर :–(भजन)

का करै बुढ़िया बेचारी पतोहिया शिकारी निकरिगे ॥टेक॥ रङ्गी महल में दस दरवाजा, कुछ मून्दा कुछ रहत उघारी ॥ पतोहिया ॥ १ ॥ पाँचो देवर बन कै सुसुक बन्धावै, टोला परोसिन सहैं गारी ॥ पतोहिया ॥ २ ॥ सासू के झोंटा ससुर के चुरकी, जेठवा कै मोछ उखारी ॥ पतोहिया ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर बिन पारख पायें, सबका दलिमलि डारी ॥ पतोहिया ॥४॥

टीका–बीजक बसन्त ७ में कबीर साहेब कह रहे हैं । "घरही में बाबुल बाढ़लि रारि ! उठि-उठि लागलि चपल नारि ! ॥ एक बड़ी जाके पाँच हाथ । पाँचो के पचीस साथ ॥ एक बड़ी काया जाके पाँच हाथ यानी पाँच तत्व और पंचक २५ के विषय का नाम व अर्थ व्याख्या सत्यासत्य निर्णय ग्रन्थ १३३ पृष्ठ में देखिये । निरञ्जन बोध व अनुराग सागर व बहु जन कल्याण ग्रन्थ का प्रमाण ।

बिरह अर्थ

सत्य पुरुष ने निरञ्जन पुत्र को अष्टङ्गी पुत्री को उत्पन्न किया निरंजन अपने बहिन अष्टङ्गी के साथ भोग किया ब्रह्मा विष्णु महेस तीन पुत्र उत्पति भये । गङ्गा और सरस्वती को

पहिले विष्णु भगवान रखते थे दोनों सवति में झगड़ा झोंटा नोचौहल हुआ तब लक्ष्मी आकर सरस्वती से कही कि तुम जाओ ब्रह्मा के पास रहो और गङ्ग से कही कि तुम जाओ महादेव के पास रहो। और लक्ष्मी को पहिले इन्द्र रखते थे बाद को विष्णु भगवान लक्ष्मी को रखने लगे सो जानिये। बुढ़िया कहिये अष्टंगी आदि शक्ती माया तिन की पतोह लक्ष्मी सरस्वती गंगे यह शिकारी निकरि गईं सो जानिये ॥ टेक ॥

इसी पर एक भजन और सुनो!

बीजक साखी १०६

मन माया तो एक हैं, माया मनहिं समाय।
तीन लोक संशय परी, मैं काहि कहौं समुझाय ? ॥

उत्तर :-(भजन)

रस भोगी संसार, यह मत कोई न बिचारे ॥टेक॥ पहिले नाता बहिन भायके, फिर वही पुरुष हमार ॥ यह ॥ १ ॥ दाया प्रीति के बने हैं खटोलना, सुषमन सेज लगाव ॥ यह ॥ २ ॥ काल को लेके बगल में सोयो, परयो है काल अनुहारि ॥ यह ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर बिचार करो सन्तो, आवाजाही लेहु मिटाय ॥ यह ॥ ४ ॥

टीका—बुढ़िया कहिये माया काया देह बुढ़ाय जाती है मन पुत्र बुढ़ाता नहीं मन पुत्र के स्त्री प्रवृती निवृती। प्रवृती स्त्री पतोह ने अनेक पुरुषों के ऊपर शिकार किया ॥ टेक ॥ रंगी महल कहिये काया दस इन्द्री को, तिसमें गुरुवा लोग ब्रम्हा नौ इन्द्री को खुला उघार और ब्रम्हाण्ड के ऊपर तालू को दसवाँ द्वार

मून्दा हुआ मानते हैं और योगी लोग इसी दसवाँ द्वार से जीव निकल जाय तो मुक्ती होय यानी ब्रह्म ज्योति के प्रकाश में समाय जाय। परन्तु यह नटवट विद्या भ्रमिक झूठ है, गुरु महाराज काम क्रोध लोभ वैश्य कर्म नौकाल में फँसे हैं और दूसरे को भगवान का दर्शन आँख मून्द के कराय देते हैं और भोले भाले जीवों का धन घर जमीन सब अपने नाम लिखवाय कर राज काज चेला चेली बढ़ाते जाते हैं उस भगवान से धन जमींन नहीं माँगते यही ठगाई है सो जानिये। कबीर साहेब सुलताना बादशाह धर्मदास राजा आदि को फकीरी दिया मगर अपने नाम कबीर साहेब एको बीघा ज़मीन नहीं लिखाया न बिदाई में एको रुपया लिया आज के महन्त रुपया न मिलै ज़मीन न मिलै कुटी मढ़ी घर अपने नाम लिखाने को न मिलै तो चेलाही में जावै न करैं।

सो बीजक प्रमाण साखी २०

लोभै जन्म गँमाइया। पापै खाया पून। साधी सो आधी कहैं। ता पर मेरा खून॥ ये पाप पुण्य के जाल में चेला गुरु दोनों फँस कर गर्भ बास को गये, अब इनसे दूर रहना जरूरी है ऐसा जानिये॥ १॥ पाँचो देवर कहिये पाँचो पाण्डवों को द्रोपदी माया ने अपने फन्दे में फँसाया और जिन्दा कृष्ण भगवान के रहते हुये दर्शन करते हुए मुक्ती न भई हेवारे गलना पड़ा और टोला परोसिन कहिये दुर्योधन सौ भाई होते हुये गारी सहे मारे भी गये। ई माया है चूहड़ी। औ चूहड़ों की

जोय ! बाप-पूत अरुझाय के । संग न काहु के होय ? ।। बी० साखी १४७ ।। नौ काल की माया में गुरु चेला, बाप पूत को अरुझाय कर गर्भ बास में छोड़ा ।। २ ।। सासू कहिये आदि शक्ती अष्टङ्गी कै झोंटा, ससुर कहिये निरञ्जन कै चुरकी । झोंटा कहिये नौ काल के झंझट में संशय लगाने वाले सासू गुरुवा लोग परे ! चुरकी कहिये पाप पुण्य शुभाशुभ दुइ चकरी में फँसने वाले निरञ्जन ससुर को चारो खानि में आना जाना पड़ा यही चुरकी का उखारना समझिये । पाँचो विषय में स्पर्श विषय जेठ है इसलिये जीभ लिंग के स्वाद में ब्रह्मा जेठ थे यह पुत्री संग बिगड़े इनका मोछ उखरि गया मोक्ष न हुई ।

सो प्रमाण बीजक रमैनी ।। ३५ ।।

पण्डित भूले पढ़ि-गुन बेदा । आप अपनपौ जानु न भेदा ।। संझा–तर्पण औ षट् कर्मा । ई बहु रूप करे अस धर्मा ।। गायत्री युग चारि पढ़ाई । पूछहु जाय मुक्ति किन पाई ।। ब्रह्मा चारो युग गायत्री मन्त्र पढ़े स्वाँसा चढ़ाये उतारे आँख मून्दे । धरे ध्यान गगन के माहीं । लाये बज्र किवाँर । देखो प्रतिमा अपनी । तीनिउँ भये निहाल !

बीजक साखी ४८ ।।

कर्म योग उपासना ज्ञान विज्ञान पाँचो मार्ग चल के थके मुक्ती न भई ऐसा जानिये ।। ३ ।। कबीर साहेब कह रहे हैं कि बिना पारखी गुरु पाये, नौ काल से रहित हुये स्वार्थ धरमार्थ छोड़े, पाप पुण्य रूपी जाल में दलि मलि डारा जावगे ये अर्थ ।

बीजक कहरा दो में कबीर साहेब कह रहे हैं कि "दुइ चकरी जनि दरर पसारहु ! तब पहो ठीक ठौरा हो ! ।। दुइ चकरी कहिये खानी वाणी जाल, पाप पुण्य जाल । हद बेहद । पक्ष अपक्ष । काल अकाल । बोल अबोल । शुभाशुभ । दुख-सुख । धर्म अधर्म, स्वारथ परमारथ । यह सब दुइ चकरी असत्य के अन्दर बरतते हैं । भण्डारा करने पर चार मन गल्ला खिलाय दिया यह परमार्थ हुआ । बीस मन गल्ला रख लिया यह स्वारथ हुआ जानिये यह दुइ चकरी में न फँसे तब अपने स्वरूप पर ठीक ठेकाना ठहराव हो गया ये अर्थ ।।

(१५) प्रश्न :–राम नाम से काम नहीं है, हरी नाम ले मरी । गुरु किहे से नर्क होत है, कौन नाम ले तरी ।।

उत्तर–यह मनुष्य अपने ऊपर एक ब्रम्ह ईश्वर खुदा राम मुर्दा सर्व देशी अनुमान से जो मान रक्खा है उस राम नाम से काम नहीं है । जैसे मुर्दा बैल न खरी दाना भूसा खायगा न चलबै करैगा । हरी कहिये विष्णु भगवान जो बृन्दा सती, गंगा सरस्वती, लक्ष्मी स्त्री के संग-बिगड़े और झीनी माया एक ओंकार ब्रह्म आदि मुर्दा में अटक इस लिये इनका नाम रटने इनको पूजने से मरी कहिय मरण और जन्म ये दुइ दुःख छूटने को नहीं सो जानिये । और गुरु चेला सम्वाद प्रश्न ८२ में सात २ प्रकार के गुरु का ज्ञान जो नष्ट है इन को गुरु करने से नर्क होगा यानी गर्भ बास रूपी नरक का दुख छूटने को नहीं सो जानिये । अब कौन नाम से तरी

यानी किसके नाम सुमिरण ध्यान करने से तरन्तार निस्तार होगा ? उत्तर–यह मनुष्य नौकाल से रहित नौ गुण सहित हृदय निवासी एक देशी राम पर स्थित होने से जन्म मरण दुःख से छूट सकता है। सकल आशा व सब आशा छोड़ने से मुक्ति अपने आप में सदा के लिये रहैगा ऐसा प्रमाण बीजक व रामायण ग्रन्थ से भी मिलता है। जो तू चाहे मुझ को ! छाड़ि सकल की आश ! मुझ ही ऐसा होय रहो ! सब सुख तेरे पास ! ॥ साखी २९८ ॥ बिन घन निर्मल सोह आकाशा। जिमि हरिजन परि हरि सब आशा ॥ किष्किन्धा काण्ड दोहा २७ ॥ जितनी वस्तु अवस्तु है सब त्यागने से अपने आप में रहैगा यही सकल आशा छोड़ना जानिये।

(१६) प्रश्न :–मानुष लक्षण दृष्टान्त प्रमाण सहित कहिये ?

उत्तर–बीजक साखी १०९ का प्रमाण

मानुष होय के न मुवा, मुवा सो डाङ्गर ढोर। एकौ जीव ठौर नहि लागा, भया सो हाथी घोर।

रामायण बाल काण्ड का प्रमाण

कल्प भेद हरि चरित सोहाये। भाँति अनेक मुनिशन गाये॥

टीका–दृष्टान्त–मानुष लक्षण, शीली ब्राह्मण व सुपच भक्त का कथा विश्राम सागर में आया है, शिलोचन ब्राह्मण खेत में शीला बीन कर खाते थे बूढ़ा बूढ़ी पूत पतोह ये चार मूर्ती थे सेतुवा सान कर चारों मूर्ती खाने के लिये बैठे, इतने में धर्म वैष्णव रूप साधु का बनाय कर परीक्षा करने के लिये आये और

कहा कि हम कई दिन के भूखे हैं शिलोचन ब्राह्मण अपना भाग दे दिया सन्त खा गये और कहा कि हमारा पेट नहीं भरा तब बूढ़ी ने अपना भाग दे दिया फिर पुत्र ने जब देने लगा तब शिलोचन ब्राह्मण कहते हैं कि तुम जवान मनुष्य हो भूख नहीं सह सकते, तब पुत्र बोला ! चाहे जिया जाय धर्म न छूटे। हमारे गृहस्थाश्रम का धर्म ही चला जायगा तो हमारे खाने से क्या होगा ? तब शिलोचन ब्राह्मण कहे कि ऐसा बात है तो तुम भी दे दो तब पुत्र और पतोह ने भी अपना भाग दे दिया। चारो भाग जब खा गये तब सन्त के डेकार आया और अँचये तब न्याय करने वाला न्योरा ने उसी अँचये हुये पानी में उलट पलट कर नहाया उसका अंग सोना हो गया यानी अपने जीव ऐसा पशाया जीव देखने वाले शिलोचन ब्राह्मण सज्जन पुरुषका गुण ग्रहण करने से सोना सज्जन हो ही जायँगे यह चारो मूर्ती में सुमति और सुकृत की कमाई का फल जानिये राजा युधिष्टिर के यज्ञ में बारह करोड़ ब्राह्मण राम राम जपने वाले और सौ करोड़ ब्राह्मण सालिग्राम मूर्ती पूजने वाले हजार करोड़ शिव-लिंग पूजने वाले के खाये घण्ट नहीं बाजा, यानी घट घट में हृदय निवासी राम को छोड़ कर बाहर मुर्दा राम को पुकारते थे मुर्दा पत्थर की मूर्ती शिव लिंग पूजते थे यानी भूसी कूटते थे इसलिये घट २ में घण्ट नहीं बाजा घट २ में खुशियाली नहीं हुई नाराजी छाई थी यही ब्राह्मणों के खाये घण्ट नहीं बाजा यही सिद्धान्त है और सुपच भक्त के खाये घण्ट बाजा यज्ञ पूरी हुई

न्याय करने वाला न्योरा ने सुपच के अँचये हुये में उलट पलट कर नहाया जो अंग सोन होने से बच गया था वह भी सोन हो गया और सब ब्राह्मणों को टहल २ कर दिखाया सब को प्रतीत हो गई। तब सब ब्राह्मणों ने कहा कि चलो हम सब नदी में डूब मरेंगे तब कृष्ण भगवान ने कहा कि पहिले अपना २ मुँह नदी के पानी में देखो तब डूबो पहिले ही मत डूबो। जब अपना २ मुँह पानी में देखा तब किसी २ का मुख बीछी साँप गदहा घोड़ा हाथी का देख पड़ा किसी २ का मुख गिरगिट हिरन बिल्ली कुत्ता सूअर का देख पड़ा तब सब ब्राह्मणों के आँख खुले और कहने लगे कि पूर्व जन्म में हम कुत्ता के देह से छूट कर ब्राह्मण के घर में जन्म लिया और अन्न माँस दोनों खाते हैं अदालत लड़कर झूठ बोलते हैं वैश्य कर्म सब करते हैं जो हमारे खाये घण्ट क्या बाजै कोई मनुष्य हमारे दरवाजे पर आया तो कुत्ता ऐसा हौहाय के धरि खाये बचन ऐसा बोले कि सारे बदन में बीछी छेदे ऐसा चढ़ गया फेटारा साँप काटे ऐसा मन्त्र ही नहीं चलता बिल्ली ऐसा ऊपर से मेंऊ २ और दाँव परे पर झपट लिया। जेहि योनी से यह जिव आया। ताकर तैसे धरे स्वभावा॥ दृष्टान्त—एक बिल्ली दूध की मेलिया में अपना मूड़ छोड़ कर दूध पी लिया मट्टी का बर्तन सारा फूट गया और सिर्फ बामा यानी मोहकड़ उसी के गले में रह गया तब बिल्ली सब चूहों से कहती है कि हम जगन्नाथ जी गई थी भक्तिन हो आई हूँ यह गटई भर गजरा माला पहिने हूँ तुम सब आओ

जावो डरो मत मैं किसी को नहीं खाऊँगी। ऐसा कह कर दिलासा दिया जब सब चूहा बिल में घुस गये तब पीछे वाले चूहे को बिल्ली ने गपक लिया ऐसा करते २ चूहों का झुण्ड कम होने लगा तब सब चूहा आपस में विचार करते हैं कि इस बिल्ली में दगा बाजी है यह सब को ऐसा ही गपक जायगी तब एक ने बोला कि हम कान पकड़ेंगे औरों ने कहा कि हम पेट पीठ पैर आदि पकड़ेंगे तब एक ने बोला कि मेंऊ जगह कौन पकड़ेगा तब कोई नहीं तइयार हुये। तब सबों ने सलाह किया कि अब सब होशियार हो जावो। कोई मत निकलना नहीं तो यह सब को खा जायगी। यह तो दृष्टान्त हुआ सिद्धान्त में सुनो! बिलार कहिये माँस मदिरा स्त्री भोग जुवा खेलना सनीमा देखना अदालत लड़ना झूठ बोलना खेती व्यापार करना गऊ के लिये साँड़ ढूँढ़ना गऊ पालना बैंक में रुपया जमा करके सूद ब्याज लेना उद्दराक्ष माला पहिन कर महन्त होकर यह सब काम करना बिलार के स्वभाव वाले ठहरे शिव मन्त्र गोरख मन्त्र नामक मन्त्र देवी मन्त्र में माँस मदिरा खाते पीते हैं मूस कहिये अनेकों जीव को बिलार माया गुरुवा खाते जाते हैं।

बीजक रमैनी ७२ का प्रमाण

मूस बिलाई एक संग, कहु कैसे रहि जाय? अचरज एक देखो हो सन्तो! हस्ती सिङ्घहि खाय॥ मन व कल्पना रूपी हस्ती व नौ काल रूपी हस्ती सिङ्घरूपी जीव को खाये जाती है यही आश्चर्य है। बिल्ली कुत्ता साँप बीछी गदहा आदि के

स्वभाव वाले मनुष्य थे और जब सुपच अपना रूप पानी में देखे दिखाये तब मनुष्य से मनुष्य का औतार ठहरा तब इनके खाये घण्ट बाजा तब सब ब्राह्मणों ने कहा कि चलो सुपच के स्त्री से पूछा जाय कि कौन ऐसा तपस्या सुपच ने किया तब इनके खाये घण्ट बाजा हमारे खाने से घण्ट नहीं बाजा, तब सुपच की स्त्री ने जवाब दिया कि दो तपस्या हम जानती हूँ। एक तो गवने से हम आई और हमारे सेज पर लेटने गये तब हमने कहा कि यह काम हमसे नहीं हो सकता है हमारा तुम्हारा नाता बहिन भाय ऐसा रहैगा। दूसरा तपस्या यह है कि सत्य सुकृत मशक्कत की कमाई सूप बेंच कर खाते हैं यही दो तपस्या हम जानती हूँ। तब ब्राह्मणों ने कहा कि हम अपने घर में स्त्री भोग करते हैं और दूसरे घर में भी कूद कर विषय रत करते हैं अन्न माँस मदिरा तम्बाकू आदि नशा खाते पीते हैं तो हमारे खाये घण्ट क्या बाजै, यह सुपच अदागही बच गये। सब ब्राह्मणों के मुख में स्याही लग गई यानी गर्ग गौतम सांडिल तीन तेरह सोरह का अहङ्कार महत्व खतम हुआ।

बीजक साखी २२६ व बैराग्य शतक का प्रमाण।

काजर केरी कोठरी बुड़ता है संसार। बलिहारी तेहि पुरुष की, जो पैठि के निकरन हार !॥ जिन गृहि जीता काम को, सोई ज्ञानी सोई सिद्ध। नहिं तो थोथी बात है, घर घर करत असिद्ध॥ सुपच शीली ब्राह्मण का कथा मानुष का लक्षण बताने के लिये कहा ऐसा मानुष होय के मरता नहीं इसलिये डाक्टर

ढोर कुत्ता बन्दर का कम करके मरता है और एकौ जीव ठौर ठिकाने नौकाल से रहित पारख भूमिका पर ठहरा नहीं इसलिये हाथी घोड़ा आदि हुआ सो जानिये। जो तुमको काँटा बोवै, वाको बोवो तुम फूल। तुम्हें फूल का फूल है, उन्हें काँटा है त्रिशूल। क्षमा बड़ों को चाहिये, छोटे को उत्पात। काह बिगाड़ो बिष्णु को, जो भृगु मुनि मारी लात॥ पहिला धर्म सच्चाई, दूसरा धर्म सफाई, तीसरा धर्म अपने जीव ऐसा पराया जीव देखना, यह तीनों बात अपने अन्दर आ जाय तब अपने को समझना कि आज हम मानुष हुये और मानुष जनम फिर धारण कर के आदि से अन्त तक स्वरूप बोध सहित पूर्ण वैराग्य निबाह कर मुक्त होवेंगे अभी तक हम मानुष नहीं थे कुत्ता बन्दर डाङ्गर ढोर थे सो जानिये। दृष्टान्त—अब मानुष पशू का प्रत्यक्ष पहचान सुनो। एक जबरदस्त कुत्ता बन्दर है दूसरे निर्बल कुत्ता बन्दर का रोटी छीन कर खा लेता है। इसी प्रकार जबरदस्त मानुष दूसरे निर्बल मानुष का घर धन जमीन स्त्री आदि छीन कर मार पीट कर गाँव बाहर खेद दिया, कहो सज्जनों विचार करो कि वह कुत्ता बन्दर का काम किया कि नहीं ? अवश्य किया ! इसलिये कुत्ता बन्दर डाङ्गर ढोर को योनि में अवश्य जाँयगे। और नाना प्रकार के दुसह दुःख अनेकों डण्डे खा कर भोगैंगे। राम ने रावण बालि को मार कर उसके भाई विभीषण सुग्रीव को राज दे दिया अपना कछु लाये नहीं इसलिये राम निर्लोभी थे।

बीजक साखी २८४ व बसन्त ३ का प्रमाण ॥

रामहिं सुमिरे रण भिरे, फिरै और की गैल। मानुष केरी खोलरी ओढे फिरत हैं बैल!। लम्बी पुरिया पाई छीन। सूत पुराना खूँटा तीन ॥ खूँटा कहिये स्त्री दाम जमीन। झगड़े का जरि तीन ॥ या पाँच देहों का पन्द्रह त्रिगुण तीन खूँटा जानिये। एक खूँटा में पशु बाँधा जाता है यह मनुष्य तन धारण करके लम्बी वासना में महन्त आचार्य गुरु होकर पशुवत तीन खूँटा में खुद बँधता है और तीन खूँटा में बँधने के लिये वैश्य कर्म व नौ काल में फँसने के लियें महन्त २ में लड़ाई झगड़ा अदालत होता है वह कहता है हम को महन्ती चाहिये दूसरा कहता है हमको महन्ती चाहिये। इसलिये वैश्य कर्म करने वाले महन्त को गुरु मत बनावो इनको दूर ही से त्याग देवो तभी कल्याण है ये कबीर गुरु के बचन पर चलते नहीं ये गुरु सीढ़ी से उतरे हुये हैं इनको काल कल्पना घसीटे जा रहा है सो जानिये।

प्रश्न :—कबीर साहेब प्रेस में पुस्तक नहीं छपाने गये न कागज़ स्याही क़लम हाथ में गहे न पुस्तक बेंचते थे आप क्यों यह काम किये क्या यह वैश्य कर्म बन्धन नहीं है ?

उत्तर—कबीर साहेब में यह भूल बन्धन था ही नहीं परन्तु बीच में हम यह बन्धन परोपकार जान कर ग्रन्थ बनाना ग्रन्थ छपवाना ग्रन्थ प्रचार करना यह कर दिया, अनेक जीवों का भूल भ्रम छोड़ाने के लिये सो जानिये। गुरु चेला सम्बाद एक

पुस्तक बनारस से जो मंगाता है उसको डाक खर्च सहित सवा चार रुपया से अधिक पड़ जाता है मगर हमने नहीं गुरु चेला सम्वाद दो रुपया में घर बैठे दिया और कितनों पुस्तक दान मध्ये दिये कहो सज्जनों! विचार करो वैश्य कर्म करने वाला मनुष्य ऐसा काम कर सकता है? हरगिज़ नहीं! तो हम वैश्य कैसे? सन्त का भेष घर के रुपया कमा के बैंक में जमा करने को नहीं ज़मीन ख़रीदने को नहीं कुटी मढ़ी बनाने को नहीं पाप पुण्य जाल में फँसने को नहीं ऐसा जानिये। अब नया ग्रन्थ न बनावेंगे न छपाने आवेंगे यह भी बन्धन जान कर त्यागने में कल्याण है।

(मसला)

घर में हुआ खट पट, चले महन्त के मठ पर।
महन्त बताया काम; चेला भये रमता राम॥

(इसी पर एक कबित्त और सुनिये !)

नख बिना कटा देखा शीश भर जटा देखा, जोगी कनफटा देखा छार लाये तन मा। मौनी अबोल देखा सेवड़ा सिर छोल देखा, रोवाँ नोच देखा बन खण्डी देखा बन मा॥ बक्ता औ शूर देखा पण्डित औ दाता देखा, माया के भरपूर देखा फूलि रहे धन मा। आदि अन्त सुखी देखा जन्म ही के दुखी देखा, वै बिरल देखा जाके लोभ नाहीं मन मा॥

(१७) प्रश्नः—भक्त का असली मतलब यथार्थ में प्रमाण सहित कहिये?

उत्तर—रामायण व बीजक के प्रमाण से लिखते हैं सो सुनो !

छन् सुख लागि जनम सत कोटी । दुख न समुझ तेहि सम को खोटी ॥ क्षणिक सुख स्त्री भोग के लिये मनुष्य सौ करोड़ बार गर्भ बास में उल्टे सिर टँगेगा यह दुख को नहीं समझता इसलिये ऐसे खोटे मनुष्य से परमार्थ स्वरूप का ज्ञान कैसे हो सकता है यह पेड़ पशु से भी गिरे हुये हैं । पेड़ पशू के बारह महीने पर बसन्त लगता है मनुष्य के रोज बसन्त लगता है यानी रोज स्त्री भोग करते हैं तो मनुवाँ पशुवा अति नीके । बरष बरष सन्तोषै जी के ॥ पंचग्रन्थी ॥ जाके बारह मास बसन्त होय, ताके परमारथ बूझै बिरला कोय ॥ बीजक बसन्त १ ॥ एक बार भोगै भग द्वारा । कोटि जनम लै चोर हमारा ॥ भग भोगै भग ऊपजे, भग से बचा न कोय । कहहिं कबीर भग से बचै, भक्त कहावे सोय ॥ वैश्य कर्म नौकाल तजि, पक्षा पक्षी से बिरक्त । निज स्वरूप में शान्ति रहि, ताको कहिये भक्त ॥ सुपच शबरी सुदामा यह इन्द्री जीत रहे सुदामा जी का चरण कृष्ण भगवान अपने हाथ आँसू से धोये सुपच भक्त के खाये घराट बाजा यज्ञ पूरी भई कई करोड़ ब्राम्हण के खाये घण्ट नहीं बाजा यज्ञ पूरी नहीं हुई शबरी का चरण धो कर तालाब में छोड़ा गया खून से पानी हो गया सब ऋषी मुनी उसमें नहाये पानी पिये और राम सहित मुनीश्वरों का चरण धो कर छोड़े तब भी खून से जल नहीं हुआ सो जानि । जिन गहि जीता काम को, सोई ज्ञानी सोई सिद्ध । नहिं तो थोथी बात है, घर

घर करत असिद्ध ॥ वैराग्य शतक पूरण साहेब कृत ॥ साखी–माया ऐसी प्रबल है, तजि मालिक की छाप। बन कर बैठी जगत में, कर्ता धर्ता आप ॥ कबीर माया राम की, चढ़ी राम पर कूदि। हुकुम राम के मेटिके, भयी राम ते खुदि ॥इत्यादि॥

माया की प्रबलता विषे सद्‌गुरु ने यह पद भी कहा है।

ऐसी प्रबल यह चपल नारी। सब जग वश कीन्हो रे ॥टेक॥ ब्रम्हचारी योगी संन्यासी। ऋषी मुनि तपसी बनवासी। दण्डी मुण्डी सिद्ध उदासी। काहू बचन न दीन्हो रे ॥ १ ॥ गण गन्धर्व असुर सुर किन्नर। दैत्य पिशाच प्रेत विद्याधर। इनकी कथा पर विधि हरि शंकर। छलि लियो तीनो रे ॥ २ ॥ अब औरों की कौन चलाई। जो बैठे हैं स्वाँग बनाई। त्याग दिखा के करें ठगाई। धिक् यह जीनो रे ॥ ३ ॥ बाचा चाहो तो मन को बाँधो। सत्य ज्ञान उर में आराधो। कहहिं कबीर सुनो भाई साधो। गुरु पद चीन्हो रे ॥ ४ ॥

(१८) प्रश्न :–अपनी विषय बुराई और नौकाल व सात काल व वैश्य कर्म का बन्धन खोल कर क्यों नहीं कही जातो सो प्रमाण सहित कहिये ?

उत्तर–बीजक रमैनी ७३ साखी का प्रमाण।

अपनी जाँघ उघारि के। अपनी कही न जाय ॥
की चित जाने आपना। की मेरो जन गाय ॥

टीका–जो महन्त नौकाल व सात काल के बन्धन में फँसे हैं वह अपनी जाँघ उघारि के नहीं कहते कि हम पाप पुण्य व

वैश्य कर्म में फँसे हैं हमको गुरु मत बनाओ। हम गुरु बनाने के काबिल नहीं हैं। और चेला तो वैश्य कर्म में फँसा हुआ शील रहित अन्धा हुई है। मगर जब चेला राम वैश्य कर्म वाले महन्त को गुरु बना लिये तब चेला अपनी जाँघ उघारि के नहीं कह पाते कि हमारे गुरु भी सात काल व नौकाल में फँसे हैं। इसलिये पाप पुण्य रूपी जाल में फँसकर गुरु चेला दोनों अन्धे कूप गर्भ बास में गिरे सो जानिये। जो तो चित्त अपना जानता है कि हम जीभ लिंग के स्वाद में फँसे हैं जो मेरा दास नज़दीकी जानैगा। जीभ का विषय रस, रस का विषय स्वाद। जीभ से राम २ रटना शिवोऽहम शब्द विषय उच्चारण करना आदि अनेकों उपाय करके मदिरा माँस तम्बाकू अफीम गांजा आदि खाना पीना जीभ स्वाद जानिये। लिङ्ग का विषय स्त्री भोग से ब्रह्मचर्य की हानि और मल मूत्र के त्याग समय बिना देखे विचारे जीव दब कर मर जाना यह जीभ लिङ्ग दोनों के विषय भोग रोकने के लिये कबीर साहेब कहते हैं बीजक रमैनी ४८ व ४० में। "हबी नबी के कामा। जहाँ लों अमल सो सबै हरामा॥ सञ्जोगे का गुण रवै। वियोगे का गुण जाय॥ जिभ्या स्वारथ कारणे। नर कीन्हे बहुत उपाय॥ टीका :—कबीर साहेब कहते हैं कि स्त्री कनक अफीम आदि नौकाल, वस्तु (अवस्तु ब्रह्म) का सञ्जोग न होने दे तो विषय ज़हर नहीं चढ़ैगा यानी झीनी माया मोटी माया से रहित मुक्त अपने आप में सदा के लिये अचल रहैगा। जीभ लिंग

दोनों के स्वाद स्वारथ में पड़ कर अनेकों उपाय करके नर भोग भोग के आवागमन के चक्कर में पड़ा रहता है सो जानिये।

(१९) प्रश्न :—अन्धे गुरु अन्धे चेला किस प्रकार पक्षपात करके गर्भ बास को गये सो प्रमाण सहित कहिये ?

उत्तर—शब्दावली पृष्ठ ३ व बीजक साखी १३८ को प्रमाण।

पक्षहिं भव कर जानिये, दूसर भव है नाहिं। जन्म मरण सुख दुःख स्वभाव, तिन्हे अभावहि काहि॥ पछा पछी के कारने, सब जग रहा भुलान। निरपछ होय के हरि भजै, सोई सन्त सुजान॥

टीका :—वैश्य कर्म नौ काल में फँसे हुये गुरु महाराज चेला के यहाँ आये और कहे कि हमको अदालत लड़ना है भण्डारा करना है कुँआ कुटी मढ़ी मन्दिर बनवाना है हमको गल्ला रुपया देवो। तब चेला राम से जो हो सका वह गल्ला रुपया आदि दिये। और जब दूसरा साधू वैश्य कर्म में फँसे हुये माँगने आये कि हमको भी भण्डारा करना है गल्ला रुपया देवो। तब नहीं दिये तो भी पक्षपात हुआ और गुरु महाराज से गल्ला दाम कम दिये ता भी पक्षपात हुआ यह चेला भी भूले हुये अन्धे तो हई हैं। और गुरु महाराज चार मन गल्ला खिला दिये यह धरमाथ हुआ और बीस मन गल्ला पिसान बटोर कर रख लिया यह स्वारथ हुवा और अपना मूड़ा हुआ बैरागी था उसको बिदाई दिया पूजा में बैठाया और दूसरे सन्त का मूड़ा हुआ बैरागी था उसको बिदाई नहीं दिया पूजा में बैठाया नहीं और

दिया भी तो कम दिया तो भी पक्षपात किया। यह परमार्थ रहित स्वारथ धरमार्थ में भूले हुये गुरु महाराज और चेला भी भव का रास्ता पकड़े हुये अन्धे ही ठहरे ! कबीर साखी ॥ जाका गुरु है आँधरा ! चेला खरा निरन्ध ! अन्धे को अन्धा मिला परा काल के फन्द ॥ जो काल में फँसे फँसावे, ताको जानो काल। पारख ऊपर स्थिर रहै, सो हंसा दुख टाल ॥ जन्म मरण यही दो दुख है ॥ "पारख ऊपर स्थिर होय रहना। सकल परखना कछु नहिं गहना" ॥ पंच ग्रन्थी ॥ गृहस्थ चेला को चाहिये कि अपने गुरु महाराज और पराये गुरु महाराज को रुपया न दे गल्ला न दे कुटी पर भण्डारा पड़ने पर चार पसेरी पिसान दाल लेकर न जाय। एक साधू के कुटी पर अन्न लेकर जाव और दूसरे साधू के कुटी पर अन्न रुपया लेकर न जाव तो पक्षपात हो जायगा और महन्त जी दुखी होवेंगे नफा ना मिलै तो घाटा भी न होवे यानी तीन दिन भोजन किये तो उतना तो मिलना चाहिये ! ? इसलिये ऐसे पक्षपात से बच कर वही चार पसेरी अन्न अपने घर साधुओं को बुला कर खिला दे यथा शक्ति वस्त्र भी नङ्गे को दे देवै। भजन भाव उपदेश गाँव घर वाले सुने दर्शन करें सत्सङ्ग कर के भूल भ्रम मिटावें। खोटा चाह वस्तु अवस्तु का त्याग, खरा सत्य निज चेतन अविनाशी एक देशी पर शान्ति होवे यह निर्पक्ष भक्ती से मुक्ती गुरु चेला दोनों को मिलैगी सो जानिये। निर्पक्षी को भक्ति है, निरमोही को ज्ञान। निरद्वन्द्वी को मुक्ति है, निरलोभी निरबान ॥ कबीर

साखी ॥ आगि आँच सहना सुगम, सुगम खड्ग की धार। नेह निबाहन एक रस, महा कठिन व्यवहार ॥ नेह निबाहे ही बने, सोचे बने न आन। तन दै मन दै शीश दै, नेह न दीजै जान ॥ ग्रन्थ निर्पक्ष रत्नाकर पृष्ठ २१३ में देखिये।

(२०) प्रश्न :-नीचे दोहा का अर्थ कहिये ?

चार ईंट चौरासी कुँआ, सोरह सै पनिहार।
बड़े बड़े पण्डित भटकत फिरैं, सन्तो करो विचार ॥

उत्तर-चार ईंट कहिये "मानुष पशु अण्डज तन धारी। उष्मज खानि राशि हैं चारी ॥ यही चार राशि को चौरासी कुँआ जानिये। सुलताना बादशाह के सोरह सै रानी थीं और सोरहो शृङ्गार करके सुलताना बादशाह को अपने फन्दे में फँसाये रहती थीं जब कबीर साहेब सुलताना बादशाह को मिले तब बार बार आकर उसको चेताया बोध किया तब बादशाही छोड़कर फ़क़ीर हो गया। यही सन्तो का विचार है और बड़े २ पण्डित ब्रम्हा, विष्णु, महादेव आदि तो झीनी माया मोटी माया में भटकते ही रह गये सो जानिये।

(२१) प्रश्न-एक स्त्री अपने पति से न्याय की बात पूछने लगी तब पुरुष बोला दोहा में।

दोहा-सींङ्गदार भैंस चाहिये, पूँछदार घोरी।
मोछदार मर्द चाहिए, रुवाबदार गोरी ॥१॥

स्त्री बोली कि यह न्याय बुद्धि की बात नहीं।

दोहा–दूध दार भैंस चाहिये, चालदार घोरी।

बात दार मर्द चाहिये, सहूर दार गोरी ॥

चौपाई–गये पूत जिन माँगे पाई। गये मर्द जिन खाई मिठाई ॥१॥ गई नारि जिन पर घर जाई। गये ताल जिन परिगे काई ॥२॥ गये कुँआ जिन भरे अथाई। गये सन्त जिन राग समाई ॥३॥ अर्थ राग कहिये नौकाल में प्रीति करना। द्वेष कहिये क्रोध को। रघुकुल रीत सदा चलि आई। प्राण जाय पर बचन न जाई ॥ यही बात दार मर्द जानिये। रामायण ॥

(२२) प्रश्नः–कौन कौन वस्तु अवस्तु को छोड़ दें जिसमें पाप पुण्य रूपी जाल में न फँसे ?

उत्तर–जिस प्रकार पलङ्ग (चारपाई) के बनाने में आवश्यक नौ वस्तु की जरूरत पड़ती है। चार पावा (मचवा) चार सिरई पाटी नौवाँ रस्सी यह नो में एकौ वस्तु की कमी है तो सुख से बैठना असम्भव जानिये। लोह की कुल्हाड़ी, काठ का बेंट और बढ़ई यह तीन में एको वस्तु नहीं है तो पेड़ काटना असम्भव जानिये। इसी प्रकार "स्त्री दाम ज़मीन औ, जाति जमात भण्डारा। कुटी कल्पना बाणी जाल, नौ काल हनि डारा ॥" यह नौ काल में एकौ काल छोड़ने में बाकी रह गया तो जन्म मरण दुःख छूटने को नहीं सो प्रमाण।

बीजक साखी ७२ व बसन्त ७ मे

साखीः–बिरह की ओदी लाकड़ी सपचै औ धुँधवाय। दुःख ते तबहीं बाचिहो ! जब सकलो जरि जाय ! ॥ अबकी

बार जो होय चुकाव ! कहहिं कबीर ताकी पूरी दाव ॥ साखीः- देह जगत औ ब्रह्म लों, जेते अहैं विकार। इनमें आसक्त न होइये, यह बिचार ततसार ॥ नहिं काम है धन धाम सब बेकाम सपना सों दिखे। परचित छाड़त नाहिं आशा, काह भये बहु पढ़-लिखे ? ॥

बीजक रमैनी बारह १६ में कबीर साहेब कह रहे हैं

"छाड़ि देहु नर झेलिक झेला। बूड़े दोऊ गुरु औ चेला ॥

अर्थ-नौकाल नौकोश नौमन सूत में अरुझ करके वैश्य कर्म में फँसकर के गर्भ बास का दुख क्यों झेल रहे हो ? बाप पूत गुरु चेला नौ काल में फँसे तो गर्भ बास का दुःख काहे झेलैं पाप पुण्य रूपी जाल काहे ओढ़ें ? "सबैं लोग जहँड़ाया, अन्धा सबै भुलान। कहा कोई न माने, सब एकै माहिं समान ॥" नौ काल अठारह त्रिगुण नौकोश, वैश्य कर्म, हद बेहद में फँसने से अन्धा मनुष्य भूले हुये जानिये और नौ गुण सहित सकल आशा रहित निज स्वरूप पर शान्ति होय वही आँख वाला जीवन्मुक्ति पुरुष जानिये एक कल्पना, ब्रह्म गुरुवा, स्त्री यही को एकहि काल कहा गया है इसी नौ काल में सब जहँड़ाय गये ऐसा समझिये।

(२३) प्रश्नः-इस नीचे के दोहा का अर्थ कहिये ?

चारि गरम चारि नरम, चार झान झरत हैं।
एक हिरन के बारह खुरी, अलग अलग चरत हैं ॥

उत्तर-एक हिरन कहिये एक साल में, बारह खुरी कहिये

बारह महीना होते हैं। तिस में चार महीना गरमी चार महीना जाड़ा चार महीना बरसात होते हैं यही अलग २ का बरना जानिये। दोहा—कन फुँकवा गुरु हद्द का, बेहद्द का गुरु और। हद्द बेहद्द दोनों तजे, तब पावे ठिकाना ठौर ॥ अर्थ—हद्द बेहद्द का अर्थ निर्पक्ष रत्नाकर ग्रन्थ पृष्ठ २१ में देखिये। वैश्य कर्म नौकाल से रहित नौगुण सहित निज पद गुरु पद पारख स्वरूप ही पर स्थित होने का नाम ठिकाना ठौर कहा गया है वैश्य कर्म में सन्त महन्त न फँसे तो पाप पुण्य रूपी जाल काहे ओढ़ना परे यही शुभाशुभ कर्म दुइ चकरी समझ कर त्यागिये तभी कल्याण है। हद्द बेहद्द का अर्थ इसी ग्रन्थ ११ पृष्ठ में देखो।

(२४) प्रश्न—जीव रूप दुलहिन कौन २ गहना जेवर पहिन कर संसार रूपी बाज़ार में निकली सो अर्थ सहित भजन कहिये ?

उत्तर—(भजन)

दुलहिन तुम का साहेब घर जाना ॥ टेक ॥ गोरे गोरे बहियाँ पर लिलवा गोदायो, गहना में खरच्यो खज़ाना ॥ दुलहिन ॥ १ ॥ पाँच टका बाबौ से लीन्हो, पहिन्यो जोड़ा सहाना। दुलहिन ॥ २ ॥ पाँच बालक नइहर से लायो, ससुरे कै किहो बहाना ॥ दुलहिन ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, ससुरे से किहे है ठिकाना ॥ दुलहिन ॥ ४ ॥

टीका—"साहेब ! साहेब ! सब कहै। मोहिं अन्देशा और। साहेब से परिचय नहीं। बैठोगे केहि ठौर ॥ बीजक साखी १८१॥

नौ काल से रहित नौ गुण सहित निज स्वरूप स्थित पुरुष को साहेब कहते हैं। जीव रूप दुलहिन को नइहर ससुराल छोड़ कर निज स्वरूप पारख रूप घर पर जाना यानी ठहराव करना है ॥ टेक ॥ शुभ और अशुभ यही दोनों कर्म रूप दोनों बहियाँ पर प्रीति और क्रोध का लिलवा गोदाना समझिये, कर्म के कड़ा छड़ा छल बल के पायल पाखण्ड बजावें जी वाह वाह ॥ हिंसा के हँसुली असत्य के टेढ़िया निन्दा निगुरही पोहाये जी वाह वाह ॥ ये सब अनेक प्रकार के गहना ग्रन्थ मुक्तावली गारी पृष्ठ ३९ में १७ सतर वर्णन है वहाँ से देखिये। यह जीव रूप दुलहिन बुरे कर्मन के गहना पहिन कर चौरासी गये ॥१॥ पाँच टका कहिये पाप पुण्य, हद बेहद, स्वारथ परमार्थ, काल अकाल, बोल अबोल, बाबा कहिये गुरुवा लोगन से लेकर यही जोड़ा सहाना पहिन कर चौरासी गये ॥२॥ पाँच बालक कहिये "पाँच तत्त्व से पाँच विषय निकले" शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध।

प्रश्न :—मकान के अन्दर आकाश और समान वायु रहता है। मगर शब्द आवाज नहीं होता है?

उत्तर :—चार तत्त्व के संयोग में शब्द गुण होता है ॥

प्रमाण बीजक रमैनी ४० ॥

सञ्जोगे का गुण रवै। बिजोगे का गुण जाय ॥ जिभ्या स्वारथ कारणे, नर कीन्हे बहुत उपाय ॥ नइहर कहिये पाँच तत्त्व से पाँच विषय बालक ठहरे और ससुरे कहिये बैकुण्ठ पुरी ऊपर में भगवान का बहाना करते हैं कि भगवान हमको हुकुम

दिये तब हम चोरी बदमाशी करते हैं यही ससुरे का बहाना समझिये ॥३॥ सद्गुरु कबीर साहेब कहते हैं कि यह जीव रूप दुलहिन ऊपर बैकुण्ठ पुरी में भगवान अमर लोक में सत्य पुरुष ये झूठे अनुमान धोखे में रहने का ठीक ठिकाना किये हैं सो प्रमाण ॥ बीजक साखी ३०० ॥ हंसा के घट भीतरे, बसै सरोवर खोट । चलै गाँव जहवाँ नहीं । तहाँ उठावन कोट ॥

(२५) प्रश्न :–कौन २ भले२ मनुष्य का रास्ता तीन होता है ? भले बुरे मनुष्य का रास्ता दो ? बुरे २ मनुष्य का रास्ता एक सिद्धान्त सहित कहिये ?

उत्तर :–एक भला मनुष्य पूरब से पच्छिम जा रहा था और एक भला मनुष्य पच्छिम से पूरब आ रहा था बीच में भेंट होने पर मेड़ पर से दोनों नीचे उतर परे बस तीन रास्ता हो गया, एक बीच मेढ़ वाला रास्ता और दो रास्ता मेढ़ के नीचे दाहिने बायें यहः तीन रास्ता हुये। सिद्धान्त में बीच का रास्ता मेढ़ नौ काल का था, दोनों भले मनुष्य नौ काल रूपी मेड़ से उतर परे और बिचार सहित अपने आप पर दोनों शान्ति भये। इस हिसाब से भले बुरे का रास्ता दो समझ लीजिये। और बुरे २ का रास्ता एक इस प्रकार है कि उधर से वह आया इधर यह गया नौ काल रूपी मेढ़ से दोनों नहीं उतरे बस लड़ गये मार पीट जेलखाना हो गया यही चौरासी गर्भ बास को दोनों गये सो जानिये।

(२६) प्रश्न :–किस सन्त महन्त का सुमिरन ध्यान पूजा

बन्दगी करना चाहिये किसका नहीं सो प्रमाण सहित कहिये ?

उत्तर—बीजक शब्द ९० का प्रमाण

संत ! महन्तो ! सुमिरो सोई ! जो काल फाँस से बाचा होई ! कबीर साहेब कहते हैं कि उस सन्त महन्त का सुमिरन ध्यान पूजा बन्दगी करना चाहिये जो काल फाँस से बचा हो ! काल कहिये स्त्री दाम जमीन । झगड़े का जरि तीन । और जाति काल जमात काल मेला ठेला महा काल । सातवाँ काल कुटी मढ़ी आठवाँ काल कल्पना नौवाँ काल सर्व देशी ब्रह्म ईश्वर आत्मा खुदा प्रेत मुर्दा वाणी जाल यही नौ काल से रहित हो निज स्वरूप पर शान्ति होय सोई सन्त महन्त पूजने योग्य हैं बन्दगी सेवा करने के योग्य हैं नहीं तो, महन्त महाउत कानून गोई । इनके मरे मुक्ति न होई ॥ नौ काल में फँसने से बैश्य कर्म करने से यह विवेक का लक्षण नहीं इनकी बन्दगी सेवा बहि जान दो यह कबीर साहेब कहते हैं सो जानिये । "कर बन्दगी विवेक की ! भेष धरे सब कोय" ॥ सो बन्दगी बहि जान दे ! जहाँ शब्द विवेक न होय ॥ बीजक साखी २९४ व ३२८ ॥ अकेला बघेला दुकेला बलङ्ग । तीसरे में खट पट् चौथे में जङ्ग ॥ "सिंघ अकेला बन रमै । पलक-पलक करै दौर ॥ जैसा बन है आपन, वैसा बन है और ॥ परख परखावन जीवन केरा । यह व्यवहार यथार्थ निवेरा" ॥ कबीर साहेब नौ काल के व्यवहार में नहीं फँसे इसलिये बन्दी छोर नाम पड़ा और बहुत से जीवन का बन्दी खाना छोड़ाये जैसे बुझी हुई दीपक को

जलती हुई दीपक से प्रकाश कर देने में उसका प्रकाश कम होता नहीं ऐसा जानिये ।

(२७) प्रश्न :—जन्म मरण रूपी दुःख से छूटने का उपाय क्या है ?

उत्तर—बीजक साखी ७२ का प्रमाण ।

साखी :—

बिरह की ओदी लाकड़ी, सपचै औ धुँधवाय ।
दुखते तबहीं बाचिहो, जब सकलो जरि जाय ॥

टीका :—जो सन्त महन्त भेष धारण कर के निज स्वरूप को छोड़ कर नौ काल नौ कोश नौ मन सूत अठारह त्रिगुण, हद बेहद, पाप पुराय, वैश्य कर्म, पञ्च विषय इन सबों की बिरह अग्नि में जलते हैं यानी ओदी गीली लाकड़ी को जलाने वत सपचै औ धुँधुवाय यानी कर्म योग उपासना ज्ञान विज्ञान में फँस कर गर्भ बास का चक्कर आने जाने का लगा रहता है। इसलिये गर्भ बास के दुख से तभी बच सकते हो जब सकल की आशा व लक्त छूट कर अपने आप में शान्ति रहै यही सकल का जरना व बासना अध्यास का खतम होना जानिये ।

प्रश्न—बीजक साखी २९८ का प्रमाण

साखी :—जो तू चाहे मुक्त को, छाँड़ सकल की आश ।
मुक्त ही ऐसा होय रहो, सब सुख तेरे पास ॥

कबीर साहेब बीजक में सकल की आशा छोड़ने को बताया फिर कबीर साहेब अन्न जल वस्त्र धारण करते ही थे पृथ्वी पर

पैदल चल कर अनेक जीवों को शिक्षा उपदेश कर के राज बाद-शाही छोड़ाकर अपना रूप बना लेते थ। 'जो पारस पारस करै, सो पारस है पक्का। जो पारस कञ्चन करै, सो पारस है कच्चा।" यानी पारस से पारस कर लेते थे तो क्या यह यथार्थ व्यवहार परोपकार करने से सकल की आशा कहाँ छूटी ?

उत्तर :–परख परखावन जीवन केरा। यह व्यवहार यथार्थ निबेरा ॥

प्रमाण पंचग्रन्थी।

कबीर साहेब के पास नौ काल व बैश्य कर्म का विशेष बन्धन न था। सामान्य बन्धन परोपकार यथार्थ व्यवहार इस लिये था कि जैसे मनुष्य के पैर में अशुभ काँटा गड़ गया और शुभ काँटा से निकाल कर अन्त में शुभाशुभ दोनों काँटा फेंक दिया अपना पैर ज्यों का त्यों हो गया यानी अपने आप में शान्ति हुआ। जैसे पोखरा से भ्रम रूपी भव सागर में बूड़ते हुये मनुष्य को निकालना है। तो सार शब्द रूपी रस्सी फेंक कर उस मनुष्य को पकड़ा देंगे बस उसे खींच कर बाहर निकाल लेंगे। पोखरा में गोता लगा कर निकालने जाऊँ तो वहाँ पानी में हमारे ऊपर ही पकड़ कर चढ़ बैठेगा और हमको भी दबा कर मार डालैगा इसलिये नौ काल रूपी भवसागर से पार कबीर साहेब थे और सार शब्द रूपी रस्सी फेंक कर बहुत से जीवों को निकाल कर अपने आप में शान्ति हुये। अब जन्म मरण रूपी दुःख गर्भ बास का आना जाना खतम हुआ सो जानिये।

प्रमाण कबीर परिचय।

साखी :—एक कर्म है बोवना, उपजै बीज बहुत।
एक कर्म है भूजना, उगै न अंकुर सूत॥

(२८) प्रश्न :—सन्त महन्त के लक्षण कौन २ होते हैं ?

उत्तर—दोहा :—महन्त होय ममता को त्यागे, विषया तजै अनन्त। सत्य नाम पर आसन लावे, जीवन्मुक्ति तेई सन्त॥

टीका :—बीजक कँहरा २ का प्रमाण॥ दुइ चकरी जनि दरर पसारहु ! तब पैहो ठीक ठौरा हो !॥ दुइ चकरी कहिये हद बेहद शुभाशुभ निर्गुण सगुण काल अकाल, बोल अबोल, पाप पुण्य, धर्म अधर्म, दुःख सुख, खानी वाणी जाल यही सब दुइ चकरी को मति पसारहु यानी इसमें मत फँसो, बीजक साखी १२६ में कबीर साहेब कहते हैं। चक्की चलती देख के। मेरे नैनन आया रोय !॥ दुइ पाट भीतर आय के। साबुत गया न कोय !॥ स्वारथ परमार्थ, पाप पुण्य आदि यही सब दुइ पाट के भीतर आय के सब पीसे जाते हैं यानी चार खानियों में आना जाना गर्भ वास का दुःख छूटता नहीं यही कबीर साहेब का रोना है कि बैश्य कर्म व नौ काल में यह जीव न फँसे तो पाप पुण्य रूपी चकरी में न पीसा जाय यानी गर्भ वास फिर न आवे। काल अकाल परलय नहीं, तहाँ सन्त विरले जाहिं॥ बीजक हिण्डोल १॥ नौकाल का ममता अध्यास छोड़ और नख से सिख तक विषय बुराई को तजै सब जीवन से निर्वैर रहे। सत्य कहिये चेतन स्वरूप एक देशी,

नाम कहिये बोध को। अपने सत्य स्वरूप पर बोध होना या शान्ति होने को आसन लाना जानिये इसी को सन्त महन्त कहते हैं सो जानिये।

(२९) प्रश्न :–निज कीरति राखा चहैं, पर कीरति चहैं खोय ? कबीर साहेब अपना कीर्ति राखा चाहते हैं और पराई कीर्ति खोना चाहते हैं सो प्रमाण।

(बीजक रमैनी ५४––८१ व बसन्त १० में)

नाथ मछन्दर बाँचो नहीं। गोरख दत्त औ व्यास॥
कहहिं कबीर पुकारि के। ई सब परे काल की फाँस॥

देव चरित्र सुनहु हो भाई ! जो ब्रह्मा सौ धियेउ नसाई॥
सबहीं मद माते कोई न जाग। सङ्गहि चोर घर मूसन लाग॥
माते शुकदेव उद्धव अक्रूर। हनुमत माते ले लंगूर॥ इत्यादि जोगी जंगम सेवड़ा संन्यासी पण्डित तपसी मोलना आदि सब काल के फाँस में परिगे ! एक कबीर साहेब सिर्फ काल के फाँस से बचे और कोई नहीं बचा ये शङ्का ?

उत्तर :–जो सन्त महन्त भेष धारण कर के वैश्य कर्म करते हैं वह पाप पुण्य रूपी जाल व खानी बाणी रूपी जाल में सही फँस गये स्त्री, ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा, गुरुवा, कल्पना रूपी काल जाल के भारी फन्दा में फँस गये। तब कबीर साहेब जैसा को तैसा क्यों न कहैं ! कोई भेष धारी सन्त महन्त गाँजा तम्बाकू पीना छोड़ दिया तब वह दूसरे महन्त गाँजा पीने वाले को कहते हैं कि तुम दूर आसन लगावो गन्धाते हो ! इसी प्रकार

जो व्यक्ति जो महन्त वैश्य कम नौ काल से रहित हैं तब वह दूसरे व्यक्ति या महन्त नौ काल में फँसने वाले को जरूर कहेंगे कि तुम गन्धाते हो दूर आसन लगावो ! सोना सज्जन साधु जन यह बिचार करो कि यह पराई कीर्ति खोना है कि दूसरे के अवगुण बन्धन छोड़ाना है ! सोना सज्जन साधु जन बोले कि जो व्यक्ति या महन्त जितना पदारथ अपदारथ नौ काल को छोड़े हैं उतना जरूर दूसरे व्यक्ति को शिक्षा उपदेश करके नौ काल के छोड़ाने में निन्दकी नहीं अपयशी नहीं। पराई कीर्ति नहीं खोते ! बल्कि वही हितकर हैं दोस्त हैं, गुरु हैं ! ऐसा जानिये। पूरण साहेब सन्ध्या पाठ में ऐसा कह गये कि दुःख सुख धर्म अधर्म सब झूठ के अन्दर बरतते हैं इसलिये अनेक जोड़ा को असार संसार कहा गया है और सत्य अपना चैतन्य स्वरूप एक देशी नित्य और देह अनित्य है। मीठो रहै, कठौता भर भी रहै, सत्य भी हो, प्रिये भी हो, यह दोनों हो ही नहीं सकता सो सुनो ! अच्छी चीज बहुत कम होती है जैसे हीरा और पाथर। सोना और लोहा। सन्त और असन्त। कई करोड़ ब्राह्मणों में एक सुपच भक्त ठहरे राजा युधिष्ठिर के यज्ञ में। कोटि विरक्त मध्य श्रुति कहई। सम्यक ज्ञान सुकृत कोउ लहई॥

रामायण उत्तर काण्ड दोहा ५३।

देवते किहिन छिन्नरई, मुनिये लिखिन पुराण। सन्तो पाँड़े निपुण कसाई। बाप पूत की एकै नारी, एकै माय बियाय॥ ऐसा पूत सपूत न देखा। जो बापहि चीन्है धाय॥

बीजक रमैनी २ ॥

ऐसा २ बचन कबीर साहेब बीजक में बोले ! यह बचन सत्य तो है मगर प्रिय नहीं। सकल की आशा छोड़ना यही चिरैता का काढ़ा कड़ुवा पीना है। साँच बचन चिरैता का काढ़ा है इसको पीने में प्रिय नहीं लगता मगर जन्म मरण रूपी रोग निवृत होता है इसलिये धर्म अधर्म पाप पुण्य दुःख सुख आदि यही गाड़ी के दो पहिया हैं इसी का नाम दुनियाँ है संसार असार है इन दोनों से परे सत्य अपना स्वरूप है इसी पर शान्ति लेवो तब आवागवन से रहित होवोगे ऐसा जानिये। प्रिय प्रीत आनन्द सुख को राग कहते हैं और द्वेष को क्रोध कहते हैं इन दोनों से परे अपने स्वरूप अविनाशी एक देशी को सत्य कहते हैं।

(३०) प्रश्न:-असन्त अबिबेकी और बिबेकी सन्तों का लक्षण बीजक से बताइये ?

बीजक साखी २६४ का प्रमाण।

कर बन्दगी बिबेक की। भेष धरे सब कोय।
सो बन्दगी बहि जान दे! जहाँ शब्द बिबेक न होय॥

टीका:-श्री काशी साहेब जड़ चेतन भेद प्रकाश ग्रन्थ में कह गये कि, खेती बाड़ी नाना धन्धे, तजे सब भेष लेत ही। बिबेक बैराग्य में प्रीती, सदा जिन्होंने धारी है॥ सन्तों की चाल और रहनी सकल दुनियाँ से न्यारी है॥ पूरण साहेब सन्ध्या पाठ ग्रन्थ में कह गये कि, नहिं काम है धन धाम सब, बेकाम

सपना सों दिखे। पर चित्त छाड़त नाँहि आशा, काह भये बहु पढ़ लिखे ? देह जगत और ब्रह्म लों जेते अहैं बिकार। इन में आसक्त न होइये यह बिचार ततसार॥ सुख दुःख धर्म अधर्म सब, बरते असतहिं माँहि। निठुरता क्यों राखिये शील गहो नर नाँहि॥ वही धर्म अधर्म का काम चेला करै और वही धर्म अधर्म का काम गुरु महाराज भी करैं तो "जाका गुरू है आँधरा। चेला काह कराय ?॥ अन्धे अन्धा पेलिया। दोऊ कूप पराय"॥

बीजक साखी १५४॥

कहो सज्जनों अब बिचार करो कि इस प्रमाण से जो मनुष्य आचार्य व सन्त महन्त गुरु होकर खेती व्यापार करै सूद ब्याज़ ले अदालत लड़ै झूठ बोलै गऊ पाले गऊ के लिये साँड़ खोजै भूसा पैरा माँगै बैंक में रुपया जमा करै साइकिल घोड़ा हाथी बैलगाड़ी सरवनी हेंगा पलटा पर चढ़ै खुरपी लेकर खेत निरावै सोहनी करै केचुआ काटै कुँआ कुटी बनवावे कुटी पर भक्तिन रख कर साथ में लेकर बिचरै यह सब वैश्य कर्म है कि नहीं ? अवश्य वैश्य कर्म है ! विवेकी सन्त महन्त गुरु का लक्षण नहीं सो जानिये। इसलिये वैश्य कर्म करने वाले भेष-धारी आचार्य सन्त महन्त को गुरु मत बनावो इनसे कण्ठी माला मत पहिनो अचला लंगोटी मत लो इनको दूर ही से त्याग देओ इनकी सेवा बन्दगी बहि जान दो यह सब वैश्य कर्म करने से असन्त का लक्षण है।

कबीर साहेब बीजक रमैनी ७० में कहे हैं कि

मिलहि सन्त बचन दुइ कहिये। मिलहि असन्त मौन होय

रहिये ।। इनसे मौन हो रहना ठीक है। नौ काल से रहित नौ गुण सहित निज स्वरूप स्थित पुरुष को सन्त कहा जाता है।

जड़ चेतन दो वस्तु है, अति प्रसिद्ध जग माहिं।
या की पारख प्राप्त बिन, बन्धन छूटत नाहिं ॥
तीन लोक भौ पीञ्जरा, पाप-पुण्य भौ जाल।
सकल जीव सावज भये, एक अहेरी काल ॥

बीजक साखी १८

नौ काल के परपञ्च में फँसने से पाप पुण्य रूपी जाल से छुट्टी पाना असम्भव जानिये और चार तत्व वस्तु आकाश अवस्तु व नौकाल का संजोग न हो चाहना न हो तो जीव अपने आप में रहैगा आवागमन से रहित हुआ जानिये। यही विवेकी सन्तों का लक्षण है और विवेकी सन्तों से दो वचन कहना जानिये और सकल आशा का छूटना जानिये। सञ्जोगे का गुण रवै। बिजोगे का गुण जाय ॥ जिभ्या स्वारथ कारणे। नर कीन्हें बहुत उपाय ॥

बीजक रमैनी ४०।

टीका :—देह जीव के सञ्जोग से मनुष्य इच्छा सहित बन्धन और मोक्ष का काम दोनों कर सकता है देह जीव के बिजोग में इच्छा रहित बन्धन और मोक्ष का काम दोनों खतम है अब अपने आप में रहैगा। जीभ और लिङ्ग के स्वाद स्वारथ में पड़ कर अनेकों उपाय करता है और चारो खानी में आया जाया करता है। कबीर साहेब अड़तालिस रमैनी में कह रहे हैं कि—

"हवी नबी नबी के कामा। जहाँ लों अमल सो सबै हरामा॥"
हिन्दू मुसलमान क्रिस्टान भेष धारी सन्यासी आदि में जहाँ तक जीभ लिङ्ग के स्वाद अमल हैं वह सब हराम हैं। इसलिये बीजक टीका में पूरण साहेब २९८ साखी में लिखे हैं कि देह गेह जगत ब्रह्म ना कोश अन्न जल वस्त्र पाप पुण्य आदि सकल की आशा छोड़ने से सब सुख तेरे पास यानी अपने आप पारख स्वरूप में सदा के लिये शान्ति रहैगा यही सब सुख जानिये।

(३१) प्रश्न :—भजन का भेद न्यारा क्यों है सो अर्थ सहित भजन कहिये ?

उत्तर—(भजन)

अवधू[1] भजन भेद है न्यारा॥ टेक॥ क्या गावो क्या लिखा देखावो क्या भरमौ संसारा। फूँके कान भरम न जइहैं, सिर पर लादे भारा[2]। अवधू॥ १॥ गहिरे[3] बूड़ै ऊथल[4] बतावें बात करैं अहङ्कारा। बिन सतगुरु केतनेव नर बहिगे, मोह लोभ के धारा॥ अवधू॥ २॥ टट्टी[5] ओटे चला बहे-लिया लिहे सङ्ग में चारा। ज्यों सुर सर बगु धरे ध्यान है, घट ही में अरे बिकारा॥ अवधू॥ ३॥ आपन रूप स्वरूपहिं चीन्है शब्दहिं करै अहारा। कहहिं कबीर पार वै जइहैं, करम भरम जिन जारा॥ अवधू॥ ४॥

टीका—१—अवधू कहिये स्त्री रहित योगी को कबीर साहेब कह रहे हैं कि हे अवधू प्राणायाम स्वाँसा चढ़ाय पच मुद्रा करके ईश्वर को खोज रहे हो यह भजन नहीं। अपना

घर निज स्वरूप को छोड़ कर पराये घर ईश्वर के यहाँ अनुमान अवस्तु में कुछ हाथ न लगेगा और फिर चौरासी में आकर डेरा करोगे इसलिये माया चार तत्त्व वस्तु आकाश अवस्तु से सुरति समेटि कर अपने आप में स्थिर रहो यही भजन का भेद न्यारा है सो जानिये। २—भारा कहिये, धन दारा सुत राज काज हित माथे भार गह्यो ॥

बीजक शब्द १०७ ॥

कबीर साहेब कह रहे हैं कि हे सन्तो वैश्य कर्म नौ काल में फँस कर के पाप पुण्य रूपी भार सिर पर क्यों लादते हो ? गदहा पाप पुण्य रूपी भार दो लादी लादता है सन्त रूप सिंघ नहीं लादते सो जानिये। ३—गहिरे कहिये स्त्री दाम ज़मीन में फँसकर गर्भ वास में बार बार आया जाया करते हैं यही गहिरे का बूड़ना समझिये। ४—ऊथल कहिये ऊपर बैकुण्ठ पुरी अवस्तु में पहुँचने के लिये कर्म योग उपासना तप तीर्थ व्रत संयम दान आदि करते हैं यही ऊथल को गुरुवा लोग बताते हैं और नौ काल के परपञ्च का अहङ्कार करके बिना पानी बूड़े जाते हैं। ५—जिस घर धन स्त्री ज़मीन मेला भण्डारा को छोड़ कर आये और साधु का भेष बना कर फिर वही घर के बदले कुटी मढ़ी स्त्री के बदले भक्तिन रखने लगे और जमीन खरीदना गऊ पालना सूद ब्याज लेने के वास्ते बैङ्क में रुपया जमा करना मुकदमा लड़ना धर्म अधर्म मेला भण्डारा झूठ पर-पञ्च का काम करने लगे यही टट्टी के आड़े शिकार खेलने लगे

चार मन गल्ला खिलाय कर बीस मन रकम रुपया रख लेते हैं यही चारा संग में लिये हैं जैसे बहेलिया टट्टी के आड़े शिकार खेलता है। सुर कहिये सुरति सर कहिये तालाब में बगुला सुरति का ध्यान लगाये रहता है और कपट छल बिकार घट ही में भरा है ऐसा जानिये।

(३२) प्रश्न :—क्या सत्य है क्या असत्य ? और जन्म मरण गर्भ वास दुःख से छुट्टी पाने के लिये मुख्य उपदेश कबीर साहेब का क्या है ?

उत्तर--बीजक रमैनी ७० व कहरा दो व बसन्त ७ का प्रमाण।

मिलहिं सन्त बचन दुइ कहिये। मिलहिं असन्त मौन होय रहिये॥
दुइ चकरी जनि दरर पसारहु ? तब पैहो ठीक ठौरा हो!॥
अबकी बार जो होय चुकाव ? कहहिं कबीर ताकी पूरी दाव॥
साखी—मूल गहे ते काम है, तैं मत भरम भुलाव ?
मन सायर मनसा लहरी, बहै कतहुँ मत जाव!॥
करहु विचार जो सब दुःख जाई। परि हरि झूठा केर सगाई॥
लालच लागी जन्म सिराई। जरा मरण नेरायल आई॥
साखी—चलते चलते पगु थका, नग्र रहा नौ कोस।
बीचहिं में डेरा परा, कहहु कौन को दोस ?॥
नौ मन सूत अरुझि नहिं सुरझै। जन्म-जन्म उरझेरा॥
कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो! यह पद का करहु निबेरा॥

बीजक साखी ९० व ५० व रमैनी २३ व शब्द ८५।

दोहा—जीव स्वरूप से मुक्त है, देह सम्बन्ध से भूल।

सो सम्बन्ध अनादि है, सुख मानन्दी शूल ॥
मानन्दी दोय प्रकार की, प्रारब्धी पुरुषार्थ ।
प्रारब्धि मिटती भोग करि, पुरुषार्थ काटि सनाथ ॥
स्त्री दाम ज़मीन औ, जाति जमात भण्डारा ।
झूटी कल्पना वाणी जाल, नौकाल हनि डारा ॥
दया धैर्य सत्य शील ले, विवेक वैराग्य विचार ।
गुरु भक्ती औ सुमति से, नौ गुण सब दुख टार ॥

नौ कोश व हद बेहद के अर्थ निर्पक्ष रत्नाकर ग्रन्थ २०–२१ पृष्ठ में देखिये ।

चौपाई

सुनहु शिष्य मम वचन अदागहु । नौ[२] मानन्दी दिल से त्यागहु ॥
निर्णय सन्त बचन दृढ़ गहिये । निज को भूलि न अन्ते बहिये ॥
चाह असत्य सत्य जीवहि जानहु । नौ गुण गहु गुरु वचन प्रमानहु ॥

कहहिं कबीर सुनो हो हंसा, उपदेश हमारो गहिये । पारख सोई निज रूपहिं चेतन, तामें स्थिर होय रहिये ॥ ४ ॥ मुक्ति होय बहु बन्धन नाशै, जनम मरण दुख छूटै । आस भास सब भ्रम नशावे, यम से तिनुका टूटै ॥ ५ ॥ यम गुरुवा नौ काल में फँसते, पाप पुण्य दुइ जाल । इनकी सङ्गति न करो, कहिगे गुरु श्रीलाल[१] ॥ ६ ॥ संगति उनकी कीजिए, नौ से रहैं विरक्त । शान्ति रहैं निज रूप में, फिर नहिं आवें जक्त ॥ ७ ॥ बोल अबोल को लख लिया, हद बेहद के पार । काल अकाल प्रलय नहीं, यह विचार तत सार ॥ ८ ॥ सार वही निज रूप में, देह जगत नहिं ब्रह्म । अचल अखण्ड एक

रस, रहित वासना भ्रम ॥ ९ ॥ अभ्यास चाहना में रहै, चाह रहित नहिं कर्म । चाह नहीं नौ[2] की करै, त्रय[3] देह नहिं ब्रह्म ॥ १० ॥ जितनी चाह अचाह की, होत अधिकता चोत । उतना सुख दुख जानिये, तन मन को है मीत ॥ ११ ॥

टीका १–व्याख्या सत्यासत्य निर्णय ग्रन्थ ४०० पृष्ठ में साधु रामलाल दास के सद्गुरु श्री लाल साहेब का बनाया भजन कुटी मढ़ी खण्डन है देखिये । २–नौ मानन्दी कहिये नौ काल नौ कोश नौ मन सूत यह नौ की चाहना छोड़ै । ३–त्रय देह कहिये स्त्री पुरुष नपुंसक । स्थूल सूक्ष्म कारण ।

(३३) प्रश्न :–१–जब से पसरा तब से बटुरा नहीं ? २–जब से उठा तब से बैठा नहीं ? ३–जब से बरा तब से बुतान यानी ठण्ढा नहीं भया ? ४–जब से फरा तब से झरा नहीं ? ५–जब से घुसरा तब से निकरा नहीं ! ६–जब से आया तब से गया नहीं ! ७–जब से भरा तब से खाली भया नहीं ? यह सात प्रश्न है ?

उत्तर १--पृथ्वी जब से पसरा तब से बटुरा नहीं ! २--आसमान तम्बू जब से उठा खड़ा भया तब से बैठा नहीं यानी नीचे को नहीं आया ! ४–सूर्य अग्नि का गोला जब से बरा तब से बुतान नहीं यानी ठण्ढा भया नहीं ! ३–चन्द्रमा तारा गया जब से ऊपर आकाश में फरे तब से झरे नहीं यानी टूट कर पृथ्वी पर गिरे नहीं ! ५-वायु जब से इस दुनियाँ में घुसरा तब से निकल कर ख़तम नहीं हुआ ! ६–स्त्री पुरुष, पाप पुण्य,

बीज वृक्ष, शुभाशुभ, देवता दैत्य आदि अनेक जोड़ा जब से आये तब से गये नहीं ! ७-समुद्र की खाँई में जल जब से भरा तब से खाली भया नहीं । इस सात प्रश्न के हिसाब से जगत अनादि ठहरता है और चार तत्त्व द्रव्य आकाश अद्रव्य अनन्त जीव अविनाशी एक देशी यह न किसी के बनाये हैं न बिगड़ेंगे न कहीं से आये हैं न जायेंगे !

इसलिये प्रमाण बीजक रमैनी ३७ व निर्णय सार आदि ।
जड़ चेतन दो वस्तु है, अति प्रसिद्ध जग माहिं ।
ताकी पारख प्राप्ति बिन, बन्धन छूटत नाहिं ॥
बीजक बित्त बतावे, जो बित्त गुप्ता होय ।
ऐसे शब्द बतावे जीव को, बूझै बिरला कोय ॥
जीव जमा साँचा है भाई, और सबै खर्चा ठहराई ॥

चैतन्य जीव एक देशी अविनाशी हृदय निवासी यह वित्त कहिये धन है । नौ काल से रहित नौ गुण सहित बिरले पारखी अपने जीव जमा पर ठहर कर शान्ति होते हैं और जगत अनादि होने में एक ग़ज़ल गुरु चेला सम्बाद ग्रन्थ प्रश्न ६९ में है वहाँ से देखिये ।

(३४) प्रश्न :--नमक का पहाड़ और मिश्री का पहाड़ पर कौन कौन चढ़े सो दृष्टान्त सिद्धान्त सहित कहिये ?

उत्तर--एक चिउँटी नमक के पहाड़ पर रहती थी और उसकी बहन मिश्री के पहाड़ पर रहती थी एक दिन वह अपने छोटी बहन के यहाँ गई । भेंट मुलाकात होने पर छोटी बहन

बोली कि तुम तो बहन बहुत प्रसन्न और मोटी ताजी रोग शोग रहित देख पड़ती हो। तब बड़ी बहन कहती है कि हम मिश्री खाती हूँ और मिश्री के पहाड़ पर रहती हूँ इसलिये रोग शोग रहित मोटी ताजी बनी हूँ। और तुम नमक खाती है, नमक के पहाड़ पर रहती है। इसलिये दुबली पतली रोग शोग सहित बनी हो। चलो हमारे यहाँ मिश्री के पहाड़ पर रहो चाटो तो तुम भी रोग शोग रहित मोटी ताजी प्रसन्न चित्त हो जाओ। यह वचन सुन कर छोटी बहन चल दी और मिश्री के पहाड़ पर पहुँच कर चाटने लगी तब भी उसको नमक ही का स्वाद आया करै, तब बड़ी बहन उसके मुख में अंगुली छोड़ कर नमक का छोटी डली निकाल कर फेंक दी तब छोटी बहन मिश्री चाटने लगी फिर वह नमक का स्वाद नहीं आया और मोटी ताजी प्रसन्न चित्त रोग शोग रहित हो गई। यह तो दृष्टान्त हुआ इसका सिद्धान्त सुनो। कोई महन्त आचार्य नौ काल नमक रूपी पहाड़ पर अपना घेरा बना कर चिन्ता में बैठे हैं और कोई महन्त आचार्य स्त्री भोग और वाणी जाल दो काल को सिर्फ छोड़े हैं बाकी सात काल के नमक रूपी पहाड़ पर अपना घेरा बना कर अदालत लड़ कर चिन्ता में बैठे हैं इसलिये जीभ लिंग के स्वाद में पड़कर संशय रूपी शोग जन्म मरण रूपी रोग तृष्णा रूपी खाँसी आवा गवन की डोरी लगी है यही काल की फाँसी परख कर त्यागते नहीं, तब दूसरे महन्त के ऊपर उपदेश लागू नहीं होता सो जानिये। अब नौ

गुण रूपी मिश्री के पहाड़ पर जो महन्त आचार्य बैठे हैं वह सन्त नौकाल व सात काल के घेरा में नहीं आते वह सन्त दुई चकरी स्वारथ धरमार्थ पाप पुराय रूपी जाल में नहीं पड़ते संशय रूपी शोग जन्म मरण रूपी रोग से अचिन्त अचल भये अपने आप में शान्ति भये सो जानिये ।

नौकाल की नमक रूपी पहाड़ का नाम अलग अलग सुनो !

दोहा—स्त्री दाम जमीन औ, जाति जमात भण्डारा ।
कुटी कल्पना वाणी जाल, नौकाल हनि डारा ॥

नौगुण ही मिश्री के पहाड़ का नाम अलग-अलग सुनो !

दोहा—दया धैर्य सत्य शील ले, बिरति विवेक विचार ।
गुरु भक्ती औ सुमति से, नौ गुण सब दुख टार ॥

बीजक व रामायण में सकल की आशा छोड़ने को कहे हैं यहाँ पर मुख्य नौकाल ही छोड़ने से मुक्ती है तब भी कोई कोई महन्त को दुख होता है बाद बिबाद भी करते हैं फिर क्या करैं हाथी अपना चाल चलैगी कुत्ता पीछे से भूकैंगे यह दोनों काम बन्द होने को नहीं ।

सो प्रमाण बीजक साखी ३१५ व २९८ ।

साखी—अपनी कहै मेरी सुनै, सुनि मिल एकै होय ।
हमरे देखत जग जात है, ऐसा मिला न कोय ॥
जो तू चाहै मुझ को, छाँड़ सकल की आस ! ।
मुझही ऐसा होय रहो, सब सुख तेरे पास ! ॥

और प्रमाण कबीर साखी व रामायण किष्किन्धा काण्ड दोहा २७ ॥

सन्त मता गज राज का, चालै बन्धन छोर ।

जग कुत्ता पीछे फिरै, सुनै न वाकी शोर ॥

बिन घन निर्मल सोह अकाशा । जिमि हरि जन परि हरि सब आशा ।

(३५) प्रश्न :—सकल आशा छूटने के लिये रामायण व बीजक का प्रमाण दीजिये ? और उसका अर्थ भी कहिये कि सकल आशा में कितना छूट है कितना बाकी है ?

उत्तर—बीजक साखी २९८ व रामायण किष्किन्धा काण्ड दोहा २७ ॥

जो तू चाहै मुझ को । छाँड़ सकल की आस ! ॥
मुझ ही ऐसा होय रहो । सब सुख तेरे पास ! ॥

बिन घन निर्मल सोह अकासा । जिमि हरि जन परि हरि सब आशा ॥ अर्थ – जिस प्रकार आकाश अन्तःकरण में मोह रूपी बादल जब नहीं रहता है तब ज्ञान विचार रूपी सूर्य चन्द्रआदि शोभा को पाते हैं और जो सन्त (हरिजन) स आशा रहित हैं वह भी संसार में शोभा को पाते हैं जैसे कबीर साहेब आदि । सन्ध्या पाठ में पूरण साहेब कहे हैं कि देह जगत औ ब्रह्म लों । जेते अहैं विकार ॥ इनमें आसक्त न होइये । यह विचार तत सार ॥ सुख दुःख धर्म अधर्म सब बरते असतहि माहिं ॥ निठुरता क्यों राखिये । शील गहो नर नाहिं ॥ नहिं काम है धन धाम सब, बेकाम सपना सों दिखे ॥ पर चित्त छाड़त नाहिं आशा, काह भये बहु पढ़-लिखे ? ॥ नौकाल, नौ कोश, नौ मन सूत, पाप पुण्य, बैश्य कर्म नहीं छूटा, तब सकल आशा कहाँ छूटा ? नौ काल में दो काल सिर्फ छूट है एक स्त्री

भोग और दूसरा साखी जाल। और बाकी सात काल वैश्य कर्म पाप पुण्य में फँसने से असन्त नाम पड़ा सो जानिये। बीजक रामायण में सन्त असन्त दोई कायम है वेशी नहीं। मिलहिं सन्त बचन दुइ कहिये। मिलहिं असन्त मौन होय रहिये॥ सन्त असन्तन की अस करणी। जिमि कुठार चन्दन आचरणी॥ जब सात काल, पाप पुण्य स्वारथ धर्मार्थ वैश्य कर्म में फँसने से असन्त नाम पड़ा! तब इन गुरुवों से कण्ठी माला मत पहिनो अचला लङ्गोटी मत लो इनको गुरु मत बनाओ, इनका चरणोदक शीत प्रसादी मत लो यह वैश्य कर्म के उपाधी में पड़े हैं। इन्हें बन्दी छोर कैसे कहै यह तो बीजक पढ़-पढ़ाय कर खेत मठ मकान आदि अपने नाम लिखवाय कर साधुओं को फलाँ २ कुटी मढ़ी पर बाँध देते हैं। यह कबीर गुरु के बचन पर चलते नहीं यही गुरु सीढ़ी से उतरना जानिये।

बीजक साखी २२० का प्रमाण है कि

सतगुरु बचन सुनो हो सन्तो! मति लीजै शिर भार!॥ हों हजूर ठाढ़ कहत हों! अब तैं समर सँभार!॥ फिर क्या करै "जटा धारी मठा धारी, खोपड़ी खोपड़ी गति न्यारी"॥ सब के मान का है नहीं, इसलिये कबीर साहेब बीजक हिण्डोल में कहे हैं कि काल-अकाल परलय नहीं। तहाँ सन्त बिरले जाहिं॥ चौकीदार अधिक हैं कप्तान कोई बिरले हैं। चौकीदार चाहता है कि हमको भी कप्तान का कुरसी बैठने को मिलै और तनखाह भी कप्तान के बराबर मिलै। कप्तान नहीं चाहता है

कि हम चौकीदार हो जाऊँ। संसार में सर्प हाथी पाथर बहुत हैं मगर मणि, गज मुक्ता हीरा बिरले के ठहरैंगे। पक्षपात बचन बोलना पक्ष पात रहस्य धारण करना ऐसे सन्त महन्त भेष धारी बहुत हैं निष्पक्षी सन्त महन्त भेष धारी कोई बिरले हैं ऐसा जानिये।

(३६) प्रश्न :—धर्म भक्ति किसे कहते हैं सो प्रमाण सहित शब्द में कहिये ?

उत्तर—(शब्द)

देखो ! कैसा समय अलबेला, भजन का खूब मिला ॥ टेक ॥ चाव चपट से भक्ति को धारो ! तन मन धन सब गुरु को वारो ॥ करो सन्त समागम मेला ॥ भजन० ॥ १ ॥ ममता मोह कोह नहिं लावो ! पञ्च बिषय सुख आव मिटावो ॥ तजि के दुनियाँ का झूठ झमेला ॥ भजन० ॥ २ ॥ जो जो साँच होत परतीती। सो सब उनकी झूठी प्रीती ॥ उन्हें जानो नाटकी खेला ॥ भजन० ॥३॥ माया नगर में सबहीं भुलाने। निज कारज कोई नहिं जाने ॥ बिरले जाने गुरु का चेला ॥ भजन० ॥ ४ ॥ सबही दीखत स्वारथ के साथी। अपने अपने सुख के साथी ॥ पर लोक में जीव अकेला ॥भजन०॥५॥ जो कछु धर्माधर्म कमावो ! सोई सङ्ग साथ ले जाओ ॥ नहिं और चलैगा सङ्ग धेला ॥ भजन० ॥ ६ ॥ धर्म[1] भक्ति[2] जिन नहिं अपनाया। सो सब धोखे जन्म गमाया ॥ वह जाये नरक में ठेला ॥ भजन० ॥ ७ ॥ दास निर्ग्रन्थ मनहिं समझावो !

जग दुखि देखि के कदम बढ़ाओ ।। यह अन्त समय का है बेला ।। भजन० ।। ८ ।।

टीका १—पूरण साहेब सन्ध्या पाठ में दुःख सुख धर्माधर्म सब झूठ के अन्दर बरतते हैं ऐसा बताये हैं इस हिसाब से नौ काल से रहित नौ गुण सहित होकर निज स्वरूप पर बोध करै और करावै उसी को परोपकार धर्म कहते हैं और इसी रहनी से जन्म मरण दुःख छूटैगा और भोजन वस्त्र विद्या अभय दान यह चार दान धर्माधर्म के करने से जन्म मरण दुःख छूटने को नहीं सो जानिये । २—अब भक्ति का अर्थ सुनो ! स्त्री दाम जमीन । झगड़े का जरि तीन ।। में फँसने से काम क्रोध लोभ की उत्पति होती है इसलिये कबीर साखी का प्रमाण ।

दोहा :—कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय ।
भक्ति करै कोई शूर्मा, जाति बरण कुल खोय ।।
निर्पक्षी को भक्ति है, निर्मोही को ज्ञान ।
निरद्वन्द्वी को मुक्ति है, निर लोभी निर बान ।।
विषय त्याग वैराग्य है, समता कहिये ज्ञान ।
सुखदाई सब जीव सो, यही भक्ति प्रमान ।।

पक्ष अपक्ष निर्पक्ष गुरु यह तीनों का अर्थ निर्पक्ष रत्नाकर ग्रन्थ के आदि ही में देखिये ।

(३७) प्रश्न :—झुँझुरी घाम किसे कहते हैं ? और इससे मुक्त होने का उपाय कहिये ?

उत्तर बीजक साखी २८७ का प्रमाण

"भु ँभुरी घाम बसै घट माहीं। सब कोइ बसै सोग की छाहीं।" टीका—भु ँभुरी घाम कहिये नौ काल नौ कोश नौ मन सुत में अरुझे और नौ काल की चाहना यही घट के अन्दर बसने से हरष शोग रूपी छाहीं में सब पड़े रहते हैं अगर नौ काल वैश्य कर्म की चाहना छोड़ दें, कर्म बन्द कर दें तो गर्भ वास में देह क्यों बने ? काहे पाप पुण्य रूपी जाल ओढ़ना पड़ै ? तब तो अनेक जोड़ा से रहित अपने आप में सदा के लिये अचल शान्ति रहैगा।

साखी :—बहुत दान जो देत हैं, करि-करि बहुतै आस। काहू के गज होंयगे, खइहैं सेर पचास ॥ मुफ्त दान जो देत हैं, मुफ्तहिं लेत असीस। ऊँट काहू के होहिंगे, लादेंगे मन बीस ॥ आगि आँच सहना सुगम, सुगम खड्ग की धार। नेह निबाहन एक रस, महा कठिन व्यवहार ॥ नेह निबाहे ही बने, सोचै बने न आन। तन दै मन दै शीश दै, नेह न दीजे जान ॥ मनहीं में फूला फिरै, करता हूँ जो धरम। कोटि करम शिर पर चढ़ै, चेत न देखे मरम ॥ और धर्म सब कर्म है, भक्ति धरम निह कर्म। नदी हत्यारी को कहै, कुँआ बावरी भ्रम ॥

॥ कबीर साखी ॥

(३८) प्रश्न :—परिणामदर्शी पुरुष के लक्षण विवेक सहित कहिये ?

उत्तर—परिणामदर्शी पुरुष पशु पशु पर अपना कल्याण करता है ॥ अर्थ-बुरी इच्छायें उठा कर और जीवों के साथ बुरा

कर्म करने से जो रुक जाता है यानी सावधान होकर अपने पर स्वरच्छित रहता है वही परिणामदर्शी पुरुष है। वैश्य कर्म नौ काल में फँसने से पाप पुण्य रूपी जाल में अवश्य फँसैगा। इस लिये अविवेकी असन्त का लक्षण होने से इन्हें गुरु मत बनाओ इनसे कण्ठी माला मत पहनो इनसे अचला लंगोटी मत लेवो यह गुरुवा लोग वही पाप पुण्य रूपी जाल में फँसा कर मछली ऐसा मारेंगे।

सो प्रमाण बीजक शब्द ६१ व साखी २३१ व २३३ में

कर्म फाँस यम जाल पसारा। जस धीमर मछरी गहि मारा॥
मच्छ होय नहिं बाँचिहौ। धीमर तेरो काल॥
जेहि-जेहि डाबर तुम फिरो। तहाँ-तहाँ मेले जाल॥
समुझाये समुझे नहीं, पर हाथ आपु बिकाय!॥
मैं खैंचत हौं आप को। चला सो यम पुर जाय॥

पण्डित, पण्डवा, सोना स्त्री नौ काल में फँसने फँसाने वाले गुरुवा यही पाँचो प्रत्यक्ष यम हैं और यही यम पुरी गर्भ बास को पहुँचावेंगे और अपने आप को छोड़ कर इन पाँचो के हाथ बिकाय गये समुझाये से समुझता नहीं सो जानिये।

(३६) प्रश्न :—मानुष जन्म क्यों दुलभ है सो प्रमाण सहित कहिये?

उत्तर—बीजक साखी ११५ का प्रमाण।

मानुष जन्म दुर्लभ है, बहुरि न दूजी बार।
पक्का फल जो गिर परा, बहुरि न लागै डार॥

टीका :—कबीर साहेब कह रहे हैं कि नौ कोश नौ मन सूत नौ काल,[१] वैश्य कर्म,[२] हद बेहद,[३] पाप पुण्य,[४] खानी बाणी,[५] जाल पन्द्रह त्रिगुण,[६] इन सबौं से रहित हो, नौ गुण सहित स्वरूप स्थित हो सो मानुष है हंस है मुक्त है ऐसा मानुष जन्म दुर्लभ है और बहुरि करके फिर गर्भ बास में नहीं आवेगा जैसे बीज को अग्नि में भूँज डालो तो नहीं जामैगा उगने को नहीं। पक्का फल कहिये दया धैर्य सत्य शील ले, विरति विवेक विचार। गुरु भक्ती औ सुमति से, नौ गुण सब दुख टार॥ ये पक्के तत्व नौ गुण धारण करके जो देह छोड़ता है फिर वह बहुरि करके गर्भ बास में नहीं आवेगा अपने आप में अचल शान्ति रहैगा।

टीका—१-नौ काल का समझौता वर्णन-स्त्री दाम ज़मीन औ, जाति जमात भण्डारा। कुटी कल्पना वाणी जाल, नौ काल हनि डारा॥ २-वैश्य कर्म का समझौता वर्णन-भेष धारण करके खेती ब्यापार करै गऊ पालै गऊ के लिये साँड़ खोजै सूद ब्याज लेवे, बैङ्क में रुपया जमा करै, साइकिल घोड़ा बैल गाड़ी हेंगा सर वली (पलटा) स्त्री पर चढ़ना, खुरपी ले कर खेत में सोहनी यानी निराते समय केचुवा काटना जूता पैजामा फैन्सी कपड़े पहिनना अदालत लड़कर झूठ बोल कर २५ बिस-वह के औज में पचीस बीघा लिखवाना यह सब परपञ्च में फँसना परमार्थ रहित स्वारथ सहित वैश्य कर्म जानिये। ये कलि गुरु! बड़े परपञ्ची। डारि ठगौरी सब जग मारा॥ बेद-कितेब दोऊ

फन्द पसारा। तेहिं फन्दे परु आप बिचारा!॥ कहहिं कबीर ते हंस न बिसरे। जेहि मा मिले छुड़ावन हारा॥ बीजक शब्द ३२॥ ३-हद बेहद के अर्थ-निर्पक्ष रत्नाकर ग्रन्थ पृष्ठ २१ में देखिये। ४-पाप पुण्य का समझौता वर्णन-मनुष्य जब कुँआ कुटी बनवाने की इच्छा किया तब पेड़ कटवाने व पजावा भठ्ठा लगवाने में जिव हिंसा पाप हुआ। जब कुँआ बन गया मनुष्य पानी पीने लगे तब पुण्य हुआ फिर स्त्री पुरुष आपस में लड़ाई झगड़ा किये बस स्त्री मारे शोक सन्ताप से कुँआ में डूब मरी पशु पक्षी सर्प बीछी गिरकर डूब मरे तब फिर पाप हो गया, इसलिये पाप पुण्य है दोनों बेरी। एक सोने एक लोहे केरी॥ बीजक साखी १६ में कबीर साहेब कहे हैं कि-

तीन लोक भौ पींजरा। पाप पुण्य भो जाल॥
सकल जीव सावज भये। एक अहेरी काल॥

एक अहेरी काल कहिये कल्पना, स्त्री गुरुवा, ब्रह्म जाने सबन को फँसाया। तीन लोक कहिये तीन गुण तीन अवस्था तीन पन यामें सकल जीव परे। नौ काल के परपञ्च में फँसने से पाप पुण्य कर्म होता है इसलिये नौ काल को छोड़ देने से पाप पुण्य दोनों बेरी खतम होकर अपने आप में अचल रहैगा सो जानिये। ५-खानी बाणी का समझौता वर्णन-मोटी माया है स्त्री, धरणि तनय धन धाम। गोबर माटी शिला समाधी, खानि जाल है नाम॥ भूत प्रेत औ देवी देवा, ईश ब्रह्म ओंकार। यह सब बाणी जाल तज, जीव जमा गहु सार॥ ६-पन्द्रह त्रिगुण

के नाम व अर्थ गुरु चेला सम्वाद १५० प्रश्न में देखिये।

(४०) प्रश्न :–जिस ग्रन्थ में गुरु चेला व माता पिता का नाम न लिखे हों वह ग्रन्थ मानने योग्य नहीं ?

उत्तर :–बीजक में कबीर साहेब अपने गुरु चेला व माता-पिता का नाम नहीं लिखे सो प्रमाण पहिली रमैनी में लिखा है कि "तहिया हम तुम एकै लोहू। एकै प्राण वियापै मोहू॥ एकै जनी जना संसारा। कौन ज्ञान से भयो निनारा ?॥ कबीर साहेब के माता पिता का नाम यहाँ नहीं ठहरता है।

बीजक शब्द ११५ व साखी ३०४ व शब्द ८६ में लिखा है।

भूल मिटै ! गुरु मिलैं पारखी ! पारख देहिं लखाई॥
कहहिं कबीर भूल की औषध ! पारख सब को भाई !॥

ये मरजीवा अमृत पीवा, क्या धँसि मरसि पतार ?॥ गुरु के दया साधु की सङ्गति, निकरि आव यहि द्वार !॥

सकल कबीरा ! बोले बीरा ! अजहूँ हो हुशियारा !॥
कहहिं कबीर गुरु ! सिकली दर्पण। हरदम करहि पुकारा !॥

जड़ चेतन भेद प्रकाश ग्रन्थ में श्री काशी साहेब लिखे हैं कि "काशी दास" विनवैं प्रभु ! पारखी सन्त दयाल ! पारख गुरु मम हृदय बसो, वर यह माँगत बाल ! बीजक में श्री कबीर साहेब व श्री पूरण साहेब व श्री काशी साहेब साधु गुरु व पारख गुरु ऐसा बता गये ! पारख गुरु व साधु गुरु का नाम नहीं लिखे साधु गुरु का रहस्य रहनी चाल चलन बता गये, तो अब नाम न लिखने से बीजक ग्रन्थ जड़ चेतन भेद प्रकाश ग्रन्थ यह

मानने योग्य नहीं है ? निर्पक्ष रत्नाकर ग्रन्थ मानने योग्य नहीं है ? ये शङ्का।

उत्तर—शङ्कामाहिं सब ग्रन्थ है, समाधान नहिं कोय। समाधान सत्संग है, बूझै बिरला कोय॥

जिस २ सन्त के बुद्धि विचार में जैसा २ आया तैसा २ लिख गये अब उस ग्रन्थ में जो गुण हैं वह ले लीजिये जो आपको अवगुण जान परै वह न लीजिये परन्तु हरेक पन्थ मजहब का ग्रन्थ चालू ही रहेगा यह बन्द होने को नहीं। अपने २ स्थान मठ मकान कुटी मढ़ी वैश्य कर्म के ऊपर आचार्य रहबै करैंगे यह मिटने को नहीं, कछु विवेकी सन्तों के ऊपर आचार्य नहीं क्योंकि वह नौकाल नौ कोश नौमन सूत वैश्य कर्म व पाप पुण्य रूप जाल से पार हैं अपने आप में शान्ति हैं सो जान्यि।

(४१) प्रश्न :—गृहस्थाश्रम में छ सुख और चार दुख कौन कौन माने हैं सो दोहा में अर्थ सहित कहिये ?

उत्तर—दोहा

पुत्र भये औ पुत्र विवाहे, दीन्हे कर्ज जीते न्याये।
तात के खाये प्रात नहाये, छ सुख भये देहके पारे॥१॥

अर्थ—पुत्र पैदा होने पर और पुत्र का विवाह होने पर दो सुख यह हुआ। किसी को कर्ज दे दिये तब छुट्टी पाए न्याय पञ्चायत या अदालत में जीत गये दो सुख यह जानिए। शीत गर्म भोजन करना और प्रातःकाल का स्नान करना यह छ सुख देह के पाए हो गए सो जानिए।

वैका दण्ड पुत्र का शोक, नित उठि पन्थ चलै जे रोज।
आधी उमिर में मरिगे नारि। बिन आगी पानी जरिगे ई चारि।

अर्थ—वैका दण्ड कहिए वैश्य कर्म खेती व्यापार में घाटा हो गया या तिहाई फसल पाथर पानी सूखा से मार गया तो मनुष्य भूखों मरते हैं एक दण्ड यह हुआ और पुत्र शोक में राजा दशरथ व अन्धी अन्धा मरे यह दूसरा दुख हुआ। और नौकरी करने वाले मनुष्य को दस कोस सुइ रोज चलना है जाड़ा गर्मी बरसात में यह तीसरा दुःख हुआ और आधी उमिर में स्त्री मर गई तो अब वृद्धा अवस्था में कौन भोजन बनावे खिलावे सेवा सत्कार करै यह चार दुख में मनुष्य व्याकुल होकर बिना आगी पानी के जरते हैं।

चौपाई—गुड़ गेहूँ गोरस घर जाके। तृण समान हैं पहुना ताके॥

जिभ्या बड़ी है बावरी, फाँदत घुमै पगार।
अपना बैठी अन्दर कोठरी, जूता खाय कपार॥
विप्र टहलुवा चोर धन, ओ चिटियन क बाढ़।
याहू से धन न घटै, तब किहौ बड़न से राढ़॥

अर्थ—विप्र कहिये ब्राह्मण होकर वैश्य कर्म पाप पुण्य कर्म नहीं करैगा जीभ लिङ्ग को वश में करके नौगुण सहित संसार में विचरने भ्रमण करने से शोभा को पावैगा जैसे तुलसी दास कबीर साहेब आदि ऐसे ब्राह्मणों से गृहस्थ महन्तों को टहलुवा या नौकर नहीं रखना चाहिये और चोरी करके धन अपने खर्च व दूसरे के सेवा में नहीं लगाना चाहिये। अधिक पुत्र पुत्री

पैदा नहीं करना चाहिये। हरिश्चन्द्र राजा सतयुग में एक पुत्र रामचन्द्र राजा त्रेता युग में दो पुत्र पैदा किये इसी प्रकार आज कांग्रेस गौरमिन्ट दो या तीन बच्चे से अधिक आर्डर नहीं देता है चौथे बड़े पुरुषों से बैर झगड़ा नहीं करना चाहिये जैसे रावण को राम से बैर करने से लङ्का दहन हुआ ये अर्थ। और काम्‌ दाम्‌ बदलू को मनुष्य धर्म भक्ती पुण्य माने बैठे हैं इसलिये जन्म मरण गर्भ वास का दुःख छूटता नहीं। जैसे दुलहा बन के कन्या दान लिये तब कन्या दान दिये लोटा थाली आदि बर्तन अपना पहिले दान लिये पाँव पुजाये तब दूसरे को लोटा थाली दान दिये पाँव पूजे, सौ घर खाए सौ घर खिलाए पाँच रूपया दैजी लिए तब पाँच रूपया दैजी दिए। इसी प्रकार वैश्य कर्म करने वाले महन्त अपने कुटी मढ़ी पर पक्षपात से किसी को शक्कर की शरबत पिलाए किसी महन्त को राब की शरबत पिलाए किसी महन्त को बारह रुपया बिदाई दिए किसी महन्त को बारह आने बिदाई दिए यह पक्षा पक्षी के कारणे सब जग रहा भुलान को गुरु मत बनावो इनके कुटी मढ़ी पर दो काम अच्छा होता है एक तो कुटी मढ़ी पर सौरी यानी बाल बच्चे पैदा नहीं होते दूसरे बाणी जाल नहीं मानते इतना ही अच्छा है और यह सब कर्म बदला है (देखौ हूँड़ की चाँपी मूड़) आज परोसिन मोरे। तब भोरे नाचौं तोरे॥

प्रमाण बीजक शब्द ६१ में

कर्म फाँस यम जाल पसारा। जस धीमर मछरी गहि

मारा ॥ राम बिना नर! होइहैं कैसा? बाट माँझ गोबरौरा जैसा! ॥ कहहिं कबीर पाछे पछितइहौ! यह घर से जब वा घर जइहौ!" एक मनुष्य एक खुराक भोजन खा कर घर फूँकता है यह पाप कर्म हुआ जानिए। दूसरा मनुष्य एक खुराक भोजन खा कर किसी का घर छाय देता है यह पुण्य कर्म हुआ जानिए। तीसरा मनुष्य एक खुराक भोजन खा कर यह पाप पुण्य रूपी कर्म बन्द कर के भजन करता है यानी नौ काल बैश्य कर्म से रहित हो निज स्वरूप पर ठहरता है और देश बिदेश में बिचर कर और जीवों को शिक्षा उपदेश करके भूल भ्रम मानन्दी छोड़ाता है यानी नौ काल के बन्धन पर खाय कर बैश्य कर्म को छोड़ाय कर पाप पुण्य रूपी जाल से मुक्त करता है तब यह जीव अपने स्वरूप पर सदा के लिए अचल शान्ति रहता है यही कर्म के रेख पर मेख बिरले सन्त मारते हैं सो जानिए। इसी का नाम निर्बन्ध परोपकार धर्म भक्ती निर्पक्ष न्याय जानिए। कबीर साहेब रहनी रूपी रास्ता पकड़े जा रहे हैं उनके पीछे चलने वाले आचार्य महन्त कर्म काट कर रहनी रूपी रास्ता छोड़कर कोई कुटी मढ़ी खेत जमीन अपने नाम लिखवाता है कोई गाय भैंस सायकिल गाड़ी बैल खरीदने जा रहा है कोई बैंक में रुपया जमा करने जा रहा है कोई सूद ब्याज वसूल करने जा रहा है कोई अदालत लड़ने झूठ बोलने मुकद्दमा करने जा रहा है कोई पेड़ कटाने पजावा फुकवाने कुटी मढ़ी कुँआ बनवाने जा रहा है कोई मेला भण्डारा करनेके

लिये गाँव २ लकड़ी बाँस अन्न रुपया आदि माँगने जा रहा है कोई केराया भाड़ा पर देने के लिये मकान बनवा रहा है कोई कुटी मढ़ी पर डाँका पड़ने पर डाकुवों को बिना देखे फँसाने जा रहा है कोई बीजक पढ़ पढ़ा के साधुवों को फलाँ २ कुटी मढ़ी पर रहने के लिये बाँध रहा है ये बन्धन देने वाले महन्त को बन्दी छोर कैसे कहें ? ये वैश्य कर्म नौकाल में फँसने से गुरु सीढ़ी से उतरे हुये हैं इनको गुरु बनाने से पाप पुण्य रूपी जाल से कैसे छोड़ावेंगे ? इसलिये गुरु जान समझ कर करना चाहिए। जैसे गादर बैल दाना खरी खाय कर घर से कुछ दूर खेत में गया वहाँ बैठ गया केतनों मारो पीटो हल में चलता नहीं इसी प्रकार मनुष्य वही धन धाम जमीन छोड़कर साधू हो गए फिर कुछ दूर चल कर कुटी मढ़ी बना कर वही वैश्य कर्म का परपञ्च रच कर गादर बैल ऐसा बैठ गए अब इन्हीं गादर बैल गुरुवा को बुलाकर मेला भण्डारा करते हैं और जो कबीर साहेब का पीछा पकड़े चल रहा है उनसे बैर करते हैं यानी बन्दगी तक नहीं करते हैं। गादर बैल गुरुवा लोग कहते हैं कि ऐसे सन्त हमारे भण्डारा में कुटी मढ़ी पर आवेंगे तो हमारे चेला को शिक्षा उपदेश करके बरबाद कर देंगे, तब हमको दस सेर चावल दस रुपया जो चेला लोग देते रहे वह भी नहीं देंगे वह पक्षपात में काहे पड़ेंगे वही दस सेर चावल दस रुपया अपने घर संतों को बुला कर खिला पिला देगा और अपने घर पर सन्तों का सत्सङ्ग सेवा दर्शन लाभ उठावेंगे हमारे कुटी मढ़ी पर

किसी को बारह रुपया बिदाई दिया किसी को बारह आना दिया किसी को राब की शरबत पिलाया किसी को शक्कर का शरबत पिलाया ऐसे पक्षपात में चेला लोग काहे को पड़ने आवेंगे ? इसी पक्षपात के बारे में कबीर साहेब बारह रमैनी बीजक में कहे हैं कि-"छाड़ि देहु नर झेलिक झेला। बूड़े दोऊ गुरु औ चेला ॥"

टीका-कबीर साहेब कह रहे हैं कि हे नर जीव तुम नौ काल नौ कोश नौ मन सूत वैश्य कर्म पाप पुण्य रूपी जाल में फँस कर गर्भ वास का दुःख गुरु चेला दोनों क्यों झेल रहे हो धन धाम जमीन आदिक का भार माथे धरे जन्म मरण गर्भ वास का दुख क्यों झेलते हो सकल की आशा छोड़ो, अब मनुष्य तन में आये हो चेतो मोह रूपी निद्रा में मत सोवो ! अपने स्वरूप पर शान्ति अचल होवो । ये अर्थ ॥

(४२) प्रश्न :-माता के गर्भ से पुत्र जब उत्पन्न होता है तब पिता को कौन कौन दुःख देता है ?

उत्तर-दोहा

जन्मत ही दारा हरयो, ज्वान भये धन लीन ।
मुये लुकेठा हाथ लिहे, कहो पुत्र कौन सुख दीन ॥

अर्थ-जब माता के गर्भ से बालक पैदा भया तब माता अपने पुत्र के सेवा सत्कार में लग गई अब अपने पुरुष की सेवा सत्कार करना छूट गया । जब बालक ज्वान भया तब अपने पिता का धन भी ले लिया और अपना मालिक बन गया जब पिता मर गये तब चिता पर अपने पिता के सिर पर बाँस में अग्नि का

लुकेठा लिहे मारते हैं यानि अग्नि दाह करते हैं कहो भाई लोगों पुत्र पैदा होने से कौन सुख दिया। जब माता के गर्भ में बालक था तब माता को नौ महीना गर्भ का भार ढोना पड़ा और डाकें उछार करै डाक्टरी कराने में कहीं लड़का ही मर गया कहीं माता ही मर गई। पुत्र के बीमारी में ओझाई सोखाई नौताई बैदाई में एक बेटा नौ घेंटा देवता को चढ़ाते हैं यानी बकरी भेड़ा मुर्गी सूकर आदि का जान हतन करते हैं और बैदाई कराने में भी तमाम रुपया खर्च करते हैं और पुत्र न पैदा होय तो भी दुख मर जाय तो दुख परदेश भाग जाय बाँट बखरा करके अलग हो जाय तो दुख माता पिता को पुत्र मारै पीटै गाली देय तो दुख यह नाना दुख होने से कबीर साहेब बीजक शब्द १०७ में कहे हैं कि—

धन दारा सुत राज काज हित माथे भार गह्यो।
खसमहिं छाड़ि बिषय रङ्ग रात्यो पाप के बीज बोयो॥

और बीजक कहरा ८ में भी कहे हैं कि क्षेम-कुशल औ सही सलामत! कहहु कौन को दीन्हा हो? आवत-जात दोऊ विधि लूटे, सर्व तङ्ग हरि लीन्हा हो॥

अर्थ—जब अपना २ कर्म ही सब को भोग करना है तब क्षेम कुशल और सही सलामत कौन किसको दे सकता है। जन्मते मरते दुःख और बालक के जब दाँत निकलता है तब भी पेट भरता है और दाँत जब गिरने लगता है तब भी दुख होता है जैसे कनक कामिनी के प्राप्त समय भी दुःख और जब

कनक कामिनी चली गई तब भी दुख यह संयोग रूप माया आवत जात दोऊ विधि से लूट रही है और दस गुण ज्ञान विचार आदि सर्वस हर लेती है इसलिये वस्तु अवस्तु, काल अकाल, पाप पुण्य, हद बेहद आदि जोड़ा का योग न हो तो जीव नौ काल से रहित अपने आप में सदा के लिये अचल शान्ति रहेगा सो जानिये। स्त्री भोग में दस गुण के नाश रहते हैं सो प्रमाण।

दोहा वैराग्य शतक पूरण साहेब कृत

ज्ञान हरै क्रिया हरै, हरै, बल बीर्य लाज।
यश कीर्ति लक्ष्मी हरै, तप औ मुक्ति समाज॥

महात्मा गाँधी के रहते हुये पण्डित जवाहर लाल की स्त्री मर गई तब बहुत से राजा धनाड्य अपनी लड़की की शादी करने के लिये आये और कहा कि अपनी शादी कर लीजिये तब पण्डित जी बोले, किसलिये अपनी शादी करूँ सो कहो? तब धनाड्य राजा बोले कि एक लड़का पैदा हो जाएगा तो आपका धन सम्पत्ति सब लेगा। तब पण्डित जवाहर लाल बोले कि ४८ करोड़ की आबादी हिन्दुस्तान की है इतने लड़के कम हैं? इन्हीं के सेवा में यह धन लगेगा तब धनाड्य राजा चुप रहे ऐसा परोपकार देश के सेवा में तन मन धन खर्च करने से दुःख का नाश होता है और तब से ब्रह्मचर्य धारण कर विवाह नहीं किये अपने नौकरी में से भी अनाथ लड़कों को भोजन वस्त्र विद्या आदि का दान करते ही रहे। यश, कीर्ति, लक्ष्मी, शूरता,

उदारता, दूसरे के मन का पलटावना यह षट ऐश्वर्य महात्मा गांधी पण्डित जवाहर लाल में होने से परोपकार का काम करने से इनका नाम भी देश विदेश में चालू ही रहैगा सो जानिये।

(४३) प्रश्न :—स्त्री का दोहा में।

दुइ दिन में दुइ पाख में, दुई महीना माँहिं।
यही छ के अर्थ बताओ, तब पैठो घर माँहिं॥

उत्तर—पुरुष का—दृष्टान्त—एक पण्डित काशी जी विद्या पढ़ने गये वेद विद्या पढ़ कर अपने घर आये विवाह किये स्त्री के पास रात को सोने गये। स्त्री पूछती है कि दुइ दिन में, दुइ पाख में, दुइ महीना में, यह छ प्रश्नों का उत्तर दीजिये तब हमारे पास रात को रह सकते हो अन्यथा नहीं ? पण्डित जी इसका उत्तर न दे सके तब बड़े अफ़सोस में पड़े और अपने गुरु से छ प्रश्नों का उत्तर पूछने काशी को चले। रास्ते में एक पण्डिताइन के घर रह गये पण्डिताइन पूछती हैं कि तुमको किस बात का सोच खटका है बहुत सूखे देख पड़ते हो क्या कारण है बताओ ? तब पण्डित जी बोले कि हम काशी जी बेद विद्या पढ़े अपने घर आये ब्याह किये स्त्री के पास रहने रात को गये स्त्री ने यही छ प्रश्नों का उत्तर पूछी हम उत्तर न दे सके, तब स्त्री बोली कि इन छ प्रश्नों का उत्तर देवोगे तभी हमारे पास रात को रह सकते हो अन्यथा नहीं। तब पण्डिताइन ने कही कि तुम भोजन बनावो खाओ हम छ प्रश्नों का उत्तर बताऊँगी तुम्हे काशी नहीं जाना पड़ैगा। पण्डित जी भोजन

खाये रात भर रहे जब सुबह घर चलने लगे तब पण्डिताइन कहती हैं कि दिन में सुबह शाम बाहर दिसा मैदान जाना चाहिये शुद्ध वायु में टहलने से तन्दुरुस्ती ठीक रहती है यही दुइ दिन में जानिये। और अठयें दिन हफ़ता में स्त्री के पास जाना चाहिये रोजाना स्त्री भोग करने से कमजोरी और रोग से परेशान रहोगे यही पाख में दुइ जानिये और महीना में दो एकादशी ब्रत भूखा रहना चाहिये जब एकादशी के दिन अन्न नहीं खाओगे तब पेट में जो कुछ कचड़ा कूड़ा बचा हुआ है वह जठराग्नि के द्वारा भस्म करके शुद्ध साफ़ कोठा हो जायगा और दूसरे दिन अन्न खाने से बहुत जल्द भोजन पचैगा यह मनुष्य के तन्दुरुस्ती को ठीक करती है और दो खुराक अन्न भूखा रहने से जो बचैगा वह अन्न किसी साधु अभ्यागत भूखा दूखा को खिला देने से किसी धनाढ्य के घर जन्म हो जायगा और साधन सत्सङ्ग त्याग से मुक्त भी हो सकते हो यानी दस इन्द्री ग्यारहवाँ मन को वश करके निज स्वरूप पर ठहरने से मुक्त भी हो सकते हो सो जानिये।

दोहा—दतुइन मोटी ताजी करै, दूर दिशा को जाय।
हफ़ते माही रत करै, तेहि घर बैद न जाय॥

यह कनिष्ट गृहस्थों को सुधारने के लिये सुगम सीढ़ी बताई गई है सो जानिये। स्त्री ने पंडित जी से जब यह छः प्रश्न का उत्तर पाई तब स्त्री कहती है कि अब आज के तारीख़ से रोजाना हमारे पास रात को सोने मत आना। मूरख को

सारीरइन, बलम को एकै घरी। स्त्री में अधिक नेह लगाने से गर्भ वास का आना जाना छूटने को नहीं सो भी जानिये। एक बार भोगे भगद्वाश। कोटि जनम लै चोर हमारा ॥

भग भोगे भग ऊपजे, भग से बचा न कोय।

कहहिं कबीर भग से बचै, भक्त कहावे सोय ॥

चौपाई रामायण आरण्य काण्ड दोहा ४। छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ तेहिं सब को खोटी ॥ जिस स्त्री भोग में प्रथम सुख माने हैं उसी स्त्री भोग के पीछे महान् दुःख को लाद लेते हैं। अगर स्त्री भोग में प्रथम दुख मानकर त्याग देवें तो महान सुख को प्राप्त हो जावें, जैसे घर के बनाने में प्रथम दुख होता है पीछे को सुख करते हैं सो जानिये। यह सुख दुख रूपी लादी झूठ को गदहा असन्त लादते हैं। धर्म अधर्म रूपी लादी भूठ को सिद्ध रूपी सन्त नहीं लादते सो भी जानिये। उत्तम गृहस्थ ब्रह्मचर्य के लक्षण व्याख्या सत्यासत्य निर्णय ग्रन्थ पृष्ठ ६१ में देखिये।

(४४) प्रश्न :—माया काया किसे कहते हैं?

उत्तर—रामायण आरण्य काण्ड दोहा २२ में रामजी लक्ष्मण से कहते हैं कि—गो गोचर जहँ लग मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई ॥ कबीर साहेब (बीजक कहरा २) में कहे हैं कि "दुइ चकरी जनि दरर पसारहु! तब पैहो ठीक ठौरा हो!" राग द्वेष, पाप पुण्य, शुभ अशुभ, हद बेहद, बोल अबोल, काल, अकाल, धर्म अधर्म, स्वारथ परमार्थ, वस्तु अवस्तु यही

अनेक जोड़ा को दुइ चकरी कहते हैं यह अनेक जोड़ा को माया भी कहते हैं। इसलिये इन दोनों में फँसने से असन्त नाम पड़ा, और इन दोनों से रहित होने का नाम सन्त है। मिलहिं सन्त बचन दुइ कहिये। मिलहिं असन्त मौन होय रहिये। काल-अकाल परलय नहीं, तहाँ सन्त बिरले जाहिं॥ बीजक रमैनी ७० व हिण्डोल ? ॥ कनक कामिनी को कबीर साहेब आगि बताया है, परन्तु यह दोनों इस पृथ्वी पर हमेशा रहा और रहेगा इसलिये कबीर साहेब कहते हैं कि इन दोनों का संयोग न होने दे तो माया और आगि कहाँ, तब तो जीव मुक्त ही है! अफ़ीम में नशा नहीं, न मनुष्य में नशा है, दोनों के संयोग में नशा है! स्त्री में बिषय बिष नहीं, न पुरुष में बिषय विष है। दोनों के संयोग में बिषय बिष है इसलिये संयोगे ही का नाम माया काया है, संयोग न हो तो बोध सहित माया काया से जीव मुक्त अपने आप में रहैगा। संयोगे का गुण रबै, बिजोगे का गुण जाय। जिभ्या स्वारथ कारणे, नर कीन्हें बहुत उपाय॥ बीजक रमैनी ४०॥

(४५) प्रश्न :—बशिष्ठ गुरु के आज्ञा से राम जो शूद्र को तप करते हुए बाण से मारा वह शूद्र मर गया। तब ब्राह्मण का पुत्र जिन्दा क्यों हो गया ?

प्रमाण रामायण उत्तर काण्ड

उत्तर :—सज्जनों विचार करो कि शवरी पासिन, सुपच भक्त डोम नाभा जी भङ्गी, पारासर डोम, वेदव्यासादि यह

सब शूद्र ही थे तब इनके तप करने से किसी ब्राह्मण का पुत्र नहीं मरा न किसी का सर काटा गया न किसी को रोक टोक हुआ कि शूद्र तप न करैं, न वेद पढ़ैं। यह सब बातों से पुराण रामायण आदि ग्रन्थों में बहुत से ढोंग अमिक अयथार्थ बातें लिखी पाई जाती है। इन सब ऋषी मुनियों को पारख पद प्राप्त न था पाप पुण्य शुभाशुभ कर्म में फँसाय कर भोले भाले नर जीवों को चारो खानी में भ्रमाया और अपना भी चारो खानी में भ्रमते चले आते हैं इसलिए पारखी सन्तों के सत्सङ्ग में बैठ कर उसी रामायण विश्राम सागर आदि ग्रन्थ का प्रमाण यथार्थ ले लीजिये और पारखी सन्तों के बनाये हुये ग्रन्थ पढ़कर रहस्य धारण करके भूल भ्रम भवसागर से पार होकर अपने आप में शान्ति सदा के लिये हो जाइये! बीजक शब्द ३२ में कबीर साहेब खुद कह गये कि "बेद कितेब दोऊ फन्द पसारा। तेहि फन्दे परु आप बिचारा" ॥ कहहिं कबीर ते हंस न बिसरे, जेहिमा मिले छोड़ावन हारा ॥ शूद्र के तप करने से ब्राह्मण का पुत्र मरता है तो ब्राह्मण के तप करने से शूद्र का पुत्र मरना चाहिये ? ये शङ्का ? अगर नहीं मरता है तो ब्राह्मण में कोई तप तेज नहीं ठहरता है। और वशिष्ट के बताने से राम ने शूद्र का मूड़ काटा तो विचार रहित अनीति ही किया सो राम और वशिष्ट जी को बदला ही देना पड़ेगा ऐसा जानिये।

४६—(भजन)

अवधू भेष से भेद है न्यारा ॥ टेक ॥ दुनियाँ में मानुष

बहुतेरे, नाना लगी बजारा। रतन परखो है कोई बिरला, सो मानुष है न्यारा ॥ अवधू ॥ १ ॥ ज्येस बर्षा के जीव जन्तु हैं, तामें सर्प अपारा। सुन्दर मणि बिरले के होई, सो विषधर है न्यारा ॥ अवधू ॥ २ ॥ सब कदली मिल एक बरण है, पत्र फूल फल डारा। है कपूर बिरले के माहीं, सो कदली है न्यारा ॥ अवधू ॥ ३ ॥ सब कुन्जर मिल एक बरण हैं, लादि मरैं बहु भारा। गज मुक्ता बिरले के होई; सो कुन्जर है न्यारा ॥ अवधू ॥ ४ ॥ सबै अस्त्री असतर बान्धे, साहेब रूप सँवारा। आन पड़ैं कोई बिरले शूरा, धर दिये शीश१ उतारा ॥ अवधू ॥ ५ ॥ सब महलों में महल महरमी, बसै बिबेकी प्यारा। जाग्रत जीव सदा सतसंगी, कहहिं कबीर पुकारा ॥ अवधू ॥ ६ ॥

बीजक हिण्डोल १ व साखी २०४ ॥

काल अकाल परलय नहीं तहाँ सन्त बिरले जाहिं ॥ जहाँ बोल तहाँ अक्षर आया, जहाँ अक्षर तहाँ मनहिं दृढ़ाया। बोल अबोल एक होय जाई, जिन्ह यह लखा सो बिरला होई ॥

टीका-१-नौ काल से रहित नौ गुण सहित निज स्वरूप स्थित पुरुष को शूर बीर कहते हैं और बिरले सन्त नौकाल को छोड़ते हैं वही शीश का उतारना समझिये ॥

४७—(राग माड़ ग़ज़ल—ताल लावनी)

वेदान्ती खूब बने सरदार, नयन के नेत्र फोड़ाने वाले ॥ टेक ॥ किये अद्वैत ब्रह्म सिद्धान्त, ईश जीव जग रोपे भ्रान्त। जग दुःख छोड़ाय करते शान्ति, अनिर्वाच्य दृढ़ाने

वाले ॥ १ ॥ सब का जानन हार है जीव, ताके ऊपर बतावें पीव । आखिर कहते जीव न शीव, निर्गुण निराकार बताने वाले ॥ २ ॥ बनते अकर्ता अभोक्ता आप, इन्द्री प्रकृति करे पाप । ब्रह्म बने हैं सब के बाप, अन्याय धर्म चलाने वाले ॥ ३ ॥ बेद स्मृति बजावे डङ्का, नास्तिक माने करे शङ्का। आस्तीक आप लुटे जग लङ्का, व्यापक बन चौरासी भ्रमाने वाले ॥ ४ ॥ स्व प्रकाश बने चिदानन्द, तत्त्व भाषे त्रिती आनन्द । वाणी जाल में हो गये बन्ध, महा अन्ध पर शूर कहाने वाले ॥ ५ ॥ काशी कहैं सुनो नर लोगों, भ्रमिक गुरु तुरत ही त्यागो । गुरु सन्त पारखी खोजो, परखाय सब जाल छोड़ाने वाले ॥ ६ ॥

४८— (राग माड़ ग़ज़ल—ताल लावनी)

मन है रेल बुद्धि का अञ्जन, कोयला कर्म चेतावो जी । चित्त शुद्धि की आग बनाके, विवेक भाप से चलावो जी ॥ टेक ॥ सीटी सत्सङ्ग जोर से उठी, दया की घण्टी बजावो जो ॥ परख टिकट सतगुरु से लीजे, शान्ती डब्बे में बैठो जी ॥ १ ॥ सत विचार से रेल चलाना, गुरु गम झण्डी बतावो जी । महा मोह की बाते बहा देव, स्टेशन लालच त्यागो जी ॥ २ ॥ मास्तर आचार्य झूठ मत ठाने, सिपाई कर्तो दृढ़ावो जी । अध्यास रहित धक्के से लगाना, जीवन्मुक्त सुख पावोजी ॥३॥ काशी कहैं रेल की युक्ती, पारखी गुरु से जच लीजो जी । साहेब कबीर जगत गुरु पूरे, आवागवन रेल मिटावो जी ॥ ४ ॥

४९—(भजन)

करबौ न भजनिया मनुवाँ, फिर पाछे पछितावोगे ॥टेक॥ लख चौरासी भरमि के आयो, धन्य भागि मानुष तन पायो। तामें कछु न किहौ कमाई, यहि अवसर नहिं पावोगे ॥ करबौ ॥ १ ॥ माता पिता दारा सुत कारन, ठगि २ द्रब्य कमावोगे। जेहि दिन प्राण निकरि गये तनु से, हथवा पसारे चले जावोगे ॥ करबौ ॥ २ ॥ न गुरु भक्ति न साधु की सेवा, नहिं सत्सङ्गति कीन्ह्यो है। जब जमराज बाँस गहि मरिहैं, नयन नीर भरि रोवोगे ॥ करबौ ॥ ३ ॥ बेश्या के संग रइन गँवायो, ब्याही न मन भायो है। ऐसन रतन अमोल गँवायो, मथवा पे हथवा धरि के रोवोगे ॥ करबौ ॥ ४ ॥ सत्य नाम[१] गहु सत्य नाम गहु, जासे होय निरुवार। कहहिं कबीर मानुष के देहीं, बेर बेर नहिं पावोगे ॥ करबौ ॥ ५ ॥

टीका १—सत्य कहिये नौकाल से रहित निज स्वरूप बोध को गहो तभी कल्याण है।

५०—(भजन)

सब दिन जात न एक समाना ॥ टेक ॥ एक दिन राजा हरिश्चन्द्र के, कञ्चन भरा खजाना। एक दिन भरैं डोम घर पानी, मरघट हनैं निशाना ॥ सब० ॥ १ ॥ एक दिन राजा रामचन्द्र जी, चढ़े जात बिमाना। एक दिन उनको बनोबास है, राजा दशरथ तजो प्राना ॥ सब ॥ २ ॥ एक दिन अर्जुन महाभारत में, जीतिन इन्द्र समाना। एक दिन भिल्लिन लुटैं

गोपियन, उहै अर्जुन उहै बाना ॥ सब० ॥ ३ ॥ एक दिन बालक खेलैं गोद में, एक दिन भइन जवाना । एक दिन चिता जरै मरघट पर, धुवाँ उड़ असमाना ॥ सब० ॥ ४ ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, ई पद है निरबाना ॥ जो यह पद को गाय बिचारै, सोई सन्त सुजाना ॥ सब० ॥ ५ ॥

५१—(भजन)

निगुणा तुम्हरे अकिलिया पर, परि गे पथरिया ॥ टेक ॥ जैसे जीव अपन कर जान्यो, वैसे भेंड़ बकरिया । तुम्हरे दया तनिक न आवे, गल बिचे हन्यो कटरिया ॥ निगुणा ॥ १ ॥ एक पुत्र तुम्हरो मरि गैल्यो फोरी डारयो खोपरिया । कोटि जीव हिंसा कर डारयो, ताहीं के नाहीं खबरिया ॥ निगुणा ॥ २ ॥ मानुष चोला पाय के बन्दे, खायो माँस मछरिया । जब जम राजा बाँस गहि मारैं, मुहवाँ से नाहीं खुलै बोकरिया ॥ निगुणा ॥ ३ ॥ जीव कै बदला देना परिहैं, सुनि लो मर्द मेहरिया । कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, दिनवाँ के छाई है अन्धेरिया ॥ निगुणा ॥ ४ ॥

५२—कीर्तन (अनसुइया जी का)

माता अनसुइया ने डाल दियो पालना, झूल रहे तीनों देव बन करके लालना ॥टेक॥ मारे खुशी के फूली न समाती, गोद में लेत कभी पालना झुलाती ॥ आज मेरे भाग को कौन करे सराहना ॥ झूल रहे० ॥ १ ॥ स्वर्ग लोक छोड़ मृत्यु लोक में पधारे, ऋषियों की कुटियों में करते गुजारे । सती के सामने

ष्ट भई कामना ॥ झूल रहे० ॥ २ ॥ ताहि समय नारद मुनि आये, ताक ताक देख मन में मुसकाये । भारत की देवियों से आज पड़ा सामना ॥ झूल रहे० ॥ ३ ॥ गरुड़पाल कोऊ सृष्टि रचाओ, कोऊ बैठ नांदिया पै डमरू बजाओ । रोय शंय अपने फुलाऊँ यहाँ गालना ॥ झूल रहे० ॥ ४ ॥ 'विज्ञान' दृष्टि से अत्री निहारे, बाल रूप देख देख नयन नीर ढारे । ऐसे फँसे तीन देव पूँछे कोई हाल ना ॥ झूल रहे ॥५॥

५३—(भजन चेतावनी)

भँवरा[1] भरम भुलानेव हो, फुलवन के बास ॥ टेक ॥ छिया बुन्द की काया हो तिस में लिहा हो बास । लख चौरासी भरमेव हो किहौ बुद्धि बिनास ॥ भँवरा ॥ २ ॥ तबहूँ न तृषा बुझानी हो रटि मरचो है प्यास । पाप पुण्य के कर्मन से अइहौ गर्भ निवास ॥ भँवरा ॥ २ ॥ ज्यस सपने की सम्पत्ति हो किहौ भोग बिलास । जागे हाथ न लागे हो जिया होय गे उदास ॥ भँवरा ॥३॥ अलल पक्ष कै चेटुका उड़ि चले आकाश । हमै ऐसा हंसा होतवे हो करतेव सुख बास ॥ भँवरा ॥ ४ ॥ ज्यस बाजीगर बान्दर हो नाये गले फाँस । द्वारेन द्वार नचावे हो राखे निज पास ॥ भँवरा ॥ ५ ॥ मृगा के नाभि कस्तूरी हो महँकै उसके पास । वह मूरख चीन्हे नहीं ढूँढे बन घास ॥ भँवरा ॥ ६ ॥ ज्यस समेर कै सुगना हो लाली देखि लुभास । ठोड़री फूटि सुवा उड़ि गयो हो पंछी भयो निरास ॥ भँवरा ॥७॥ निः अक्षर[2] कै माला हो फेरो भरि स्वाँस । साहेब कबीर कै

दीहल हो गावें धर्मदास ॥ भँवरा ॥ ८ ॥

टीका-१-यह जीव भँवरा रूप होकर नौकाल नौ कोश नौ मन सूत वैश्य कर्म पाप पुण्य यही फूल के बास कहिये चाहना में भूलकर चारो खानि में भ्रमता है। २-छर कहिये देह अक्षर कहिये बोल आवाज। निः अच्छर कहिये शून्य अबोल अवस्तु यही तीन में मत फँसो इनको गुरुवा लोगन के पास फेर दो वापस कर दो तब निज स्वरूप असली निराधार घर ठहरि के आवागवन से रहित होवोगे ऐसा जानिये।

५४-(भजन)

जगतिया सारी भूल गई ढूँढ़े घर न पाया ॥ टेक ॥ उसी भूल में ब्रह्मा भूले, जिन यह बेद बनाया। बेद बाँचते सब जग थकि गये, मरम भेद न पाया ॥ जगतिया ॥ १ ॥ उसी भूल में बिष्णू भूले, जिन यह धरम चलाया। माया मोह के परे जाल में, फिर चौरासी आया ॥ जगतिया ॥ २ ॥ उसी भूल में शङ्कर भूले, भिक्षुक पन्थ चलाया। झोली खप्पर लिये हाथ में, घर घर अलख जगाया ॥ जगतिया ॥ ३ ॥ उसी भूल में भूले मछन्दर, सिङ्गल दीप बसाया। भेद भाव की सार न जानी, मिथ्या जन्म गँवाया ॥ जगतिया ॥ ४ ॥ उसी भूल में भूले मुहम्मद, न्यारा मज़हब लाया। पर नारी संग फिरे भटकते, लिङ्गी मोछ कटाया ॥ जगतिया ॥ ५ ॥ उसी भूल में भूले राम जी, छुवा छूत मन लाया। कहहिं कबीर हम सबकी कथि के, सत्य मिथ्या अलगाया ॥ जगतिया ॥ ६ ॥

५५—(भजन)

कोई खोजि चलो जोगिया के अधर मढ़ी ॥ टेक ॥ तीन लोक के नेत्र के भीतर, चौथे नाम निशान खड़ी। न वहाँ थून्ही न वहाँ थम्हरा, सतगुरु सत्य बड़ेरी धरी॥ कोई ॥ १ ॥ सावाँ कोट किला बहु रंगी, बिन देखे को कच्ची गली। पच्छिम खिरकी खोलि केंवारी, दर्शन कैलो खूब अड़ी॥ कोई ॥ २ ॥ पचयें गुरु कै भेद न जाने, छठ्ठे गुरु के शरण परी। सतवाँ लोक अचल कर्तारा न वहाँ दवस न रयन घरी ॥ कोई ॥ ३ ॥ सन्तन में बादशाही पायों, डङ्का औ सितली। ज्ञान से भरें सुरति से दाग, कहो मथुरा अब तो आफत है खड़ी ॥ कोई ॥ ४ ॥

टीका :–माया सुख–गुरुआ लोग जीवों पर उपदेश करते हैं कि योगिया के अधर मढ़ी कहिये ब्रह्माण्ड में स्वाँसा चढ़ाय कर सत्य पुरुष का ध्यान धरो जिसके एक रोम में कोटि सूर्य का प्रकाश है वह त्रिगुण तीन लोक के पार चौथे लोक में ओहं सोहं शिवोऽहम यही नाम का निशान खड़ी है। पाँचवाँ गुरु कर्म योग उपासना राम २ रटने को बताये गोबर माटी तुलसी पूजने को बताये, छठवाँ गुरु सब भ्रम छोड़ाय कर एक आत्मा व्यापक बताये। सातवाँ गुरु ब्रह्म सत्य सर्व देशी अचल कर्तार बताय कर जगत की उत्पत्ति उसी ब्रह्म सत्य पुरुष से बताये और उसी मुर्दा अनुमान के भरोसे सितली कहिये सेल्ही टोपी देकर चौका में बैठकर पाँच सेर पिसान का सत्य पुरुष बनाय

कर हजारों रुपया ज्योति की बुझाई आदि में लेते हैं घिसनी कर्म वैश्य कर्म नौकाल का परपञ्च छोड़ते नहीं। यह निज स्वरूप को भूले हुये इनके ऊपर मन मथुरा का आफत खड़ी है सो इनसे दूर रहो और पारखी गुरु नौकाल से रहित नौगुण सहित निज स्वरूप स्थित पुरुष का संग करो तब भूल भ्रम मिटैगा ऐसा जानिये।

५६—(भजन)

ना हम काहू के कोई न हमारा ॥ टेक ॥ माटी के गोन्द हंस बनजारा, निकरे हंस गोन्द भये धारा१ ॥ ना हम ॥१॥ मातपिता सुत नारि कहावें, ई सब रोवें मोह के मारा ॥ ना हम ॥ २ ॥ लाद दिहिन सिर भार लकड़िया, फूँक दिहिन जैसे लाज के मारा ॥ ना हम ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर जे नौर२ को छोड़ै, ते न बहै भव धारा ॥ ना हम ॥ ४ ॥

टीका १ :—यह काया रूपी गोन्द चाहे अग्नि में जलावो चाहे पृथ्वी में गाड़ो चाहे नदी में छोड़ो मगर यह अपने २ तत्व में मिल कर धारा हो जाता है। २—नौकाल नौ कोश नौमन सूत में जो अरुझे वह भव धार कहिये गर्भ वास चौरासी को गये और जो नौकाल को छोड़ कर निज स्वरूप पर ठहरे वह आवागवन से रहित हुये ऐसा जानिये। नौ कोश के अर्थ निर्पक्ष रत्नाकर ग्रन्थ २० पृष्ठ में देखिये।

५७—(शब्द)

समय मिला निज रूप सम्हारो ॥ टेक ॥ जैसे कामी

काम विवश है, सर्बस तेहिं को हारो। करि परिश्रम सहत बहुविधि दुख, तनिक नहीं चित टारो ॥ समय ॥ १ ॥ प्रिय वियोग के मोह फाँस ज्यों, मोही बिकल रहारो। नहिं सोहात कछु जगत माहि तेहिं, दीखत सबहिं असारो ॥ समय २ ॥ लोभी धन हित कौड़ी कौड़ी, करत प्राण से प्यारो। तेहि संग्रह हित भूख प्यास तजि, नाना दुख सहत अपारो ॥ समय ॥ ३ ॥ नर तन माँहि स्ववश का साधन, यह निश्चय उर धारो। तजि सब फिक्र जिक्र करु अपनी, हर छिण निजहिं निहारो ॥ समय ॥ ४ ॥ निज स्वरूप से पृथक जहाँ लो, भास आश सब डारो। भव भक्ति सन्तन की सेवा, गुरु चरन चित वारो ॥ समय ॥ ५ ॥ जगत असार क्षणिक तन मन सब, बारम्बार बिचारो। दास निर्बन्ध सार निज रूपहि, जानि कबहुँ न बिसारो ॥ समय ॥ ६ ॥

५८-(शब्द)

कोई जानै न जानै बनै अपना ॥ टेक ॥ राज पाट धन महल बगीचा, एक दिन होयहैं सपना। अन्त समय कोई काम न अइहैं, चाहे उपाय करे कितना ॥ कोई ॥ १ ॥ निस दिन ध्यान रहे अपने को, नहिं कोई और आश धरना। जो कोई मिलै सहज मारग में, जानि जनाय सजग रहना ॥ कोई ॥ २ ॥ समय अमूल्य अल्प है भाई, तामें बहुत विघ्न अरना। अवसर पाय हाथ में अपने, चूक जाय दुख फिर सहना ॥ कोई ॥ ३ ॥ जो चाहो निर्बन्ध सहज में भवसागर दुख से तरना। तो तजि जल्द आश सब जग

की, आपहि आप जाप जपना ॥ कोई ॥ ४ ॥

५६-(भजन)

सखी नहिं पहिरब हरेरा[1] सारा बोर॥ टेक ॥ अपने गुरु से उपदेश लेबै, मान बड़ाई मर्यादा है थोर ॥ सखी ॥ १ ॥ पाँच रसिक[2] मिल जाल पसारैं, दुइ जने टटिया टारैं मोर ॥सखी॥२॥ कामिन रीझैं लोभी जूझैं, मणुवा रोवैं बींबुर फोर ॥ सखी ॥३॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, करो भजन[3] जिन्दगानी है थोर ॥ सखी ॥ ४ ॥

टीक १—बोधवान चेला अपने भक्त भाई से कह रहा है कि अब हम नौ काल, पाप पुण्य रूपी जाल, बैश्य कर्म में फँसकर हरष शोग रूप हरेरा काया शरीरा नहीं धरूँगी । यानी पाँच तत्त्व का पूतला नहीं पहिनोंगी अपने स्वरूप अविनाशी एक देशी पर शान्ति रहूँगी । २—शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध यही पाँच रसिक हैं और क्रोध प्रीति यह दुइ जने टटिया टारत हैं । ३—परोपकार सहित निष्पक्ष होकर अपने सत्य स्वरूप पर जो ठहरता है वही भजन करता है ।

६०-(भजन)

घर मा लागै थिगाई[1] बलम कसिकै टटिया बान्धो ॥टेक॥ ब्रह्मा का लैगा विष्णू का लैगा, नारद का लैगा उठाई ॥ बलम ॥ १ ॥ ध्रुव का लैगा प्रहलाद का लैगा, महादेव भागि काबेमें लुकाई ॥ बलम ॥ २ ॥ ई तो बिगौवा मृत लोकवा में आना, एकै एक लेय चबाई ॥ बलम ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, गुरु २ के चरण बचि जाई ॥ बलम ॥ ४ ॥

टीका-१-घर कहिये मनुष्य देह में, बिगाई कहिये नौ काल की चाहना बासना को, बोधवान चेला बलम रूप गुरु से कहता है कि आदि से अन्त तक पूरा वैराग्य रूप टटिया कसिकै बान्धौ तब बैश्य कर्म नौकाल से रहित निज स्वरूप पर ठहराव होगा ।

२-कबीर साहेब रहनी रूपी रास्ता पर खड़े हुये पुकार रहे हैं सन्तो उतरि आवो पारा हो । अब जो महन्त जो आचार्य कबीर साहेब का पीछा छोड़ कर गुरु सीढ़ी से उतर कर बैश्य कर्म नौकाल के परपंच में फँस गये अपने नाम कुटी मढ़ी खेत वगैरह लिखवा कर उसी में साधुवों को बाँध देते हैं तब बन्दी छोर कैसे हुये गुरु के चरण में गुरु के बचन में कहाँ हुये ? गर्भवास से इनका बचना असम्भव जानिये ।

६१—(भजन)

तोरे गठरी में लागैं चोर[१] बटोहिया का सोवो ॥ टेक पाँच पचीस तीस हैं चोरवा, यह सब कीन्हें शोर ॥ बटोहिया ॥ १ ॥ जागु सबेरा बाट अन्धेरा, फिर न लागै जोर ॥ बटो-हिया ॥ २ ॥ भवसागर[२] यक नदी बहत है, बिन उतरे डारैं बोर ॥ बटोहिया ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, जागत[३] कीजै सोर ॥ बटोहिया ॥ ४ ॥

टीका-१-मन रूपी चोर के तीस चोर का नाम व्याख्या सत्यासत्य निर्णय ग्रन्थ १३३ पृष्ठ में देखिये । २-मनुष्य के अन्दर जो मूल भ्रम है यही भव सागर नदी जानिये । ३-

जानिये तबहि जीव जग जागा। जब सब विषय विलास विरागा॥ रामायण अयोध्या काण्ड दोहा ८८॥ जो महन्त आचार्य नौकाल व पाप पुण्य रूपी जाल वैश्य कर्म में न फँसै वही महन्त स्वरूप स्थित में नित्य जागते हैं सो भी जानिये।

६२—(भजन)

दम दै दै मारै दगा बाज ठगवा॥ टेक॥ ब्रह्मा को मारिस विष्णु का मारिस शङ्कर का मारिस खोलि खोलि भगवा॥ दम॥१॥ ध्रुव का मारिस प्रहलाद का मारिस, नीमी ऋषि का मारिस जङ्गल के बिचवा॥ दम॥२॥ शृङ्गी ऋषि का अस क मारिस, पारासर का मारिस झाऊ के ओटवा॥ दम॥३॥ कहहिं कबीर निर्पक्ष[1] न्याय गहि, फिर न सहो दुई[2] चोटवा॥ दम॥४॥

टीका-१-निर्पक्ष गुरु के लक्षण निर्पक्ष रत्नाकर ग्रन्थ टाइटिल पहिले पन्ना में देखिये। २-जन्म मरण यही दुइ दुख का चोट सहते चले आते हैं।

६३—(भजन)

लूट गई धन बारी बलम बिन॥ टेक॥ सुन्दर महल फाटक बिन सूना, एक मून्दा नौ उघारी॥ बलम॥१॥ नइहर में गुन कुछ न सीख्यों, ससुरे कै डर भारी॥ बलम॥२॥ बिन दुधवा गोरस कोई न बतावे, माखन खाय बिलारी॥ बलम॥३॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, चेत लेव नर नारी॥ बलम॥४॥

टीका-१-बलम कहिये एक पारख बिना धन बारी जीव

नौ काल में फँसे लूटे ग े ॥ टेक ॥ माया सुख-गुरुवा लोग कहते हैं कि सुन्दर महल काया मनुष्य का मिला एक भगवान का भजन यही फाटक बिना सूना है। तिस में ब्रह्माण्ड के ऊपर तालू जहाँ पर तेल लड़कों के ठोंका जाता है वह दसवाँ द्वार मून्दा है और (दो आँख दो कान दो नाक सुर एक मुख गुदा और लिंग) यह नौ द्वार उघार यानी खुले हैं ॥ १ ॥ नइहर में माता पिता के यहाँ गुन कुछ नहीं सीखा बैकुण्ठ में पिता परमात्मा ससुर का डर बहुत भारी है ना मालूम कौन जगह अण्डज आदि खानी में भेज देवें वहाँ कच्चा प्राण निकालेंगे यह दुख बहुत भारी है ॥ २ ॥ गुरु मुख दुधवा कहिये ईश्वर ब्रह्म। गोरस कहिये जगत। माखन कहिये ज्ञान। बिलारी कहिये माया गुरुवा लोग। कबीर साहेब कहते हैं कि एक ईश्वर दूध के बिना दही जगत की उत्पत्ति कोई नहीं बताता है इसलिये ज्ञान पारख रूप माखन गुरुवा लोगों ने खा गये यानी हरण किया ॥ ३ ॥ इसलिये कबीर साहेब कहते हैं कि हे सन्तो खानी वाणी नौकाल का भार परपञ्च सिर पर मत गहो नर नारी सहित चेत जावो। ये अर्थ ॥ ४ ॥

६४—(भजन)

देखो हो कलन्दर बाबू कैसा बाजी लाया है ॥ टेक ॥ ब्रह्मा को बाँधि कैद कर दीन्हा, विष्णु को नाच नचाया है। नीमी ऋषि को वन में बाँधिस, बालक गोद खेलाया है ॥ देखो ॥ १ ॥ लङ्का चढ़ि रावण को बाँधिस, मथुरा सैन चलाया है।

सुर नर मुनि सब पीर औलिया, इनहूँ न मजहब पाया है ॥ ॥ देखो ॥ २ ॥ कंस मारि शिशुपाल हटाइन, गोपी नाथ कहाया है। हाथ में कूँड़ी बगल में सोंटा, घर घर अलख जगाया है ॥ देखो ॥ ३ ॥ मक्का जाय मसजिद बनवाइन, अल्लाह नाम धराया है। कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, मेरे निकट नहिं आया है ॥ देखो ॥ ४ ॥

६५—(भजन)

जो कोई यह विधि से घर छावे ॥ टेक ॥ मन मट्टी सन्तोष के पानी, दुविधा गैरी करावे। श्रवन अगूती पवन पछूती, प्रेम पषाण लगावे ॥ जो० ॥ १ ॥ दम१ कै थूनी शम२ कै धरना,३ धरम कैं कोरौ नावै। सुरति बड़ेरी शोधि के घर दो, तन इव ठाट चढ़ावे ॥ जो० ॥ २ ॥ बोध विचार कै बाधी बरावे, गुरु अक्षर४ बिड़यावे। आठ पहर नौ किनो पारै, ज्ञान के गूथ लगावे ॥ जो ॥ ३ ॥ लै मनुवाँ उसमें बैठावे मोहन६ भोग चुनावे। कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, अम्मर७ पद वह पावै ॥ जो० ॥ ४ ॥

टीका १—दस इन्द्रियों को अशुभ कर्मों से हटा कर शुभ कर्मों में लगाने को दम की थून्ही कहते हैं। २–इस मन को नौ काल के परपञ्च से रहित रखने को शम और शान्ति भी कहते हैं इसी का धरना उस घर में लगा है। ३–जो सन्त नौ काल से रहित होकर दूसरे मनुष्य का भूल भ्रम मानन्दी नौ काल से छोड़ावे निज स्वरूप पर स्थित करे करावे उसी का

नाम परोपकार धर्म है सो जानिये और चार दान के करने से जन्म मरण दुःख छूटने को नहीं सो भी जानिये। "भोजन विद्या वस्त्र अभयदान यह चार दान॥ ४—हद बेहद, पाप पुण्य, खानी वाणी जाल यही दो को छोड़ो और विवेक वैराग को धारण करके निज स्वरूप पर ठहरो यही गुरु अक्षर का बिड़ियाना समझिये। ५—नौ काल नौ कोश को छोड़ने से नौ किन्नी का पारै समझिये। ६—पारखी सन्तों के सत्सङ्ग में बैठ कर विचार करना ही मोहन भोग चुनना समझिये। ७—निज स्वरूप एक देशी अम्मर पद गुरु पद निज पद समझिये।

६६—(भजन)

सद्गुरु आदि सन्देशी आये॥ टेक॥ निर्गुण१ सर्गुण एकौ नाहीं, तब हम जग को आये। देखि त्रास सभै जीवन की, हुकुम पुरुष से लाये॥ सद्०॥ १॥ नाम पान परवान लेके, अनभव दृष्टि देखाये। बिन देखे प्रतीत नहीं है, कुन्जी खोलि बताये॥ सद्०॥ २॥ सोरह शंख सहस युग बीते, कोई अन्त न पाये। जनम जुगन हम आन पुकारे, बिरले हंस ठहराये॥ सद्०॥ ३॥ कहहिं कबीर हम काशी आये, रामानन्द चेताये। पूजा पाखण्ड देखि दुनिया कै, न्यारा पन्थ चलाये॥ सद्०॥ ४॥

टीका—बीजक शब्द ७७ में कबीर साहेब कहे हैं कि—रामानन्द राम रस माते। कहहिं कबीर हम कहि कहि थाके॥ इस बीजक में यह बात सिद्ध नहीं होता है कि सत्य पुरुष मुर्दा अनु-

मान का एक रोम में कोटि सूर्य का प्रकाश तिस से नाम पान परवाना जाये ? यह गुरुवा लोग अबोधी जीवों को असाय कर पाँच सेर पिसान का सत्य पुरुष बनाय कर और धर्मदास सहतेजी, बंकेजी, चतुरभुज ये चार चेला को चार तरफ बैठाय देते हैं बीच में सत्य पुरुष रहते हैं ऐसा करके हजार पाँच सौ रुपया चौका करके नाम पान परवाना देके घिसनी करने वाले महन्त रुपया लूट लेते हैं नाम बन्दी छोर है ? तो काल का काम बन्धन छूटा नहीं इसलिये कबीर साहेब रामानन्द को चेताने गये मगर रामानन्द मुर्दा राम निर्गुण अनुमान को रटते थे और सगुण पीतर पाथर मुर्दा पूजते थे यही राम रस में माते तब कबीर साहेब कहि कर थक गये। कहहिं कबीर हम कहबै करब। ना करबौ तब हम का करब॥ १-निर्गुण कहिये आकाश अवस्तु निराकार ईश्वर ब्रह्म सर्व देशी सानन्दी मात्र है। सगुण कहिये चार तत्त्व के संयोग से बनी चीज बिगड़ैगी। यह निर्गुण सगुण दोनों चकरी से पृथक अपना स्वरूप अविनाशी एक देशी पर कबीर साहेब शान्ति भये और अनेकों जीवों को उपदेश करके शान्ति कर गये यही सन्देश का लाना समझिये। बिनापाँव का पन्थ है, बिन बस्ती का देश। बिना देह का पुरुष है, कहहि कबीर सन्देश॥ चैतन्य स्वरूप पर पहुँचने ठहरने के लिये पाँव की जरूरत नहीं चैतन्य स्वरूप में गाँव देश बस्ती नहीं बसी है वासना रहित चैतन्य जीव अविनाशी पुरुष के देह नहीं है यह सन्देश कबीर साहेब कह रहे हैं कबीर साखी व बोध बयालिस ग्रन्थ पृष्ठ १७ का प्रमाण जानिये।

६७—(शब्द)

अब गुरु मिलि गये बन्दी छोर ॥ टेक ॥ तीरथ बरत पर धूरी डागी, तजिदे बेद कितेब। आप आप में नूर दरसै, मिट गये मन के धोख ॥ अब० ॥ १ ॥ गुरु तो मिले कर्म के नासे, मन इन्द्री ढिग ठौर। आवा गवन के मिटै कल्पना निज घर लागी डोर ॥ अब० ॥ २ ॥ अमर लोक के पान देतु हैं, यम१ से तिनुका तोर। धरम दास को मिले कबीर गुरु, मिटि गै नर्क अघोर ॥ अब० ॥ ३ ॥

टीका १—वैश्य कर्म नौ काल में फँसने फँसाने वाले गुरुवा को यम कहते हैं। नूर कहिये ज्ञान रूपी प्रकाश अपने चैतन्य स्वरूप ही में है यही अमर लोक है सो जानिये। स्त्री दाम जमीन को छोड़ना ही तिनुका तोड़ना समझिये।

६८—(भजन)

अब कोई चले हमारे साथ। गाड़ी खर्चा कछू न लागै, सीधा कटा को पास ॥ टेक ॥ ज्ञान हमारे बाबू कहिये, ध्यान हमारे गाट। अनहक रेल जक्त को माया, सत गुरु मुल की लाट ॥ अब० ॥ १ ॥ दस अवतार ईश्वरी माया, बान्धे बयालिस घाट। कोई बनजारा पार उतरि गे, लगन न पाई हाट ॥ अब० ॥ २ ॥ कोई कोई परिगे नियम धर्म में, कोई गीता के पाठ। कोइ कोइ परि गे तीरथ बर्त में, कोई सरकावे काठ ॥ अब ॥ ३ ॥ मुसलमान औ पीर औलिया, रोज़ा रहैं निमाज़। उस मालिक की खबर नहीं है, ठीक न होवे मिजाज१

॥ अब ॥४॥ अलख राम सद्गुरु की दाया, हृदय में कबीर । सब सन्तन मिल चलन कहो तो, दिल की खोलो गाँठ ॥ अब ॥५॥

टीका १-दिल के अन्दर दिलवर यार असल अल्लाह राम जिन्दा को छोड़ कर नकल मन्दिर मसजिद गिरजा घर कबर फोटू मूर्ती पार्थी अपने हाथ की बनाई हुई को हिन्दू मुसलमान ईसाई पूजते हैं और असल एक देशी का बनाया हुआ अपना २ शरीर बकरी भेड़ा गाय सूकर मुर्गी आदि काटि २ खाते हैं और अल्लाह ओंकार मुर्दा को पुकारते हैं मुर्दा को पूजते पुजाते हैं यही सब जग अन्धों का मिजाज़ ठीक नहीं होता है सो जानिये ।

६९—(भजन)

पिया बिन हमरे नींद न आवे ॥टेक॥ अपने पिया का हेरन निकरियों, कोई न पता बतावे ॥ पिया ॥ १ ॥ त्रिन१ बादर कै मेहूँ बरीसै, ऊपरा से ओस सतावे ॥ पिया ॥ २ ॥ सासु ननद मोर जनम के वैरिन, बिरहा बोल सुनावे ॥ पिया ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, है नेरे सब दूरि बतावे ॥ पिया ॥ ४ ॥

टीका-मूल भ्रम अज्ञान अबोध वश जीव कहता है कि पिया परमात्मा ओंकार ईश्वर के बिना हमारे नींद नहीं आता है हृदय निवासी राम को नेरे छोड़ कर सब गुरुआ ब्रह्मादि दूर ही योग जप तप तीरथ व्रत आदि में खोज रहे हैं सो जानिये ।

७०—(भजन)

कैसे बसबै नगर लागै चोरवा ॥टेक॥ गाय बाघ छगड़ी

ओ बिगवा, जुट बैठे यक ठाईं। मूस बिलार भुवङ्गम दादुल, इनहीं करैं सत्संगवा ॥ कैसे ॥ १ ॥ बैठि मंजारी सुगा पढ़ावे, मिड़की खेलावे नागा। बैठि बगुलिया सेहरी रखावे, छगड़ी बेच लावे सागवा ॥ कैसे ॥ २ ॥ लागी आगि समुन्दर जरिगा, जल होयगा सब खारा। उबरे हंस दाग न लागे, च्चपरेमू कर विहार वा ॥ कैसे ॥ ३ ॥ जंगल जीव समुन्दर डेरा, मछरी चढ़ी पहाड़ा। वह मछरी यक अण्डा दीनो, फूटि भये संसार वा ॥ कैसे ॥ ४ ॥ सन्त महन्तों पण्डित ज्ञानी, सब मिल करो विचारा। कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, यह पद है निरबान वा ॥ कैसे ॥ ५ ॥

टीका–काया रूपी नगर में मन रूपी चोर लागता है ॥ टेक ॥ गाय कहिये ज्ञान, बाघ कहिये विषय। छगड़ी कहिये क्षमा, बिगवा कहिये बाद बिवाद। यह यक ठाईं जुट कर बैठे। मूस कहिये जीव को, बिलार कहिये स्त्री कल्पना ब्रह्म। भुवङ्गम कहिये पंच अभिमान, दादुल कहिये जीव यह सब सत्सङ्ग करते हैं यानी साँच झूठ, सन्त असन्त, ज्ञान अज्ञान का निरवार होता है ॥ १ ॥ मंजारी कहिये गुरुवा लोग, सुगा कहिये अबोधी जीवको नौकाल की माया में अटकाय कर पढ़ाते हैं। मेड़को कहिये नौकाल की माया, नागा कहिये भेष धारी संन्यासी को अपने गोद में लिये खेलाती है। बगुली कहिये योगी को, सेहरी कहिये शिवोऽहम् ईश्वर मुर्दा को बैठे एकटक योगा लोग ध्यान धरे रखाते हैं। छगड़ी कहिये गुरुवा को, साग कहिये

सोहं ओहं राम २ मन्त्र धर २ कान में सुनाय कर रुपया ज़मीन आदि ले लेते हैं ॥ २ ॥ पारख ज्ञान की अग्नि लगने से संशय रूप समुद्र जल गया। विचार रूपी जल शुद्ध खरा निर्मल रह गया। नौकाल की माया से हंस उबर कर अदाग़ नैराश चपरे में स्वयं अकेला अचल बिहार करता है ॥३॥ संसार रूप जंगल में यह जीव संशय रूप समुद्र में डेरा किया। मच्छ रूप माया काया स्त्री गुरुवा लोग पाप पुण्य रूप पहाड़ पर चढ़े और वह मच्छ रूप माया गुरुवा ब्रह्मा के मुख से अण्डा रूप ओंकार का उच्चारण हुआ और उसी ओंकार रूप अण्डा से सारे संसार की उत्पत्ति हुई, ऐसा अबोधी जीव गुरुवा लोग मानते हैं। सो प्रमाण बीजक रमैनी २७ ॥ साखी—एक अन्ड ऊँकार ते, सब जग भया पसार। कहहिं कबीर सब नारि राम की, अविचल पुरुष भतार ॥४॥

कबीर साहेब कह रहे हैं कि हे सन्तो महन्तों सब मिल विचार करके देखो कि वस्तु अवस्तु नौकाल से रहित जो अपना स्वरूप अविनाशी एक देशी निर्बान पद है उसी पर शान्ति होवो ये अर्थ ॥ ५ ॥

७१—(भजन लपेट)

भइया सुष्टि गई है जँहड़ाय दृष्टि करि देख लो ! ॥टेक॥ चीन्हो करो बिचार दया निधि कहाँ बिराजैं। कहाँ पुरुष का ठाँव कहाँ बैठे बल गाजैं। जब लग नयनन देख न आवे तब लग हिया न जुड़ाय। जैसे जल बिन मीन कन्थ बिन बिरहिनी

तलफि तलफि मरि जायँ ॥ दृष्टि करि ॥१॥ घर घर बाढ़े बिरहा बिराग अधिको रचि दीन्हा। बिरहा बिरोग मिटै कहो कैसे, कैसे तपनि बुझाय। सद्गुरु मिलै औषधी तो युग युग राज कराय ॥ दृष्टि करि ॥ २ ॥ कहु गुरुवा संसार जक्त बहु रङ्ग पसारे। योगी पण्डित भेष सकल अरुझे संसारे। कोई तीरथ कोई मूरति पूजै कोई पथरा पाखण्ड। यम फन्दा रोके घट भीतर भ्रम भूत प्रचण्ड ॥ दृष्टि करि ॥ ३ ॥ घर घर बाजै झाँझ भूत बैठे असुवाई। छगणी मुर्गी मारि देव के मूड़ चढ़ाई। लै मदिरा सिर उन के डारैं, निहुरि के लागैं पाँय। हे देवता तुम रक्षा किहो, मुख बैरी दिहो हटाय ॥ दृष्टि करि ॥ ४ ॥ हे पापी चण्डाल महा अपराधी ॥ काया का हीन दया काहे न राखी ॥ तुम यस पापी बहुत पड़े हैं, मन मा किहे गुमान। कहहिं कबीर जे हंस से बिछुड़ा, परिहैं नरक निदान ॥ दृष्टि करि ॥ ५ ॥

७२—(भजन)

अब मन परखो शब्द करारी ॥ टेक ॥ पहिले नाता बहिन भाय कै बेटी से भै नारी। चार वेद ब्रह्मा अनुसारहि, शङ्कर योग पसारी ॥ अब ॥ १ ॥ कालहिं १ लिहा जगत्त में सारो, कालहिं की अनुहारी। जबहिं निरञ्जन लेखा माँगिहैं, जोतब है खेत२ हमारी ॥ अब ॥ २ ॥ काया३ गढ़ में हाट लगी है बसें अनेक पसाढ़ी। आपन ज्ञान आपुइ से खोयो, भूलि गई टकसारी ॥ अब ॥ ३ ॥ बड़े बड़े पण्डित पोथी बकता, कर न सके निर वारी ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, सद्गुरु हंस उबारी ॥ अब ॥ ४ ॥

टीका १—काल कहिये स्त्री, गुरुवा, कल्पना । २—मन रूप निरञ्जन का खेत नौकाल नौ कोश नौ मन सूत । ३—काया गढ़ में चाहना रूपी हाट लगी है तिसमें अनेक पसाढ़ी कहिये अनेक प्रकार के गुरुवा जो पन्थी और पन्थ बूझते नहीं इसलिये पाप पुण्य रूपी जाल और कल्पना रूपी काल में फँसते हैं। अपना स्वरूप टकसारी असल साँच को छोड़ कर । "योग जप तप संयम, तीरथ व्रत दाना । नौधा बेद कितेब हैं झूठे का बाना । काहू के बचनहिं फुरे । काहू करामाती । मान बड़ाई ले रहे हिन्दू तुरुक जाती" ॥ ऐसे छौ दर्शन छानबे पाखण्ड नौ काल में अपना जान आपुइ से खोया सो जानिये। बीजक शब्द २१३॥

७३—(अरजी धर्मदास जी की)

अरजी है मेरी ! अरजी है दीन दयाल हो ! अबकी के बेर उबारो हो ।। टेक ॥ आय हतेन याहि देश मा भयों परदेशी यार हो । मारग गुरु भूलि गयन है भूलि गयन निज[१] नाम हो ॥ अरजी ॥ १ ॥ जनम जुगन मोहि भरमति बीते, यम के हाट बिकान हो। कर जोरे बिनती करूँ, गुरु अबकी लेव उबार हो ॥ अरजी ॥ २ ॥ अग्र[२] घाट बिकरार है ये ही से करि आधार हो । लेकर गाँसे है मोह सागर पर सुर नर मुनि सब झारिहो ॥ अरजी ॥ ३ ॥ जितने हंस कबीर के गुरु खेवन समरथ हार हो । धरम दास पर दाया किहो गुरु पल मा लिहो है उबार हो ॥ अरजी० ॥ ४ ॥

टीका १—निजनाम कहिये अपने स्वरूप का बोध ।

२—अग्रघाट कहिये पारख स्वरूप का ।

७४—(भजन)

आई है भक्ती१ लहरिया हो, सब मिलकै नहाय लेव ॥टेक॥
ंगा२ जिनके चरनन निकरी, चाहत हैं पशु कै धुरिया हो
। सब ॥ १ ॥ ब्रह्मा विष्णु हाथ को जोड़े, शङ्कर बने हैं
भिखरिया हो ॥ सब ॥ २ ॥ काम क्रोध मद लोभ को जीते,
माया है उनकी कँहरिया हो ॥ सब ॥ ३ ॥ काया काशी में
पारख गुरु हैं करते हैं सन्त पुकरिया ॥ सब ॥ ४ ॥

टीका १- भक्ती कहिये निर्पक्ष को भक्ती कहिये सुखदाई
सब जीवों से भक्ती कहिये काम क्रोध लोभ जाति वरण से
रहित को। २-गंगा कहिये तीकाल से रहित सद्गुरु के चरण
से ज्ञान रूपी गंगा निकरी क्योंकि चैतन्य स्वरूप में ज्ञान गुण
पारख गुण जानब गुण स्वभाविक है जैसे सूर्य और प्रकाश
यह तीन काल में अलग होने को नहीं सो जानिये।

७५—(भजन)

गुरु हैं अगम अपारा, हो तारन संसारा ॥ टेक ॥ नारद
मुनि ब्रह्मा का बेटा, केवट गुरु सिधारा। लख चौरासी पल में
मेटे, मँगन भये कर्तारा ॥ हो तारन संसारा ॥ १ ॥ हीरा जौरा
नटवर की बेटी, गुरु रैदास चमारा। ताको सद्गुरु भक्ती दीना,
भजन करो निरधारा ॥ हो तारन संसारा ॥ २ ॥ सुकदेव नान्हे
कै तपसी, बिन गुरु नहिं निस्तारा। जनक विदेही गुरु किहो
है तक बैकुण्ठ सिधारा ॥ हो तारन संसारा ॥ ३ ॥ बाल्मीक१
नान्हे कै पापी, रहे बड़े ठगहारा। कहहिं कबीर सुनो भाई
साधो, उल्टा नाम पुकारा ॥ हो तारन संसारा ॥ ४ ॥

टीका १—बाल्मीक, नारद, सुकदेव जनकादि ये सब गुरु तो बने पर अपने ऊपर एक ब्रह्म एक आत्मा एक ईश्वर व्यापक सर्व देशी मानि के कल्पना रूपी काल पाप पुण्य रूपी जाल के फाँस में पड़ गये पारख पद प्राप्त न भई सो जानिये।

७६—(भजन)

जग मा गुरु समान नहिं दाता ॥ टेक ॥ सद्गुरु वस्तु अगोचर दीन्हा भले बतायो बाता। काम क्रोध सब कैद किहा हैं, लोगवै नवावैं माथा ॥ जग ॥१॥ शब्द पुकारि पुकारिकहत है गहु सन्तन कै साथा। निशिदिन सुरति राखु धनी से, जम नहिं रोकै बाटा ॥ जग ॥ २ ॥ करना होय तो करले बन्दे यही तुम्हारी पाँसा ॥ नहीं चौरासी जाय परोगे, भोगौगे दिन राता ॥ जग ॥ ३ ॥ धर्म दास कहैं समरथ साहेब, हमैं तुम्हारी आशा। साहेब कबीर दया के सागर, राखेव चरणावा के पासा ॥ जग ॥ ४ ॥

७७—(भजन)

भजन कब करिहौ तनु धारी ॥ टेक ॥ वहाँ से आयो बन्दे भजन करन का, यहाँ भुलाय गयो नर नारी ॥भजन॥१॥ मात पिता गुरु कहा न मान्यो, जोड़ू कै बात नहीं टारी ॥ भजन ॥ २ ॥ सत्संगति में कबहूँ न बैठेव, बिचवा[१] में काल झपट मारी ॥ भजन ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, खेलल जुवा चला हारी ॥ भजन ॥ ४ ॥

टीका १—बिचवा कहिये जवानी अवस्था में नौकाल की

माया परपञ्च ने झपट मारी मानुष पशु अण्डज उष्मज के खानि में जाकर चक्कर लगावेंगे।

७८—(भजन)

भुलानेव काहे मनुवा जानि कै॥ टेक॥ गर्भ बास में भक्ती कबूल्यो, यहाँ सुतलेव गोड़वा तानि कै॥ भुलानेव॥१॥ एक माया एक ब्रह्म कहावे, एक आपन एक आन कै॥ भुलानेव॥ २॥ सन्त गुरु कै सेवा न कीन्ह्यो, किहौ गुलामी वाम कै॥ भुलानेव॥ ३॥ कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, जम मरिहैं तुम्हैं बान्धि कै॥ भुलानेव॥ ४॥

७९—(भजन)

सइयाँ का हेरवै हेराय गईं सजनी[१]॥ टेक॥ पिया हेरन का रन बन निकरियों, बाढ़ी तृष्णा भयो जिम चटनी॥ सइयाँ॥ १॥ तीरथ व्रत जप तप पूजा, बिन सत नाम[२] भई सब कथनी॥ सइयाँ॥ २॥ सत्सङ्गति में कबहूँ न बैठेव, लख चौरासी में खाय गईं घुमनी॥ सइयाँ॥ ३॥ ईश्वरी दास दया सब तुम्हरी, दुनियाँ दौलत नाम कै भजनी[३]॥ सइयाँ॥ ४॥

टीका १– सइयाँ कहिये समुद्र रूप ब्रह्म सर्व देशी, सजनी कहिये जीव बुन्द रूप, ब्रह्म रूप समुद्र में हेराय गया यही सायुज मुक्ती गुरुवा लोग माने हैं सो जानिये। २–सत नाम कहिये स्व-स्वरूप बोध विना सब कथनी फीकी पड़ गई। ३–भजनी कहिये जीव को, नाम कहिये बोध को जिसको

निज स्वरूप बोध नहीं है वह नौकाल के परपञ्च में भेष बनाय कर धोखे में नर तन खोया सो जानिये ।

८०—(भजन गारी)

यह काया गढ़ नगरी रे, भजन बिन कैसे सुधरी ॥ टेक ॥ तीन खानि में भटक भटक के, पायो कष्ट महान । बड़े भाग्य मानुष तन पायो, तबहुँ न कियो ठेकान ॥ पाप धरि बान्धेव गठरी ॥ यह ॥ १ ॥ जिनके हित पर लोक बिगाड़ेव किहो पाप का काम । अन्त समय कोई काम न अइहैं सुत जननी पितु बाम ॥ फूँक देहैं तन ठटरी ॥ यह ॥ २ ॥ जीव मारि के पेट भर्‌यो नित, कीन्ह्यो पाप तमाम । दया धर्म की याद न जान्यो, छुटि जइहै धन धाम । पकरि यम धरि रगरी ॥ यह ॥३॥ सन्त शिरोमणि काशी बासी है जागू स्थान ॥ आवो शब्द गहो सत गुरु की, हो जावे कल्याण ॥ जीवन घट भरो गगरी ॥ यह ॥ ४ ॥

८१—(भजन गारी)

सुनो भारत वासी हो, देश अब कैसे सुधरी ॥ टेक ॥ माता बहिने शीश खोलि के करने लगीं बजार ॥ उल्टा पल्ला ओढ़ि के चलतीं टेढ़ी माँग सँवार ॥ सिनेमा ओर चलीं डगरी ॥ सुनो ॥ १ ॥ ऊँचे ऐड़ी चपल पहिने, बगुला की गति जायँ । दुहरी चोटी क्रीम पावडर लाली ओंठ लगाय ॥ बनी हैं मानो इन्द्र परी ॥ सुनो ॥ २ ॥ नृत्य कला को भली भाँति अब दीन प्रचार बढ़ाई ॥ पिता बन्धु सब लज्जा वश

होय मोछैं लीन मुड़ाई ॥ समाज अब गयो बिगरी ॥ सुनो ॥३॥ भारत की अब यह गति ह्वै गै, हुआ ग़ज़ब भारी। शम्भू कहैं दीन करि डारिस हैं सब का नारी ॥ रहती हैं अपने मद में भरी ॥ सुनो ॥ ४ ॥

८२--(भजन गारी)

तुम बिनय हमारी सुनि लेव अबुध घट तम नशिया ॥ टेक ॥ बालक अबुध सभी इस जग में हैं तुम्हरे आधार। गुरु जन सभी दया के सागर, कर दो बेड़ा पार ॥ प्रगट करो प्रकाशिया ॥ तुम ॥ १ ॥ निर्मल हृदय बना कर मेरा ज्योति प्रकाश करो ॥ है अज्ञान महा दुख सागर भव से पार करो ॥ काटि देव यम फँसिया ॥ तुम ॥ २ ॥ हो मल्लाह तुम्हीं इस जग में नइया खेवन हार ॥ डगमग डगमग डोल रही है, जीवन को पतवार ॥ लगाय देव गुरु तटिया ॥ तुम ॥ ३ ॥ गुरु बिन और कौन इस जग में हम से हेत करी ॥ शम्भू दयाल कहैं सब सुन लो गुरु बिन को उबरी ॥ लगाये काल है घतिया ॥ तुम ॥ ४ ॥

८३--(भजन)

सदा धर्म करते रहो, जब लग घट में प्राण।
धर्म शास्त्र में दस लिखे, इसके खास निशान ॥
महाराज मनो बतलाते दस चिन्ह धर्म के भाई ॥ टेक ॥
पहिले तुम धीरज को धारो, दूजे सब के बचन सहारो, तीजे अपने मन को मारो ये उपदेश सुनाते महाराज ॥ १ ॥ चौथे

तजि चोरी का पेशा, मिटै सकल नर तेरो कलेशा। रह्यो पाँचवे शुद्ध हमेशा, यों सब ऋषि मुनि गाते ॥ महाराज ॥ २॥ छठें इन्द्रियाँ वश में करना, सप्तम चित्त विचार में धरना। अष्टम विद्या मन में भरना, जो तुम मनुज कहाते ॥ महाराज ॥ ३ ॥ नौवें सत्य को धारण कीजे, दसयें क्रोध नाश कर दीजे, प्रभु[१] को सुमिरि मुरारी लीजे, क्यों हो जन्म गँवाते ॥ महाराज ॥ ४ ॥

टीका—महाराज मनो जी निज स्वरूप को छोड़ कर एक आत्मा ब्रह्म ईश्वर सर्व देशी माना इनको भी पारख पद प्राप्त न भया सो जानिये।

८४—(कंहरा)

जेहि दिन अइहैं मोर बलमवाँ भागे पइहो न गली ॥टेक॥ लेकर बन्दर लङ्का अन्दर करिहैं आय मुकमवाँ। दसो दिसा तुम्हरो सब घेरिहैं सुन रावण बेइमनवाँ ॥ परिहैं गाढ़े मा परनवाँ ॥ भागे ॥ १ ॥ चोरी से हमका हरि लायो तापर किहौ गुमनवाँ। जीति के लवतेव तुम बालम से तुम्हरो करित बखनवाँ ॥ देवरा लक्ष्मण के समनवाँ ॥ भागे ॥ २ ॥ जुगुनू समान तुम रह्यो रावणा सुर्य समान भगवाना। नाती पुत्र परिवार सहित सब जइहौ सुर पुर धमवाँ ॥ छुटिहैं लङ्का कै रहनवाँ ॥ भागे ॥ ३ ॥ बिक्रमा जीत तुम्हैं बदि डरिहैं बानन छेद बदनवाँ ॥ लङ्का राज बिभीषण करिहैं, मिटिहैं सगरो शेखी शनवाँ ॥ अइहैं दसरथ कै ललनवाँ ॥ भागे ॥ ४ ॥

टीका १- आज भी किसी के पिता मर गये तब चिट्ठी में लिख कर आता है कि तुम्हारे पिता का सुर लोक या स्वर्ग वास हो गया है। और रावण मरा तब शिशु पाल दैत्य द्वापर में हुआ और राम मरे तब कृष्ण हुये बदला दिये मुक्ती किसी की नहीं हुई सो जानिये।

८५-(कहँरा)

भइया बिना बहियाँ टूटि कपि बताओ क्या करी ॥टेक॥ मात पिता बन वास दिहिन हैं बन गई नारि मोर लूटी। हमरे कारण लखन लालजी गये हाथ से छूटी ॥ मेघवा भिनही आय के जूटी ॥ कपि बताओ का करी ॥ भइया ॥ १ ॥ भरत रहे कुण्ठ बैठे लिहे खराऊँ खूँटी। पिता रहे सुर लोक में पहुँचे, मरिगे छतिया मुड़वा पीटी रोवें माता प्रजा बेटी ॥ कपि बतावो का करी ॥ भइया ॥ २ ॥ को अब मारी मेघनाथ का गये बिधाता रूठी। कमर तूरि भइया अब भागे, किनके बल से ऊठी ॥ सारी देहियाँ हो गये झूठी ॥ कपि बताओ का करी ॥ भइया ॥ ३ ॥ हे कपि जावो देर न लावो, लाओ सजीवन बूटी। शिव प्रसाद रवि उगै न पावैं, दीजै बूटी कूटी, नहीं तो कर्मा जइहैं फूटी ॥ कपि बतावो का करी ॥ भइया ४ ॥

८६—(कहँरा मद्यपान निषेध)

त्यागो मदिरा कै पियायी मानो भाई बतिया ॥ टेक ॥ मदिरा पिये बुद्धि सब नाशै धन कै होय सफाई। आदत पड़े चैन नहिं आवै चिन्ता रहो जलाई ॥ चोरी कइकै मदिरा लाई

॥ मानो भाई० ॥ १ ॥ पहिला प्याला के पीते ही तोता अस
तुतराई । दूसरे प्याला के पीते खन घोड़ा अस हिंहियाई ॥
झूमैं हाथी सो सुँसुवाई ॥ मानो भाई० ॥ २ ॥ चौथे प्याला
के पीते ही गद्दहा अस होय जाई ॥ जहाँ तहाँ नाली कचड़ा
में लोटे लाज बिहाई ॥ कूदैं एक एक पर धाई ॥ मानो भाई०
॥ ३ ॥ निशि दिन करै कुसङ्ग का सेवन सब दुर्गुण उपजाई ॥
चोरी जारी करै लबरई ताड़ी पीट हहाई ॥ तन कै लाज शरम
बिसराई ॥ मानो भाई० ॥ ४ ॥ मदिरा पीना महा पाप
बेद सन्त कहैं भाई । याते मदिरा पीना त्यागो कह अभिला
बुझाई ॥ यहिमा तुम्हरो है भलाई ॥ मानो भा ॥ ५ ॥

गाँजा, भाँग, बीड़ी, सिगरेट, चर्स, चण्डू, तम्बाकू दोहरा
तथा सुर्ती आदि नशीली वस्तु सब प्रकार हानिकर जान औ
नीचे का भजन मनन करके त्याग देना चाहिये ।

दीजै अमल हटाई मेरे भाई अमली ॥ टेक ॥ गाँजा चर
बड़ा दुख दाई, खाँसी दमा बुलाई । तन का रक्त भस्म कै
खर्चा बढ़ै सवाई ॥ नशवा बुद्धी को नशाई ॥ मेरे भाई० ॥१
बीड़ी औ सिगरेट इसी गाँजा का लहुरा भाई । विद्या बुद्धि
धन बल से होवे हाथ सफाई ॥ तेहिं पर बाबू को सोहाई
मेरे भाई० ॥ २ ॥ कोई कच्ची सुर्ती खावे भोरे भीख मँगाई
बीच सभा में करैं थुकाई मुहवी लगै बसाई ॥ सुर्ती झूठो दे
बोलाई ॥ मेरे भाई० ॥ ३ ॥ देखी देखा घर कुटुम्ब के स
अमली होय जाई । सद्गुण घटै दोष तन बाढ़ै चोरिउ रा

ाई ॥ त्यागो त्यागो दुख दाई ॥ मेरे भाई० ॥ ४ ॥ भाँग
ी से बुद्धि भ्रष्ट होय ज्ञान ध्यान नशि जाई। दोहरा पान
मल सब दुखदा चिन्ता खर्च बढ़ाई ॥ आदत बारम्बार
ताई ॥ मेरे भाई० ॥ ५ ॥ याते सर्व अमल को त्यागो तन
न शुचि होय जाई ॥ व्यर्थ हर्ज खर्चा से छूटै चित्त प्रसन्न
ाई ॥ सुखमय जीवन अपन बिताई ॥ मेरे भाई० ॥ ६ ॥ जो
न होय धर्म में खर्चो पर उपकार कमाई। भक्ति धरम करि
यश कमावो यह अभिलाष बिहाई ॥ मेरे भाई० ॥

८८–(कहँरा)

मानो सन्तन क कहनवाँ पा के नर तनवाँ ॥ टेक ॥ यह
ंसार सराय मुसाफिर क्षण क्षण अनवाँ जनवाँ। कोइ
काहू को मीत नहीं है सब मतलब के मनवां ॥ आखिर छूटे
सब जहनवां ॥ पाके ॥ १ ॥ जेहि शरीर के सुख में भूले हाड़
मास के तनवां। बृद्ध अवस्था आय जरजरी मिटि जइहैं
सब शनवां ॥ लगिकै बोलै बोली तनवां ॥ पाके ॥ २ ॥ बहुत
बचा के चलो जगत में छोटे बड़े सब जनवां। शक्ति चले
तक दुक्ख न दीजै तनमन और बचनवां। भरसक पालो दया
धरमवां ॥ पाके ॥ ३ ॥ करो स्वक्षता घर तन मन की वस्त्र
और बरतनवां। जो कोई दुखिया द्वारे आवे यथा शक्ति
दो दनवां ॥ करके भक्ती अरु भजनवां पाके ॥४॥ सन्त गुरु की
सेवा कीजै समय से सुनो बचनवां। हठता पक्ष हृदय से त्यागो
रहो नम्र निरमनवां ॥ तबहीं बनिहैं अपना कमवां ॥पाके॥५॥

गुरु ज्ञान को नित्य विचारो सुबह और कछु शमवां। समय पायके शुद्ध हृदय से जाव गुरु[1] दरशनवां॥ सकलो होयहै भरम दहनवां॥ पाके॥ ६॥ सफल होय यह जनम तुम्हारो जो पाये नर तनवां। दास निरबन्ध ठहरि के बूझो जो गाया यह गनवां॥ मिटिहैं सारी कल कनवां॥ पाके॥ ६॥

टीका १—वैश्य कर्म सात काल में फँसे हुये गुरु का दर्शन व सेवा सत्सङ्ग करने से भूल भ्रम अध्यास मानन्दी नहीं छूटैगी इसलिये "पूरा साहेब सेइये! सब बिधि पूरा होय!॥ ओछे से नेह लगाय के। मूलहु आवै खोय" बीजक साखी ३०९॥ नौकाल वैश्य कर्म से रहित नौ गुण सहित निज स्वरूप स्थित पुरुष को साहेब कहते हैं सो जानिये। परोपकार ही धर्म है।

८९—(गुजल)

ईश्वर भरोसे बैठे घर में रहे न थाली। बिन खेत बीज बोये तुमको मिलै न बाली॥ टेक॥ गङ्गा में फल जो होता अन्धा खड़ा न रोता। जिस दम लगाये गोता, नयनों में होय उजाली॥ ईश्वर॥ १॥ फूलों में देव राजी तोड़ी कली है ताजी। रुचि रुचि के हार साजो, फिर क्यों दुखी है माली॥ ईश्वर॥ २॥ पशु देवियों पे काटें सिन्नी परोस बाँटे। अपना ही पेट डाटें, देवी कै पेट खाली॥ ईश्वर॥ ३॥ पत्थर जो भोग खाता टट्टी जरूर जाता। यह झूठ सब है बाता, फिर क्यों चढ़ावो डाली॥ ईश्वर॥ ४॥ कल्पित कपोल बातें सुनि सुनि के लोग माते। छोट कौनू दास गाते, सब गुरु

शरन जा हाली ॥ ईश्वर ॥ ५ ॥

९०—(ग़ज़ल)

दुनियां में जो नहीं है उसको बता रहे हैं। अन्धों को रात ही में, सूरज दिखा रहे हैं ॥ टेक ॥ मन्दिर मनुष्य बनाया, मूरत मनुष्य बनाई। मानुष ही सर नवा के, पैसा चढ़ा रहे हैं ॥ दुनियां ॥ १ ॥ मानुष कथा सुनावें मानुष ही सुनने जावें। मानुष ही शङ्ख घण्टा देखो बजा रहे हैं ॥दुनियां ॥२॥ मानुष प्रसाद देवे, मानुष प्रसाद लेवे। पत्थर को नहीं देखा, मानुष ही खा रहे हैं ॥ दुनियां ॥ ३ ॥ सुनता कथा उपासा बांचे बिना उपासा। यह झूठ सब तमाशा, उल्टा पढ़ा रहे हैं ॥ दुनियां ॥ ४ ॥ कितना ही कोई झांपे, छिपता नहीं यहां पे, छोट कौनू दास भांपे, सत गुरु लखा रहे हैं ॥दुनियां ॥५॥

९१—(भजन)

अँचरे से अङ्गना बहारों हो घर साहेब आये ॥ टेक ॥ सुरहा गाई के गोबरा मँगायो चहुँ मुख भवन लिपायों हो ॥ घर ॥ १ ॥ गङ्गा जमुन से जल भर लायों, अङ्गना में कलश धरायों हो ॥ घर ॥ २ ॥ चन्दन काठ पाँच खम्भा गड़े हैं, पनवन माड़ौ छवायों हो ॥ घर ॥ ३ ॥ धर्म दास की बिनती साहेब, बिछुड़ल हंस मिलायो हो ॥ घर ॥ ४ ॥

९२—(भजन)

चतुर सब घर भर बूढ़ जवान ॥ टेक ॥ साधु गुरु का आवत देखिन, लोहा की नाईं रहैं गरुवान ॥ चतुर ॥ १ ॥ एक तो घर में सीधा नहीं है, दूजे सुखवन नाहीं झुरान ॥

चतुर ॥ २ ॥ इधर उधर से बूढ़ा टहरैं रहने का नाहीं ठेकान ॥ चतुर ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर सन्त जे सेवै, तेहिं कर जल्दी आवै बिमान[१] ॥ चतुर ॥ ४ ॥

टीका १– नौकाल से रहित नौ गुण सहित निज स्वरूप स्थित पुरुष का सेवा सत्सङ्ग बिचार रहस्य लेकर जो चलता है वह जल्दी बन्धन से छूट कर मुक्ति को पाता है यही बिमान का आना जानिये ।

९३—(भजन)

तेरी अँखिया कँह लागी गोरी ॥ टेक ॥ गुरु भजन में सुधि बिसरायो, टटका में भूलिव । भूखी आत्मा खबर न जान्यो, क्या पूज्यो चँवरी ॥ तेरी ॥ १ ॥ इत उत धायो मन भटकायो हीरा निज छोरी । पाथर कै महिमा बहु लायो, साहेब न हेरी ॥ तेरी ॥ २ ॥ दया कै चून्दरि तुम न ओढ्यो ले ममता घेरी ॥ हरे बहुरिया गोता खइहौ, फेरि फेरि जम घेरी ॥ तेरी ॥ ३ ॥ झुण्ड झुण्ड सब एक मत होय, गईं मान गुमान भरी । कहहिं कबीर सुनो भाई साधो खुलि जइहैं चोरी ॥ तेरी ॥ ४ ॥

९४—(भजन) ब्रह्मानन्द भजन माला का प्रमाण

श्री कृष्ण कहे सुन अर्जुन बात हमारी । तुझको समझाऊँ ब्रह्म ज्ञान निर्धारी ॥ टेक ॥ यह चेतन जीव बसे नित तन के माहीं । जिम राजा नगरी बीच निवास कराई । दस इन्द्री अरु मन सेवक हैं सुखदाई । सब प्राण खड़े दरबान करें निगराई ।

अन्दर बैठा नित देखे रचना सारी ॥ १ ॥ यह पाँच भूत का बना शरीर तुम्हारा। क्षण भंगुर है जड़ रूप बिनाशन हारा। बालापन जोबन जरा शरीर विकारा। यामें साक्षी है जीव रहे नित न्यारा। कर जुदा देह अरु जीव तू देख विचारी ॥ २ ॥ जिम पंछी लोभ कर पिंजर माँहि फँसाया। तिम जीव कर्म बश धारण कीनी काया। बिषयों की लालच देख फिरे भरमाया। अपनो सुख चेतन सत्य रूप बिसराया। भव बन्धन जीव पड़ा बिन ज्ञान अनारी ॥ ३ ॥ जिस वस्त्र पुराने छोड़ नये नर धारे। तिम जीव एक से दूजी देह सिधारे। मरना जनना है देह धर्म सुन प्यारे। अजरामर चेतन जीव मरे नहिं मारे। यह है अविनाशी अचल रूप अविकारी ॥ श्री कृष्ण कहैं सुन अर्जुन ॥ ४ ॥

टीका १—यह चार पद तक ठीक है और चार पद में व्यापक व्याप्य सर्व देशी अंश अंशी जगत कर्ता ईश्वर ब्रह्म ब्रह्मानन्द माने हैं गीता के प्रमाण से सो भ्रमिक है कृष्ण भगवान अपने ही नहीं मुक्त हुये तो औरों की क्या मुक्ती देवेंगे ऐसा जानिये।

९५—(भजन)

धोबिनिया चञ्चल बड़ी हरजाँई ॥ टेक ॥ खाले खाले धोबइन गदहा चरावें, सब लड़िकन से माँगै मिठाई ॥ धोबिनिया ॥ १ ॥ ऊँचे गाँव धोबइन कपड़ा धोवें, सब से माँगै पियायी ॥ धोबिनिया ॥ २ ॥ कौने घाट धोबइन कपड़ा धोवें,

कौने घाट सुखवाई ॥ धोबिनिया ॥ ३ ॥ रामघाट धोबइन कपड़ा धोवें, सत गुरु घाट सुखवाई ॥ धोबिनिया ॥ ४ ॥ कहैं कबीर सुनो भाई साधो, गुरु के चरण गुण गाई ॥ धोबिनिया ॥ ५ ॥

टीका-धोबिनिया कहिये जीव का, हरजाँई कहिये हर जगह जाय कर गोबर माटी पाथर तुलसी माई गंगा माई अग्नि माई काली माई समाधी फोटू ताजिया आदि पर माथ पटकने से बृती चञ्चल हो गई। जीव रूप धोबइन ने मन रूपी गदहा को मुर्दा राम ओंकार शिवोऽहम ब्रह्म ईश्वर को पुकारती है यही गदहा चराना समझिये। जब अपने मुख से राम रहीम को पुकारा यानी हमारे मुख से राम शिवोऽहम पैदा होने से लड़िका ठहरे तब उन्हीं मुर्दा लड़कों से मुक्ती रूपी मिठाई माँग रहे हैं यही चंचलताई और हरजाँई जानिए ॥ १ ॥ ऊँचे गाँव कहिये बैकुण्ठपुरी ऊपर आकाश या ब्रह्माण्ड में अनुमान मुर्दा ज्योति प्रकाश सत्य पुरुष से अन्तःरूपी कपड़ा धो रहे हैं और राम रहीम दुर्गा काली से पियायी कहिए कुशल क्षेम आशीर्वाद माँग रहे हैं ॥ २ ॥

९६—(भजन)

चली आवें धोबइन मारे मटक्का टेक ॥ आगे आगे गदहा पीछे धोबिनियाँ, मारै मुङ्गरा उठै भदक्का ॥ चली ॥ १ ॥ काहे केर लादी काहे केर सौंदन काहे केर साबुन बट्टा ॥ चली ॥ २ ॥ ज्ञान केरी लादी सुरति केर सौंदन,

बोध केर साबुन बट्टा ॥ चली ॥ ३ ॥ कहहिं कबीर छोड़ो सकलौ दुरमति ई है गुरु का गट्टा ॥ चली ॥ ४ ॥

टीका—धोबइन कहिये रहनी सहित जीव को, मारे कहिये धारण करना, मटक्का कहिये नौ गुण को। दोहा—दया धैर्य सत्य शील ले, विरति विवेक विचार। गुरु भक्ती और सुमति से, नौ गुण सब दुख टार ॥ मनरूपी गदहा आगे २ दौड़ता है और पीछे वैराग्य रूपी मुंगरा से जीवरूपी धोबाइन मनरूपी गदहा को मारती है तब भक्तीरूपी मटक्का उठने लगा, और रहनी सहित निज स्वरूप पर बोध शान्ति होने से पाप पुण्य रूपी जाल व नौकाल व वैश्य कर्म से छुट्टी मिला सो जानिये।

९७—(भजन)

ऐसी धन लोनी खोदर लाँइ दरि कै। टेक ॥ काँड़ै न पछोरैं कङ्कर न बिचारैं, पिसना पीसैं चंगरवा ॥ भरिकै ऐसी ॥ १ ॥ झारैं न बहारैं चौका न लगावैं, अदहन धरैं बटुलवा भरिकै ॥ ऐसी ॥ २ ॥ पाँचौ लरिकन मारि के सोवावैं अपना खाँय कठौता भरिकै ॥ ऐसी ॥ ३ । कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अपना सोवैं बिछौना कइके ॥ ऐसी ॥

टीका—धन लोनी कहिए जीव का, खोदर कहिए ब्रह्म सर्व देशी को, दरिकै कहिए दर दर में ब्रह्म व्यापक है। जब ब्रह्म सब जगह व्यापक भरिकै भरपूर है तब पछोरने विचारने की क्या जरूरत, चावल और कीड़ा दोनों में ब्रह्म व्यापक है। जब कीड़ा को निकाल कर फेकैंगे तब ब्रह्म व्यापक होने से फेंका

जाता नहीं इसलिये जड़ चेतन एक में गबड़ कर कह दिये अद्वैत ब्रह्म शिवोऽहम खल्विदं । बीजक रमैनी ४२ का प्रमाण ॥
जब हम रहल रहल नहिं कोई । हमरे माहिं रहल सब कोई ॥
ब्रह्ममुख चौपाई है सो जानिये ।

(९८) प्रश्न :-मुक्ति मिलने के वास्ते लक्ष्मण जी राम से कितने प्रश्न पूछे सो संक्षेप में कहिए ?

उत्तर—पण्डित लोग सत्यनारायण का कथा साहु बनिया लकड़हारा आदि का कथा सुनाते हैं तब जिज्ञासू प्रश्न करते हैं कि लकड़हारा साहु बनिया आदि यह सब कौन कथा सुने थे वही कथा सुनाओ तब पण्डित जी इनकार कर देते हैं कि हमको नहीं मालूम है इसलिये लक्ष्मण जी का प्रश्न और राम जी के मुखारविंद से उत्तर संक्षेप में सुनिए और सुनकर गुण ग्रहण करने से मुक्ती भी मिलैगी सो जानिये । प्रमाण विश्राम सागर ५१३ पृष्ठ लखनऊ में छपी-प्रेस नवलकिशोर में मुद्रित और प्रकाशित यह कथा 'धरती धन धाम से रहित' पारखी सन्तों द्वारा सुनिये तभी पूरा पूरा समझ में आवेगा ।

दोहा—पंचवटी गुण गण जटी, टटनि टटी नट रास ।
अघट घटो दुख सुख पटी, कुटी करो तहँ वास ॥
आवैं तहँ अनेक ऋषि राजा । होय सदा सतसंग समाजा ॥
एक दिवस लक्ष्मण सिर नाई । बोले प्रभु ते आयसु पाई ॥
नाथ बात सब विधि तुम जानौ । मै पूछौं संक्षेप बखानौ ॥
जग समुद्र मधि को आधारा । गुरु कृपाल पद पोत निहारा ॥

गुरु को जो देवै हित बोधा। शिष्य कौन जो सुनै प्रबोधा॥
वेधित को विषया अनुरागी। को वा मुक्ति विषय जिन त्यागी॥
नरक सो कौन घोर निज देही। तृष्णा त्यागि स्वर्ग सुख येही॥
तमो द्वार किं किङ्कर नारी। मोक्षमार्ग सत सङ्ग विचारी॥
सोवत को जग रहे जो टेकी। जागत किं सद् असद् विवेकी॥
को वा शत्रु निजइन्द्रिए मीता। सोई सुहृद तिन्हैं जिन जीता॥
रङ्क कौन ज्यहिं तृष्णा चोखी। धनीसो को सब विधि संतोषी॥
महा अन्ध को जो मदनातुर। निजभल करै सोई बड़ चातुर॥
क्षमावन्त को त्यहिं श्रुति कहई। परुष बचन सुनि जो नहिं दहइ॥
मृतक कौन ज्यहि कीरति नाहीं। जीवत जासु सुयश जग माहीं॥
दीरघ रुज किं यह संसारा। औषध तासु अनूप विचारा॥
दोहा—को हौं आयो कहाँ ते, कित जै हौं का सार।
को मैं जननी को पिता, याको कहिये विचार॥
किं अनीति ज वेद विरुद्धा। परम तीर्थ किं निज मन शुद्धा॥
बिन प्रतीति को कञ्चन काँता। सेवा करन योग को साँता॥
किं ज्वर चिन्ता चित की जानो। शठ को जो बिन धर्म पिछानो॥
लाभ कौन बड़ि भक्ति हमारी। हानि न भज्यो मोहिं तनु धारी॥
को वा शूर सुभावै जीते। भूषण किं जो शील न रीते॥५॥
विद्या किं जो भेद मिटि जाई। भेद अविद्या है दुख दाई॥
लज्जा किं नहिं करै विकारा। महाबीर जिन मनहिं प्रहारा॥
धीरजवन्त बली अति को वा। सुमुखि कटाक्षन मोहै जो वा॥
दुख किं अनित्य वस्तु में नेहा। सुख प्रद को मम चरण सनेहा॥

पातक मूल लोभ लखि परई। पढ़न सुनन की कुपथ बिसरई ॥
त्यागी को जो मन वच काया। करि सत कर्म भजै फल पाया ॥
सत्य वचन कि जो मोहिं लीन्हे। पण्डित कि विकार तजि दीन्हे ॥
मम स्वरूप जानै सोइ ज्ञानी। मूरख कि सुदेह अभिमानी ॥
पन्थ कवनि जामें मोहिं पावै। दानी जो मम भक्ति बतावै ॥
महा पतित को हिंसा चारी। धन्य कौन जो पर उपकारी ॥
को वा श्रेष्ठ निरत हरि कर्मा। नीच कौन जो कर कुकर्मा ॥
संग्रह त्याग कहा गुण मेरे। जाइ न कितैं कुसङ्गति नेरे ॥
तप कि विषय भोग परि हरई। दया जो भूत द्रोह नहिं करई ॥
कि यम जाल सुतामस मोहा। प्रेम कहाँ जहँ नहिं तन छोहा ॥
साधु कौन जाके उर दाया। हरिते विमुख करै सोई माया ॥
दुख सुख सम सब काल तितीक्षा। कि विज्ञान विवेक परीक्षा ॥

दोहा—हौं नहि तनमन बचन बुधि, जाति बरण कुल एक।
मैं हौं चेतन सबन में, याको कहत विवेक ॥
थावर जङ्गम सबन में, जहँ तक जीव जहान।
समन रूप निश्चय भयो, सोई अनन्य विज्ञान ॥
जीव ईश में भेद कि, यतनोइ अहै सदीव।
बद्ध दशा में जीव कहि, मोक्ष दशा में शीव ॥
जैसे महदाकाश ते, घटा काश को भेद।
तैसे मिटे उपाधि के, जीव ब्रह्म निरभेद ॥

श्लोक—सतसङ्गो वासना त्यागो ध्यात्म विद्या विचारणम्।
प्राण स्पन्द निरोधश्च, मुक्ति द्वारं चतुर्विधम् ॥

पुरुष अयोगिहि ब्रह्म न दरसै । बिन विराग जिमि ज्ञान न सरसै ॥
विरति कहा विधि लोक प्रयंता । काक विष्ठ सम समझै अन्ता ॥
भत कहा भय धीरज धामा । परम जाप कि जो मम नामा ॥
चुगुल कौन पर अवगुण खोलै । मौनी बचन युक्ति ते बोलै ॥
पिता विवेक सुमति सोइ माता । हरिजन मिलन मोक्ष सुख दाता ॥
दुस्तर कि सब जननि दुरासा । शरि मूल कि केवल हासा ॥
पशु को जो बिन सुकृत रहावै । बन्धु बिपति में काम जो आवै ॥
श्रद्धा कि जो मुदित अवालस । क्रिया विषय दुख सहै निरालस ॥
कि विश्वास गनै सुनि साँची । तोप कौन निष्काम अयाँची ॥
निष्ठा कि करिये जहँ प्रीती । लखि न अभाव होय विपरीती ॥
रुचि किं रहित सोच सुख पाये । भाव क्षमादि सकल गुण आये ॥
आसक्ती कि प्रिय बिन देखे । रुच तन कछु तन धन किहि लेखे ॥
भोजन किं जग तीनि प्रकारा । उत्तम मध्यम नीच निहारा ॥
मधुर मञ्जु मृदु सात्त्विक जानो । तिक्त तात रजगुणी पिछानो ॥
भक्ष्या भक्ष्य तामसिन केरे । तिमि त्रै विधि के मनुज निबेरे ॥
पूजा तीनि भाँति की हेरी । प्रतिमा वैष्णव आतम केरी ॥१६॥
उत्तम आतम मध्यम साधू । कछु कनिष्ठ प्रतिमा अवराधू ॥१७॥
शान्ति सो कौन विकार विहीना । निर अभिमान ज्ञान कि दीना ॥
वशीकरण किं कोमल बानी । मारण मन्त्र क्षमा बड़ा जानो ॥१८॥
जीव उभय किं बन्ध विमोक्षा । सहित रहित वासना असोक्षा ॥
भाग्य सुवाम कुमति पर केरी । जगत मान्यता आशा बेरी ॥
परिमल किं प्रणधन कि धर्म्मा । करणी बिन बादै बेशर्म्मा ॥

ईश्वर सब पर प्रकृति नियन्ता । बहु बिधि कह्यो जानकी कन्ता ॥
सुनि प्रभु बचन लषन हरषाने । बैठे पुनि निज जाइ ठिकाने ॥
दोहा–रत्न माल मत जाल लै, भगवत गीता साथ ।
राम गीत नव नीत यह, वरण्यो जन रघुनाथ ॥

यह कथा सुनकर गुण ग्रहण करने से मुक्ती मिलने का राम लक्ष्मण प्रश्न उत्तर सम्वाद समाप्त ।

(९९) प्रश्न–तक़दीर तीन प्रकार का कौन कौन होता है ?

उत्तर :–एक रूल ऐसा, दूसरा पहरुवा यानी मूसल ऐसा तीसरा सोंटा ऐसा । रूल के आदि अन्त मध्य बराबर रहता है इसी प्रकार किसी मनुष्य के तकदीर आदि से अन्त तक सुख ही सुख निबहि गया और दुख पड़ा तो दुख ही दुख खतम हुआ यह रूल ऐसा तक़दीर जानिये । पहरुवा (मूसल) के बीच में कटा रहता है और आदि अन्त बराबर रहता है इसी प्रकार किसी मनुष्य के आदि अन्त सुख ही सुख निबहि गया और बीच में कट गया यानी दुख पड़ गया । सोंटा के आदि में मोटा और अन्त में पतला रहता है इसी प्रकार मनुष्य के आदि में सुख बाद में धीरे २ पतला होता गया वास्तव में मनुष्य के देह पर सामान्य विशेष दुख सुख हुआ ही करता है यह कर्मानुसार है सो जानिये ।

(१००) प्रश्न :–शुद्ध वैराग्य किसे कहते हैं ?

उत्तर–प्रमाण कबीर योग्य ग्रन्थ द्वितीय भाग, शिव साहित्य प्रकाशन मंडल, पोस्ट-दयाल नगर, अलीगढ़ । तत्वा जीवा ने

पूछा—"हुजूर ! हमने तो वैराग्य को राग रहित अर्थात् राग से खाली होना मान रक्खा है। आप तो कुछ का कुछ समझा रहे हैं।"

कबीर साहेब ने कहा—"वैराग्य का वास्तविक अर्थ तो यही है। मैंने उसके एक अङ्ग का वर्णन किया है। अच्छी बातों का सुनना अच्छी-अच्छी बातों के सुनने की इच्छा करना यह राग ही तो है। यदि राग नहीं है तो फिर क्या है ! इस विचार को हृदय से निकाल दो और तुम वैरागी हो गये। घर बार के छोड़ने ही को वैराग्य नहीं कहते, किन्तु गृहस्थी का जिन हार्दिक विचारों से सम्बन्ध और सहयोग रहता है, उनका त्याग करना वैराग्य है। किसी ने यदि घर को छोड़ दिया, तो फिर हुआ क्या ! मन तो जङ्गल में भी वैसा ही रहेगा और यदि वहाँ उसकी भावनाओं का नाता नहीं टूटा तो मैं कम से कम ऐसे व्यक्ति को वैरागी नहीं मानता। सांसारिक सामग्री का त्याग करना वैराग्य नहीं है, किन्तु निज हारदिक भावनाओं के सम्बन्ध से यह संसार संसार बना रहा है, उनको त्याग कर देने का नाम वैराग्य है। यही कारण है कि मैंने साधारण रीति से तुमको वैराग्य के अङ्ग बताने प्रारम्भ किये थे। तुमने बीच ही में बात को काट दिया, अस्तु ! यह तुम समझ लो कि संसार की ओर से हारदिक लगाव के फन्दे ढीला करके छोड़ देना वैराग्य है। मेरी समझ में यह नहीं आता कि मूर्ख मनुष्य व्यर्थ ही बिना समझे बूझे बाल बच्चों को क्यों छोड़

देते हैं । विवेक के साथ वैराग्य का होना ही सच्चा वैराग्य कहलाता है । गृहस्थ ने घर छोड़ा, स्त्री छोड़ी, बाल बच्चे छोड़े परन्तु त्रुटि अबतक उसके साथ है । उसने छोड़ा किसको ? क्या मन जंगल में रहते हुये उत्पात न मचायेगा ? इसका ठिकाना क्या है ? घर घर भीख माँगने को तो केवल मूर्ख ही वैराग्य कहते हैं । जब मन साथ है तो वह प्रत्येक स्थान पर माया के झमेले में फँसायेगा । यहाँ घर में पुत्र के साथ प्रेम था वहाँ जाकर चेला किया और चेले का प्रेम हृदय में प्रविष्ट हो गया । सम्बन्धों ने केवल रूप ही तो बदल लिया, यहाँ घर का त्याग किया, वहाँ कुटिया का प्रेम है । यहाँ गृहस्थी का काम काज करना पड़ता था, वहाँ भीख माँगना है । यहाँ नातेदारों का झगड़ा था वहाँ पन्थ सम्प्रदाय और समाज का बखेड़ा गले पड़ा । जो यहाँ है वही वहाँ भी है फिर उसको वैराग्य कसे कहा जायगा । सुनो—

साखी—घर में रहे तो भक्ति कर, नातर कर वैराग ।
वैरागी बन्धन करे, ताका बड़ा अभाग ॥ १ ॥
धारे तो दोऊ भली, गृही के वैराग ।
गृही दासा तन करे, वैरागी अनुराग ॥ २ ॥
टोटे में भक्ती करे, ताका नाम सपूत ।
माया धारी मसखरे, केते ही गये ऊत ॥ ३ ॥
कबीर सब जग निरधना, धनवन्ता नहिं कोय ।
धनवन्ता सो जानिये, जाके सत्त१ नाम धन होय ॥ ४ ॥

सौ पापन का मूल है, एक रुपय्या रोक।

साधू होय संग्रह करै, मिटे न संशय शोक ॥ ५ ॥

टीका–१–सत्य कहिये चैतन्य स्वरूप, नाम कहिये बोध, निज स्वरूप बोध को सत्त नाम कहते हैं।

"मुझ को देखो मैं न गृहस्थ हूँ न वैरागी हूँ। दोनों ही से अलग और दोनों ही से मिला हुआ हूँ। इसी कारण तुम्हारे समझाने के भी योग्य हूँ। जो कुछ तुमको त्याग करना है उसका केवल मन से त्याग करो। मन के समस्त अंगों की शुद्धि कर लो जिससे फिर तुमको यह न सतायें। यही सच्चा वैराग है और यदि वह नहीं है तो फिर कोई वैरागी बन चुका! सारा झगड़ा तो मन के शुद्ध करने का है। जिसने मन को शुद्ध बना लिया है और इस पर जिसे अधिपति मिल गया है, मैं उसी को सच्चे अर्थ में वैरागी समझता और मानता हूँ।"

"पहिले विवेक को मन में धारण करके संसार का त्याग करो। यह इस प्रकार न छोड़ा जायगा, किन्तु आँखों के सामने संसार के विरुद्ध परलोक का विचार करो। लोक नाश वान है, परलोक इससे उत्तम है। दृष्टि से परलोक का विचार अब हृदय में आ गया। जब मन विचार के कोठे पर सीढ़ी लगा कर चढ़ गया और परलोक अर्थात् परमार्थ के सम्बन्ध में समझ आ गई तो ज्ञात हो गया कि जैसा लोक था वैसा ही परलोक भी हैं। दोनों ही नाश वान हैं, परन्तु परलोक का विचार इस प्रकार न जायगा। ईश्वर की भक्ति करनी पड़ैगी। परलोक के विचार का

प्रारम्भ भी ईश्वर की भक्ति ही से हुआ था। अब ईश्वर पद का साक्षात्कार हो गया, उसका रूप समझ लिया। जिसमें ऐश्वर्य है उसीको ईश्वर कहते हैं। क्या हमारा आदर्श ऐश्वर्य का प्राप्त करना है? नहीं, क्योंकि यह भी बन्धन का कारण होगा। हम भक्ति करके केवल अपने मन को निर्मल करना चाहते थे, वह तो निर्मल हो गया। ईश्वर का रूप समझ में आ गया। उसकी समझ में आ जाने से अपने निज रूप स्वरूप, जाति विशेषण का ज्ञान हो गया। अब इस विचार को भुलाना पड़ा और जब यह भूल गया तो रूप में स्थित हो गई। यही इष्ट था, यही सत है और यही निर्वाण है।"

ऐ तत्वा जीव! मैं तुमको किस प्रकार समझाऊँ। मेरे समझाने के एक नहीं हजारों ही ढंग हैं। जो जैसी बुद्धि ले कर आता है मैं उसको उसीकी बुद्धि के अनुसार समझाता हूँ सुनो यह मेरी साखियाँ हैं:—

साखी—रोड़ा हो रहो बाट का, तज आपा अभिमान।
लोभ मोह तृष्णा तजे, ताहि मिले निज नाम ॥१॥
रोड़ा भयो तो क्या भया, पन्थी को दुख देय।
साधू ऐसा चाहिये, जैसे पैंड़े खेह ॥२॥
खेह भई तो क्या हुआ, उड़ उड़ लागे अंग।
साधू ऐसा चाहिये, जैसे नीर निपंग ॥३॥
नीर भयो तो क्या भया, जो ताता सीरा होय।
साधू ऐसा चाहिये, जो हरि हा जैसा होय ॥४॥

हरि भया तो क्या भया, जो कर्ता धरता होय।
साधू ऐसा चाहिये, हर भज निर्मल होय ॥५॥
निर्मल भया तो क्या भया, जो निर्मल माँगे ठौर।
मूल निर्मल से रहित हैं, ते साधू कोई और ॥६॥

"तुम इस प्रकार विचार करो कि बुराई निर्बलता है त्रुटि है कमी है। उसको पहिले अच्छाई के विचार से परास्त करो। अच्छाई शक्ति है, अच्छी है, प्रिय अवस्था है और अपेक्षित रूप से अधिक सम्पूर्ण है। कुमार्ग का त्याग कर सुमार्ग को ग्रहण करो। जब सम्पूर्ण रूप से अच्छे बन जाओ तो फिर अच्छाई का भी त्याग कर दो, वरन वह भी बन्धन का कारण होगी; जहाँ अच्छाई है वहाँ बुराई भी रहती है। दीपक के ही नीचे अन्धेरा रहता है। अच्छाई और बुराई दोनों अपेक्षित वाक्य है। एक को दूसरे से सम्बन्ध है। यदि बुराई न हो तो अच्छाई का किसी को कैसे विचार होगा। और अच्छाई न हो तो बुराई कैसे समझ में आयेगी। दोनों ही एक दूसरे के अंग संग हैं और आवश्यकीय हैं। बुराई बीमारी है अच्छाई (नेकी) की क्या आवश्यकता रह गई। यदि बीमारी के चले जाने पर भी औषधि का प्रयोग किया गया तो वह आहार हो जायगी। और नित्य नियम होने से बीमारी की उत्पादक होगी। जब पूर्णतया स्वास्थ्य प्राप्त हो गया तो तुरन्त औषधि का प्रयोग करना बन्द कर दो और स्वास्थ्य से नाता जोड़ो। और स्वास्थ्य के विचार को धीरे धीरे मेट दो, क्योंकि बीमारी और स्वास्थ्य का मेल है।"

उदाहरण से समझो। किसी के पाँव में बबूल का काँटा गड़ गया और गड़ते ही वह टूट गया। टूटना त्रुटि है टूटा हुआ काँटा बुरा है। यह दुःख देता और पीड़ा करता है। उस के निकालने के लिये पूरा बबूल का काँटा ले लो, साधन युक्ति और धैर्य से उसको निकाल कर फेंक दो, दर्द जाता रहा। अब कष्ट नहीं है। जब कष्ट पीड़ा से छुटकारा मिल गया तो फिर उस पूरे और समूचे काँटे को भी फेंक दो। उसको जेब में मत रक्खो नहीं तो कभी न कभी वह भी टूट कर तुम्हारे शरीर में गड़ जायगा और फिर से कष्ट मिलेगा। काँटे के गड़ने के विचार को तो त्याग ही करना है। यदि त्याग नहीं करोगे तो उसका कल्पित विश्वास भी कभी न कभी फिर दुख का साधन बनेगा। और प्रकृति में ऐसी सामग्रियाँ उत्पन्न कर देगा कि तुमको काँटा चुभ जायगा। इसलिये उस विचार का भी त्याग ही करना चाहिये। और इसी त्याग का नाम वैराग और त्याग है। तुमने इसे समझा कि नहीं!"

तत्वा बोला—"हुजूर ! मैंने भली भाँति समझ लिया है। आपने वैराग के रूप में ज्ञान के रूप का, विद्वता और मौलिक रूप से साक्षात्कार करा दिया। आप धन्य हो! आपका समझाना बुझाना धन्य है।"

कबीर साहेब मुस्कराये—"इसी कारण तो मैंने सत्संग में आने का आदेश किया था, जिससे विवेक की फुरना हो। बिना विवेक के कभी कोई मनुष्य रागी और त्यागी नहीं हो सकता।"

(१०१) प्रश्नः—नौकाल के परपञ्च में फँसे हुये महन्तों में छः भूल कौन कौन है ?

उत्तर—वैराग्य की उदाहरणार्थ कहानी—

किसी राजा ने अपनी दो पुत्रियों से पूछा—'तुमको किसके भाग से खाना मिलता है।' बड़ी ने कहा—"हम आपके भाग से खाती पीती हैं।" परन्तु छोटी से जब यह प्रश्न किया गया तो उसने उत्तर दिया—"प्रत्येक जीव का भाग उसके संग है। किसी के भाग का कोई भी साथी नहीं है। "राजा को क्रोध आया। उसने कहा—"तू बड़ी असभ्य और गुस्ताख है। सभ्यता का विचार नहीं करती।" पुत्री बोली—"मैं पिता की दृष्टि से आपका बड़ा विचार रखती हूँ, किन्तु आपने जब सच्ची बात पूछी तो उसका उत्तर भी सच्चा ही देना चाहिये। शास्त्र कहते हैं—माँ बाप जन्म के साथी हैं। कर्म का साथी कोई नहीं फिर मैं कैसे झूठ बोलूँ। ऋषि मुनी सबकी आज्ञा है कि सच के अतिरिक्त जिह्वा से कोई वाक्य न निकालो। "राजा बोला—'बहुत अच्छा ! मैं तेरा विवाह किसी कंगाल ब्रह्मचारी के साथ कर दूँगा।' पुत्री ने कहा—जो जिसके भाग्य में है वह पूरा होकर रहेगा ! यदि मुझे जीवन पर्यन्त कंगाल ही रहना है तो धनाढ्य कौन बना सकता है ?" पुत्रियाँ सयानी हुईं। राजा ने बड़ी पुत्री का विवाह किसी धनाढ्य राजा के साथ किया। छोटी पुत्री का विचार था कि यदि कोई सच्चा ब्रह्मचारी होगा तो मेरे साथ विवाह करने को किञ्चित इच्छा न करेगा, परन्तु इसका

यह विचार ठीक नहीं निकला। उस मूर्ख राजा ने एक तपस्वी ब्रह्मचारी की खोज की और यद्यपि वह विवाह करने से इन्कार ही करता रहा परन्तु राज हठ को क्या किया जाय। राजकुमारी के साथ उसका विवाह बल पूर्वक करा दिया गया। और पुत्री को बिना किसी दान-दहेज के महल से विदा कर दिया गया। ये जंगल में आये, झोंपड़े में बैठे, पुत्री के ललाट पर सिकुड़न का चिन्ह तक न आया। उसको भाग्य पर संतोष था। जाड़े के दिन थे, एक दीन मनुष्य आया और बोला—"जाड़ा बहुत लगता है।" स्त्री ने उसी समय अपनी रजाई उतार कर दे दी। फिर दूसरा आया। उसने अपनी दूसरी चादर भी दे डाली और जब तीसरे ने वही बात कही, उसने आव देखा न ताव ब्रह्मचारी का ओढ़ना उसे प्रदान कर दिया। साधु ऋषि से न रह गया। उसने कहा—"तू कैसी है? जाड़ा सहेगी? कपड़े लत्ते क्यों उठा कर दे रही है?" स्त्री चुप रही—'थोड़ी देर पश्चात् ऋषि जंगल की ओर गया, कन्द मूल उबाला, थोड़ा आप खाया थोड़ा उस स्त्री को दिया और जो कुछ थोड़ा सा शेष रह गया ऋषि पुत्र ने उसे रख छोड़ा कि यह दूसरे दिन काम आयेगा। उस समय वह राजकुमारी जोर से हँसी।' ब्रह्मचारी ने पूछा—"तू क्यों हँसती है? यह तो साधु की कुटिया है। यहाँ महल के खाने पीने कहाँ मिल सकते हैं। साधुओं और धनाढ्यों की दशा में अन्तर होता है। तेरे हँसने का यही कारण होगा।" स्त्री ने उत्तर दिया—"प्राण

नाथ! मैं इस पर नहीं हँसी। मेरे हँसने का कारण और ही है।" वह क्या है?

वह कारण यह है कि पिताजी ने कहा था कि "तेरा विवाह फकीर साधू के साथ करूँगा परन्तु उन्होंने पति के चुनाव में बड़ी भूल की।" "क्या भूल हुई?" भूल यह हुई कि "तुम साधु नहीं हो और न तुम में साधु के से लक्षण हैं।" "साधु के लक्षण क्या होते हैं?" राजकुमारी ने उत्तर दिया—

दोहा–गाँठी दाम न बाँधई, नाहिं नारि सो नेह।
कहें कबीर ता साधु की, हम चरनन की खेह॥

पहिले तो तुमने ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया उससे पतित हो गये। तुमको विवाह करने की क्या आवश्यकता थी। दूसरे तुम संग्रह करते हो। साधु धन माल एकत्र नहीं करते। तीसरे तुमको कल की चिन्ता है। साधु को दूसरे दिन की चिन्ता नहीं रहती। चौथे तुमको अपना अधिक ध्यान है। दूसरों का ध्यान किंचित नहीं है। साधु दूसरों का दुःख अपने सिर पर लेते हैं और अपने सुख की इच्छा नहीं रखते। तुमको तो जाड़े से पीड़ित मनुष्य को वस्त्र प्रदान करने में संकोच है। पाँचवें तुम जंगल में कुटिया बना रक्खी है। जो किसी स्थान पर रहता है उसको स्थान बनाने और एक स्थान पर रहने का कर देना पड़ता है और वह कर यह है कि आने जाने वालों के विश्राम और भोजन आहार का विचार दृष्टि में रक्खा जाय। तुम इसका भी पालन नहीं करते और तुम्हारे यहाँ

अतिथि सत्कार का कुछ भी प्रबन्ध नहीं है। यही कारण है कि यहाँ कोई नहीं आता। मैं नहीं समझती कि तुम में वैराग है, तुम्हारा जीवन तो राग से भरा हुआ है। यह देख कर मैं हँसी थी। साधु होकर बन्धन पालना अभाग्यता का चिन्ह है। ब्रह्मचारी पढ़ा लिखा मनुष्य था, राजकुमारी की बातों पर विचार करने लगा और उसके पाँव पर गिरना चाहा। स्त्री ने कहा—"तुम छठवीं भूल कर रहे हो, पुरुष स्त्री के पाँव पर नहीं पड़ता। शास्त्र का मत इसके विपरीत है। मैं बड़ी संकोच में हूँ कि तुमको क्या कहूँ।"

ब्रह्मचारी बोला—"ईश्वर ने तुमको गुरु रूप बना कर मेरे पास भेजा है। मुझमें सचमुच बड़ी कमी है। मैंने भूल पर भूल की है तुम मुझको उपदेश देने और मेरे जीवन को सुधारने आई हो। इसलिये मैं तुम्हारा हृदय से सम्मान करता हूँ" राजकुमारी हँसी। यदि यह विचार है तो पुरुष को स्त्री से शिक्षा लेना मना है, किन्तु एक गुण तुममें है कि तुम सच्चे हो, न्याय प्रिय मनुष्य हो, मैं मन्त्री बनकर तुम्हारे जीवन का सुधार करूँगी।

यह कह कर वे वहाँ से किसी दूसरे जंगल में जाकर रहने लगे। रूप रंग बदल गया और दोनों ही तपस्वी हो गये। कई वर्षों पीछे उस सुन सान जंगल में राजा आया। वह शिकार खेलने निकला था। हिरन के पीछे घोड़ा दौड़ाया, हिरन कनौतियाँ बदलते और चौकड़ियाँ भरते हुये वहाँ आया, आगे

आगे वह और पीछे पीछे राजा! यहाँ आकर वह दृष्टि से ओझल हो गया। राजा भूखा प्यासा था पानी तक का वहाँ चिन्ह नहीं था। उसी कुटिया में आया। साधू नहीं था। साधुनी से बोला—"माई! मैं बहुत भूखा प्यासा हूँ कुछ खाने पीने को दो।" उसने कहा—"एक शर्त पर और वह यह है कि एक कटोरा पानी और एक कन्द मूल के बदले तू अपना आधा राज मुझे दे दे।" राजा बड़ा अधीर हो रहा था। उसने अपनी स्वीकृति प्रकट की। साधुनी ने भोजन दिया परन्तु उसकी क्षुधा नहीं गई किन्तु भूख प्यास और भी बढ़ गई और बड़ा बेचैन हो गया। अधिक भोजन की सामग्री माँगने लगा। साधुनी ने कहा—"यदि तुम आधा बचा हुआ राज्य दे सकते हो तो उसी मात्रा में भोजन दिया जा सकता है। राजा ने स्वीकार कर लिया और जब वह तृप्त हो गया तो साधुनी से कहा—"मेरे साथ चल राज पाट तुझको सौंप दूँ।

साधुनी हँसी—साधु को राज पाट से क्या काम! यहाँ इन्द्र और ब्रह्मा की पदवी तक का सम्मान नहीं है। यह राज्य लेकर मैं क्या करूँगी। तुमको उपदेश देना और सच्चाई बताना तात्पर्य था। तुम भ्रम में हो और अहंकारी मनुष्य हो। सच्ची बात पर अप्रसन्न होकर अत्याचार करते हो। वह राज्य मैं तुम को अपनी ओर से प्रदान करती हूँ। तुम ही ले जाओ और उसको भोगो। साधुनी को बन्धन में पड़ने की क्या आवश्यकता है। जो हो गया वह हो गया। जीवन ने जो रूप

अपना धारण कर लिया, कर लिया, अब तुम प्रसन्नता से घर जाओ और अपना राज काज करो।"

राजा को आश्चर्य हुआ उसने उस साधुनी को नहीं पहिचाना—"मैंने क्या अत्याचार किया और तुम मुझको कैसे अहंकारी कहती हो ? और तुमने कैसे जाना कि मैं राजा हूँ और मुझको क्या उपदेश दिया है।"

साधुनी बोली—"सुनो राजा ! तुमने सच बोलने पर अपनी निरअपराधिनी पुत्री को घर से निकाल दिया और एक कुमार्ग पर लगे हुये साधू को सौंप दिया। तुम यदि अत्याचारी और अहंकारी नहीं हो तो और क्या हो ? और तुमने इसी राज्य के मद में (जिसका मूल्य दो कन्द मूल और दो कटोरा पानी है) एक अबला और दीन कन्या पर ऐसा अत्याचार किया है। यह उपदेश है जो मैंने आज तुमको दिया। जिस राज्य पर तुमको अहंकार है उसका क्या मूल्य है ? मेरी दृष्टि में उसका कोई भी महत्व नहीं है।"

राजा भौचक्का रह गया। उसने अब तक अपनी पुत्री को नहीं पहिचाना था।

इतने में उस साधुनी का पति और पुत्र दोनों जंगल से आये। राजा ने नमस्कार किया। साधु उसे पहिचान गया और कहने लगा—"राजन ! क्या तुम जानते हो कि हम कौन हैं ?" राजा ने अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। साधु ने कहा—"यह साधुनी तुम्हारी पुत्री है, यह पुत्र तुम्हारा नाती है और मैं

वही ब्रह्मचारी हूँ जिसको तुमने यह कन्या दी थी। मैं पहिले साधु नहीं था। अब इस कन्या के प्रताप से सच्चा साधु बन गया हूँ। यह मेरी गुरु है यद्यपि यह गुरु कहलाना स्वीकार नहीं करती।"

राजा की आँखों से आँसू जारी हो गये। उसने कहा— "यह पुत्री साधु की गुरु हो सकती है तो मैं भी इसको अपना गुरु बनाऊँ। इसने मेरा राज्य छीन लिया। अब मुझे राज करने की आवश्यकता नहीं रही। तुम दोनों आज से मेरे आध्यात्मिक माता पिता हुये राज इस पुत्र को दिया जाय और मैं भी अब यहाँ रह कर तुम्हारा सत्सङ्ग और सेवा किया करूँगा।"

साधु का पुत्र हँसा—"मुझे राज से क्या काम है! मैं साधु पुत्र होकर राज से क्या लाभ उठाऊँगा। दो दिन के जीवन के लिये बन्धन में पड़ना मुझे किसी भाँति स्वीकार नहीं है। राज तुमको कल्याणकारी हो। मैं यहाँ ही प्रसन्न हूँ। और इसी जन्म में निर्वाण गति को प्राप्त कर लूँगा।"

राजा के आश्चर्य की कोई सीमा न रही। उसने देख लिया कि जिस राज का उसको इतना गर्व था उसका इन वैरागियों की दृष्टि में कोई भी महत्व नहीं है।

उसने आँखों में आँसू भर कर अपनी पुत्री से कहा— "भगवती! मैंने बड़ा अपराध किया। पुत्री को दिया हुआ राज अब मैं नहीं ले सकता। यह पाप मुझसे न हो सकेगा। तू बता मैं क्या करूँ।"

साधुनी हँसी—"तुमने कोई अपराध नहीं किया। भाग्य में तो ऐसा ही लिखा था। मेरे भाग्य ने तुमसे स्वयं यह काम करा लिया। यहाँ तुम्हारा अहंकार निस्सन्देह पाप था। अब उसका भी प्रायश्चित्त हो गया। परन्तु कठिनता तो यह है कि अभी तक मूर्खता वश तुम मुझको अपनी पुत्री ही समझते हो मेरा कुल अब राजकुल नहीं रहा मैंने तो साधुकुल में नया जन्म लिया है। यदि मैं अब भी तुम्हारी पुत्री हूँ तो मेरे घर तुम कैसे रह सकोगे और मेरा प्रदान किया हुआ भोजन तुमने कैसे ग्रहण किया? यह सब भ्रम की बात है भ्रम छोड़ दो, तब तुम में विवेक और वैराग्य उत्पन्न होगा।" राजा साधुनी के चरणों पर गिर पड़ा और उसकी आज्ञा लेकर महल में आया। पुत्र को राज-काज सौंपकर फिर उसी जंगल में रहने लगा और उनके सत्संग से बानप्रस्थी बन गया।

॥ ग्रन्थ समाप्त की सद्गुरु पद बन्दना ॥

सन्त शिरोमणि सद्गुरु, बन्दी छोर कृपाल।
त्रय बार करूँ बन्दगी, निकट लखायो लाल ॥ १ ॥
लाल लाल सबहीं कहै, सब के गाँठी लाल।
गाँठि खोल परखा नहीं; तासे होत बेहाल ॥ २ ॥
कपट गाँठि नौ[१] काल की, जब तक छूटै नाहिं।
तब तक लटके गर्भ में, लाल नहीं दरशाहिं ॥ ३ ॥
लाल वही निजरूप है, हृदय देखु विचार।
गुरु कबीर समझावते, नौ[१] छोड़े भव पार ॥ ४ ॥

वैश्य कर्म छुटतै नहीं, पाप पुण्य बढ़ि जाल।
सात[२] काल माथे धरे, किम पावैं वै लाल ॥ ५ ॥
धर्माधर्म छुटवै नहीं, स्वारथ[३] में भये बन्ध।
परमारथ किम पावहीं, ते गुरुवा मति मन्द ॥ ६ ॥
पक्ष[४] अपक्ष से रहित हैं, परमारथ निज रूप।
भव में फिर नहिं आवते, ऐसा गुरु अनूप[५] ॥ ७ ॥
सेमर फूल नौकाल की, जीव सुगा भये बन्ध।
ऐसा सेमर जो सेवई, हृदय आँख भये अन्ध ॥ ८ ॥
सात काल सत लोक है, तासे छूटत नाहिं।
प्रीति क्रोध बढ़तै रहै, पड़े गर्भ के माहिं ॥ ९ ॥
गर्भ बास दुख छूटन चाहो, छोड़ो नौ की चाह।
दुइ[६] चकरी नेरे नहिं आवै, संशय छूटि अथाह ॥१०॥
संशय सावज शरीर में, पारख से गइ छूटि।
पारख गुरु मम हृदय बसो, काल जाल भ्रम टूटि ॥११॥
रहित रहैं नौकाल से, बिचरैं देश विदेश।
जीव मुक्तावन कारणे, धरे सन्त का भेष ॥१२॥
बलिहारी गुरुदेव की, खट पट सकल छोड़ाय।
निजघट भीतर आत्मा, परगट दियो लखाय ॥१३॥
जीव आत्मा अनन्त है, सहित वासना बन्ध।
नौ[७] से रहित नौके सहित, बिरले रहैं निरबन्ध ॥१४॥
ऐसे गुरु को बन्दगी, त्रय बार कर जोरि।
राम लाल गुरु पद गहे, बहे न जग की ओरि ॥१५॥

टीका–१–स्त्री दाम जमीन औ, जाति जमात भण्डारा। कुटी कल्पना वाणी जाल, नौकाल हनिडारा ॥ २–नौकाल में दुइ काल सिर्फ छूट है एक स्त्री भोग और दूसरे वाणी जाल ब्रह्म काल अवस्तु है और सात काल को सत्य लोक माने बैठे हैं इसलिये नहीं छुटता सो जानिये। ३–भण्डारा करने पर चार मन आटा दाल खिलाय कर बीस मन आटा दाल रख लेते हैं यही स्वारथ है और सन्ध्या पाठ में पूरण साहेब धर्म अधर्म दोनों असत्य के अन्दर बरतते हैं ऐसा बता गये तब भी नित्य पाठ करते हुये नहीं छोड़ते इसलिये गर्भ वास का दुख आना जाना मिटता नहीं सो जानिये। ४–पक्ष अपक्ष निर्पक्ष के अर्थ निर्पक्ष रत्नाकर ग्रन्थ शुरू टाइटिल के पीठ पर हैं वहाँ से देखिये। ५–अनूप कहिये अनोखा जिस चैतन्य स्वरूप अविनाशी में पारख गुण ज्ञान गुण जानव गुण स्वाभाविक होने से सुन्दर अनूप कहा गया है। ६–पाप पुण्य क्रोध प्रीति, हद बेहद, आदि यही दुई चकरी और दो पाट में आके नर जीव पीसे जाते हैं और वैश्य कर्म सात काल फँसने फँसाने वाले गुरुवा को यम भी कहते हैं। ७–नौकाल से रहित नौगुण सहित अपने स्वरूप में विरले सन्त सदा के लिये अचल शान्ति रहेंगे ऐसा जानिये। गुरु पद निज पद एक ही है सो भी जानिये।

पुस्तक मिलने का पता :—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा, वाराणसी।

मुद्रक—श्री विश्वेश्वर प्रेस, बुलानाला, वाराणसी।
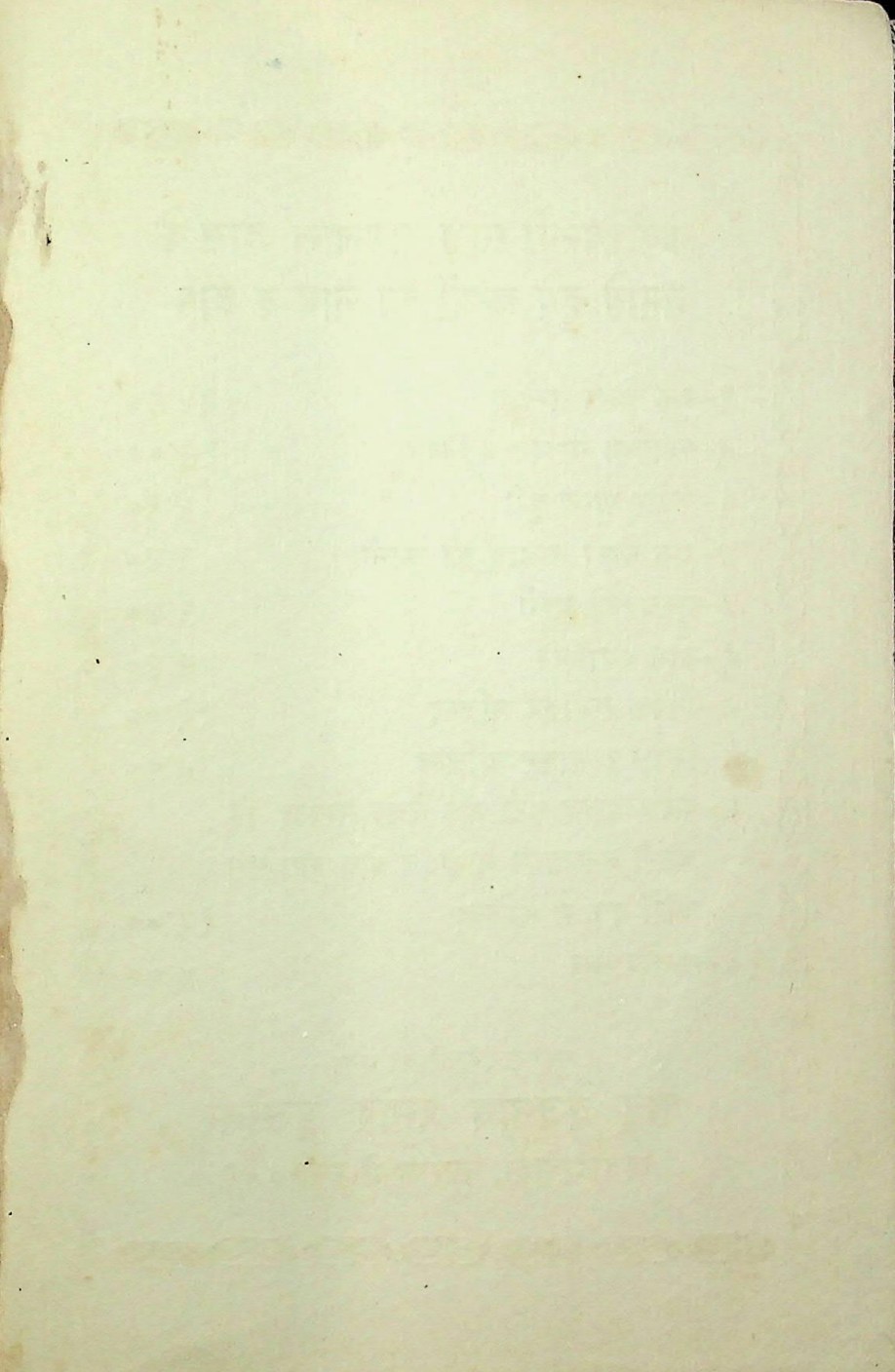
कबीरपन्थी साधु रामलाल दास के बनाये हुये ग्रन्थों का नाम व दाम

१—गुरु चेला सम्बाद	१४.६०
२—व्याख्या सत्यासत्य निर्णय	१६.००
३—कबीर पारख बूटी	४.२०
४—गुरु चेला सम्बाद की चटनी	२.४०
५—मुक्तावली गारी	२.४०
६—बोध बयालिस	२.४०
७—निर्पक्ष रत्नाकर सजिल्द	११.००
८—निर्पक्ष रत्नाकर अजिल्द	७.००
९—कबीर पारख बूटी, गुरु चेला सम्बाद की चटनी, मुक्तावली गारी व बोध बयालिस चारों एक में सजिल्द	१५.००
१०—सन्तोष सुख	७.००

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

राजादरवाजा, वाराणसी-२२१००१